प्रकाशक :
सन्मार्ग प्रकाशन
१६, यू० बी०, बैंग्लो रोड,
दिल्ली-११०००७

प्रथम संस्करण, १९७५

मुद्रक :
विकास आर्ट प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

दो शब्द

श्रीमन्नारायण की असीम अनुकम्पा से महाकवि दण्डी के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ-रत्न 'दशकुमार चरित' की उत्तर पीठिका के द्वितीय उच्छ्वास 'अपहारवर्मा चरित' को हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित अपने प्रेमी पाठकों को समर्पित करते हुए हमें अतीव हर्ष हो रहा है।

इसके द्वारा जहाँ पाठकों को पदलालित्य के प्रसिद्ध आचार्य की शैली से परिचित होने का अवसर प्राप्त होगा, वहाँ तत्कालीन समाज, समाज में व्याप्त भावना-विशेष तथा कार्य-साधिका प्रत्युत्पन्नमति का भी दर्शन प्राप्त होगा, जो आज के छल-प्रपंचमय सामाजिक वातावरण में विशेष सहायक सिद्ध हो सकती है।

शब्दावली की विविधता स्तरीय लेखन में सहायक हो सकेगी, यदि उसे हृदयंगम कर व्यवहार में लाया जाय। आशा है हमारे सुधी किशोर इस संकेत पर ध्यान देकर अपने लेखन को प्रौढ़ता प्रदान करने की दिशा में प्रयास करेंगे।

प्रस्तुत 'अपहारवर्मा चरित' उस्मानिया विश्वविद्यालय के उपाधि पाठ्य-क्रम में निर्धारित है। अध्यापकों के सुझाव पर इसके दो अंशों 'वेश्यामाता शोक' तथा 'अम्बालिका वर्णन' को हटा दिया गया है। इस पर भी जितना और जो कुछ है छात्रों की ज्ञानवृद्धि के लिए पर्याप्त है।

प्रस्तुत भाग के पाठ्यक्रम में निर्धारण के पश्चात् सानुवाद पुस्तक की उपलब्धि का प्रश्न सामने आया। विभिन्न प्रकाशकों से हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित पुस्तक प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया परन्तु निराशा ही हाथ लगी। विवश होकर छात्रों की प्रबल माँग तथा सहयोगी प्राध्यापकों एवं मित्रों के आग्रह से अनुवाद-कार्य हाथ में लेना पड़ा।

समय-संकोच के कारण उतना ध्यान अनुवाद पर नहीं दिया जा सका, जितना कि वास्तव में दिया जाना चाहिए था। फलतः भाव, भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों का तथा प्रवाह विषयक शिथिलता का रह जाना संभव है। फिर भी इस अनुवाद से मात्र निराशा ही हाथ नहीं लगेगी इतना विश्वास हम अपने पाठकों को दिलाते हैं। पुस्तक के अन्त में हिन्दी और अंग्रेजी में आवश्यक और पूछी जाने योग्य बातों का समावेश किये जाने से परीक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक पूरी तरह उपादेय सिद्ध होगी यह निर्विवाद है।

पुस्तक के प्रणयन में श्री गणेशलाल सोमाणी जी, संचालक हिन्दी पुस्तक भण्डार, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद की साग्रह प्रेरणा तो प्रमुख रही ही है साथ ही बन्धुवर श्री कृष्णाचार्य वरखेडकर, संस्कृत प्राध्यापक सरदार, पटेल कॉलेज, सिकन्दराबाद, श्री एम० मधुसूदन राव, प्राध्यापक अंग्रेजी, सरदार पटेल कॉलेज, सिकन्दराबाद एवं डॉ० एन० पी० कुट्टन पिल्लै का भी विशेष सहयोग रहा है। इसका अंग्रेजी अनुवाद उक्त तीनों महानुभावों के सहयोग का ही प्रतिफल है। इस सहयोग के लिए उक्त तीनों के प्रति मौन आभार प्रकट करते हुए मैं श्री प्रेमनाथ शर्मा जी को साधुवाद देता हूँ, जिनके सहयोग से यह प्रयास मूर्त रूप ग्रहण कर पाने में सफल रहा है।

'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः के अनुसार अपनी त्रुटियों के लिए पुनः एक बार क्षमा-याचना करते हुए हम अपने सुधी पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे हमारी त्रुटियों से अवगत कराने का कष्ट करें, जिससे भविष्य में उनका परिमार्जन किया जा सके। वैसे अक्षरशः अनुवाद के प्रयास में प्रवाह में अवरोध आना तथा अपनी भाषा के शब्दों के प्रयोग के कारण यत्र-तत्र अटपटापन आ जाना सहज संभव है तथापि सुधीजनों के सत् परामर्शानुसार परिमार्जन के लिए हम सदैव प्रस्तुत हैं।

विजयादशमी, २०३१ वि० —वेदप्रकाश शास्त्री

पूर्व-कथा-भाग :—

जनपतिरेकस्मिन्पुण्यदिवसे तीर्थस्नानाय पक्वणनिकटमार्गेण गच्छन्न-बलया कयाचिदुपलालितमनुपमशरीरं कुमारं कंचिदवलोक्य कुतूहलाकुलस्तामपृच्छत—"भामिनि, रुचिरमूर्तिः सराजगुणसंपूर्तिरसावर्भको भवदन्वयसंभवो न भवति ? कस्य नयनानन्दनः, निमित्तेन केन भवदधीनो जातः, कथ्यतां याथातथ्येन त्वया" इति।

प्रणतया तया शबर्या सलीलमलापि—"राजन् ! आत्मपल्लीसमीपे पदव्यां वर्तमानस्य शक्रसमानस्य मिथिलेश्वरस्य सर्वस्वमपहरति शबरसैन्ये मद्दयितेनापहृत्य कुमार एष मह्यमर्पितो व्यवर्धत" इति।

हिन्दी—किसी पर्व के दिन तीर्थस्नान के लिए शबरों के गाँव के समीप से जाते हुए राजा राजहंस ने किसी महिला द्वारा स्नेहपूर्वक उठाए हुए एक अनुपम कुमार को देखकर कौतुहलपूर्वक उससे पूछा—"भामिनी ! अतीव रुचिर एवं सम्पूर्ण राजलक्षणों से युक्त यह बालक तुम्हारे वंश में उत्पन्न नहीं हो सकता ! तब यह किसके नयनों को आनन्द देने वाला है और किस प्रकार तुम्हारे अधीन हुआ है ? यह सब सच-सच कहो।

राजा को प्रणाम कर उस शबरी ने हँसते हुए कहा—राजन् ! जब शबरों की सेना हमारे गाँव के पास वाले मार्ग से जाते हुए इन्द्र के समान मिथिलेश्वर का सर्वस्व अपहरण कर रही थी, तब मेरे स्वामी ने यह बालक मुझे लाकर दिया था और तब से इसे पालपोसकर मैंने इतना बड़ा किया है।

Eng.—On some festival, going for taking bath in a holy place (pilgrim centre) on the way to a village of premitive race of Shabaras King, Rajhansa saw a shabar lady carrying in her lap a charming baby and with surprise he said—"Madam, this charming baby with all royal symbols in his body could not be born in your family. So, let me know the fact whose son is this and how this came to your control?

The lady saluted the king and smiling replied—O' king, while the shabar army was busy in looting the Mithileshwara who is just like the divine king Indra in wealth, then my hus-

तदवधार्य कार्यज्ञो राजा मुनिकथितं द्वितीयं राजकुमारमेव निश्चित्य सामदानाभ्यां तामनुनीयापहारवर्मेत्याख्याय देव्यै 'वर्धय' इति समर्पितवान् ।

द. कु. पूर्वपीठिकायां प्रथमोच्छ्वासे ६३, ६४, ६५.

हृष्टस्तु व्याजहारापहारवर्मा—'देव, दृष्टिदानेनानुगृह्यतामयमाज्ञाकरः । सोऽप्यहमेव ह्यमुना रूपेण धनमित्राख्यया चान्तरितो मन्तव्यः । स एवायं निर्गमय्य बन्धनादङ्गराजमपर्वाजितं च कोशवाहनमेकीकृत्यास्मद्गृह्येणामुना सह राजन्यकेनैकान्ते सुखोपविष्टमिह देवमुपतिष्ठतु यदि न दोषः" इति ।

ततः प्रवृत्तासु प्रीतिसंकथासु प्रियवयस्यगणानुयुक्तः स्वस्य च सोमदत्तपुष्पोद्भवयोश्चरितमनुवर्ण्य सुहृदामपि वृत्तान्तं क्रमेण श्रोतुं कृतप्रस्तावस्तांश्च तद्-

---

हिन्दी—यह सुनकर तथा मुनि द्वारा बताया हुआ दूसरा कुमार यही है यह निश्चय कर राजा ने साम दानादि से उस शबरी को प्रसन्न कर उससे उस बालक को ले लिया और 'अपहारवर्मा' नामकरण कर उसे महारानी को सौंप दिया ।

उसे देख प्रसन्नता में भर कर अपहार वर्मा बोला 'देव ! इस सेवक पर दया दृष्टि डालकर अनुगृहीत कीजिए । मैं ही धनमित्र के रूप में छिपा हुआ था यह मानना चाहिए । उसी धनमित्र (मैं) ने अङ्गराज को बन्धन से छुड़ाकर विध्वस्त कोष वाहनादि को फिर से एकत्र किया है । अब हमारे पक्ष के भूपाल उनके साथ एकान्त में सुख से बैठे हैं । यदि कोई हानि न हो तो चलकर उनसे भेंट कर लीजिए ।

तब परस्पर प्रेमालाप आरंभ होने पर राजवाहन ने अपना तथा सोमदत्त और पुष्पोद्भव का वृत्तान्त सुनाकर अन्य मित्रों का वृत्तान्त सुनने की इच्छा

---

band brought this baby and handedover this to me. From then I broughtup this baby.

Hearing this and considering that boy was second one of the two lost, as indicated by the ascetic previously, the king took that baby from that lady, pleasing her with sweet words and cash and then naming him as 'Apahar Verma' he handed over him to his queen.

63, 64, 65. (Purva peethika, first chapter)

Seeing him (the prince) (he) was filled with joy and said "O' Prince, please oblige this faithful servant by your merciful observation. Please note that I was disguised as Dhanamitra and by the same Dhanamitra, Angaraja is freed and the ruined treasury and carriages are collected again. Now our favourate kings are sitting with him peacefully in a lonely place. If there is no harm, please come and meet with them.

Then, after the comencement of a lovely conversation (among them) Rajhansa revealed his complete story along with the story of Somadatta and Pushpabhadra and then showed his

क्तावन्वयुङ्क्त । तेषु प्रथमं प्राह स्म किलापहारवर्मा ।

(उत्तर पीठिकायां प्रथमोच्छ्वासः) २४-२७

की । जिसे जानकर सर्वप्रथम अपहार वर्मा ने इस प्रकार अपना वृत्तान्त सुनाया ।

---

desire (anxiety) to hear the story of other friends. Knowing this, first of all Apaharverma started his story thus :—

'अपहारवर्म-चरितम्'

"देव, त्वयि तदावतीर्णे द्विजोपकारायासुरविवरं त्वदन्वेषणप्रसृते च मित्रगणेऽहमपि महीमटन्नङ्गेषु गङ्गातटे बहिश्चम्पाया: "कश्चिदस्ति तप:प्रभावोत्पन्नदिव्यचक्षुर्मरीचिर्नाम महर्षि:" इति कुतश्चित्संलपतो जनसमाजादुपलभ्यामुतो बुभुत्सुस्त्वद्गतिं तमुद्देशमगमम्। न्यशामयं च तस्मिन्नाश्रमे कस्यचिच्चूतपोतकस्य च्छायायां कमप्युद्विग्नवर्णं तापसम्। अमुना चातिथिवदुपचारित: क्षणं विश्रान्त: क्वासौ भगवान् मरीचि:, तस्मादहमुपलिप्सु: प्रसङ्गप्रोषितस्य सुहृदो गतिम्।

हिन्दी—"देव ! ब्राह्मण के उपकार के लिए आपके असुर बिल में उतर जाने पर (तथा इसके पश्चात्) आपको ढूँढने के लिए आपके मित्रों के इधर-उधर फैल जाने पर मैंने भी पृथ्वी पर भटकते हुए," अङ्ग देश में, गङ्गा के तट पर चम्पा नगरी के बाहर, तप के प्रभाव से दिव्यचक्षु सम्पन्न कोई मरीचि नामक महर्षि हैं," यह कहीं आपस में वार्तालाप करते हुए जन-समाज से सुन कर, आप इस समय कहाँ होंगे यह जानने के लिए उस स्थान की यात्रा की। उस आश्रम में मैंने एक लघु आम्रवृक्ष की छाया में बैठे हुए किसी तपस्वी को देखा। उसके द्वारा अतिथि की भाँति पूजित (सेवित) होकर मैंने क्षण भर (वहाँ) विश्राम किया (और फिर उससे पूछा कि) भगवान् मरीचि कहाँ हैं ? मैं उनसे प्रसङ्गवश (कहीं) गए हुए अपने मित्र की स्थिति जानना चाहता हूँ।

Eng.—My lord, when you entered the nether world for giving help to that Brahmana, the group of friends went away (spreaded around the earth) in search of you, I also started wandering over the earth. Meanwhile I heard somewhere from a group of persons talking among themselves that a great sage named Marichi, is residing in Anga province, out side the city of Champa, on the bank of Ganga. He posses a divine sight, got by the power of his penance. Desirous of knowing your whereabouts from him, I went to that place.

In that hermitage, I saw an ascetic who was appearing as dejected one, sitting under the shade of a small mango tree. Having been treated as a guest by him, I took rest for a while

आश्चर्यज्ञानविभवो हि स महर्षिर्मह्यां विश्रुत:' इत्यवादिषम् । अथासावुष्णमायतं च नि:श्वस्याशंसत् —"आसीत् तादृशो मुनिरस्मिन्नाश्रमे। तमेकदा काममञ्जरी नामाङ्गपुरीवतंसस्थानीया वारयुवतिरश्रुबिन्दुतारकितपयोधरा सनिर्वेदमभ्येत्य कीर्णशिखण्डास्तीर्णभूमिरभ्यवन्दिष्ट। तस्मिन्नेव च क्षणे मातृप्रमुखस्तदाप्तवर्ग: सानुक्रोशमनुप्रधावितस्तत्रैवाविच्छिन्नपातमपतत्। स किल कृपालुस्तं जनमार्द्रया गिराऽऽश्वास्यार्तिकारणं तां गणिकामपृच्छत्। सा तु सव्रीडेव सविषादेव सगौरवेव चाब्रवीत्—

"भगवन्! ऐहिकस्य सुखस्याभाजनं जनोऽयमामुष्मिकाय श्वोवसीयायार्ताभ्युपपत्तिवित्तयोर्भगवत्पादयोर्मूलं शरणमभिप्रपन्न:" इति। तस्यास्तु जनन्युदञ्जलि:

हिन्दी—वे महर्षि पृथ्वी पर आश्चर्यजनक ज्ञानरूपी धन से सम्पन्न थे।

इसके पश्चात् उन्होंने उष्ण एवं दीर्घ साँस छोड़कर कहा—"वैसे मुनि इस आश्रम में थे। एक बार अङ्गपुरी की आभूषणभूता काममञ्जरी नामक एक वारांगना ने जिसके पयोधर अश्रुबिन्दुओं से सज्जित थे तथा जिसके केश भूमि पर छितराए हुए थे अतीव खिन्न भाव से आकर उक्त मुनिवर को प्रणाम किया। उसी समय उस गणिका के माता आदि सम्बन्धी उसका अनुसरण करते हुए तथा करुणरोदन पूर्वक दौड़ते हुए वहाँ आ पहुँचे। उन कृपालु महर्षि ने आर्द्र वाणी से उस गणिका के अनुसराओं को आश्वस्त कर उससे उनके दु:ख का कारण पूछा। उसने लज्जा, विषाद तथा गौरव के मिलेजुले भाव लेकर इस प्रकार कहा—

भगवन्! यह जन (मैं) लौकिक सुख (भोग) के लिए सर्वथा

---

and then asked him—"where is that revered sage Marichi ? I want to know from him the fate or position of my friend who has gone away due to some reason. This sage is very famous on the earth, as he possessing the profound miraculous knowledge.

The ascetic gave a long-hot sigh and said—"yes, there was a sage like that in this hermitage. Once a courtesan by name kamamanjari, who was like a Jewel of Anga city, came to him and saluted the sage. She was full of dejection, Her breasts were shining with the starlike drops of tears. The ground was swept by her long tresses of hair. Immediately her relatives led by her mother came there running after her with piteous-cries. The sage, who was kind-hearted by nature consoled them by his affectionate speech and asked the courtesan, the cause of distress. She bashfully, sorrowfully and respectfully replied thus :—

Respected sir, this person (myself) is not fit for the plea-

पलितशारशिखण्डबन्धस्पृष्टमुक्तभूमिरभाषत—"भगवन्, अस्यां मे दोषमेषा वो दासी विज्ञापयति। दोषश्च मम स्वाधिकारानुष्ठापनम्। एष हि गणिकामातुरधिकारो यद्दुहितुर्जन्मनः प्रभृत्येवाङ्गक्रिया, तेजोबलवर्णमेधासंवर्धनेन दोषाग्निधातुसाम्यकृता मितेनाहारेण शरीरपोषणम्, आपञ्चमाद्वर्षात्पितुरप्यनतिदर्शनम्।

जन्मदिने पुण्यदिने चोत्सवोत्तरो मङ्गलविधिः, अध्यापनमनङ्गविद्यानां साङ्गानाम्, नृत्यगीत-वाद्य-नाट्य-चित्रास्वाद्यगन्ध-पुष्पकलासु लिपिज्ञानवचनकौशलादिषु च सम्यग्विनयनम्, शब्दहेतुसमयविद्यासु वार्तामात्रावबोधनम्, आजीव-

---

अनुपयुक्त है। अतः आत्मकल्याण तथा पीड़ितों पर अनुग्रह के लिए विख्यात आपके चरणों की शरण में आया है। उसकी माँ ने, जिसके श्वेत केश भूमि का स्पर्श कर रहे थे हाथ जोड़कर कहा—"भगवन्! आपकी यह दासी इसके प्रति अपने दोष को (स्वयं) सूचित कर रही है।

मेरा दोष केवल इसे अपने व्यवसाय के लिए तैयार करना है। एक गणिका की माता का यह अधिकार ही है कि वह जन्म से लेकर अपनी पुत्री को अङ्गक्रिया अर्थात् शरीर में हल्दी-तेल आदि लगाने की विधि तथा तेज, बल, रूप, बुद्धि आदि के भली प्रकार अभिवर्धन से वात, पित्त, कफ आदि त्रिदोष, अग्नि, (जठराग्नि) एवं वसा, मांस, अस्थि आदि सप्त धातुओं को साम्य रखने की ओर स्वल्प भोजन द्वारा शरीर के पोषण की शिक्षा दे, एवं पाँच वर्ष की आयु के बाद से पिता के दर्शन से भी उसे बचाए (अत्यन्त दर्शन का अभाव कर दे)।

जन्म दिवस पर, (अन्य) पावन दिवस पर मांगलिक कृत्य करने, अङ्गों सहित अनंग (काम कला) विद्याओं का अध्यापन करने, नृत्य, गीत, वाद्य,

---

surs of the world. As your feet are a shelter for the distressed people and for those who want their welfare in all respects, so this person also has taken shelter at your feet. (Because your feet are famous as the shelter to the afflicted so, I too have taken shelter under these). Her mother, whose grey hair were touching the earth, raised her folded hands and said—"Respected sir, your slave (I, myself) wishes to submit to you her offence. My only fault is making her perform duties of a courtesan. It is the duty of the mother of a courtesan to train the body of her daughter from the very birth. The shampooing of the body, right from the birth, the nourishment of the body with temperate food (controlled diet) which brings about an increase in lustre, strength, complexion and intelligence and which neutralizes various humours, fires and secretions in the body, not to be seen even by the father from the (or-after) fifth year; Performing auspicious rites, with due festivities on the

ज्ञाने क्रीड़ाकौशले सजीवनिर्जीवासु च द्यूतककलास्वभ्यन्तरीकरणम्, अभ्यन्तर-कलासु वैश्वासिकजनात्प्रयत्नेन प्रयोगग्रहणम्,—यात्रोत्सवादिष्वादरप्रसाधितायाः स्फीतपरिबर्हायाः प्रकाशनम्, प्रसङ्गवत्यां संगीतादिक्रियायां पूर्वसंगृहीतैर्ग्राह्यवाग्भि. सिद्धिलम्भनम् दिङ्मुखेषु तत्तच्छिल्पवित्तकैर्यशःप्रख्यापनम्, कार्तान्तिकादिभिः कल्याणलक्षणोद्घोषणम्, पीठमर्दविटविदूषकैर्भिक्षुक्यादिभिश्च नागरिक

नाट्य, चित्र, आस्वाद्य (स्वाद लेने योग्य) गन्ध, पुष्प (सम्बन्धी) कलाओं में (एवं) लिपि परिज्ञान कराने की ओर रुझान कराते हुए वार्तालाप विषयक कौशल में भली भाँति शिक्षण दे। व्याकरण, न्याय, ज्योतिष विद्याओं का सामान्य ज्ञान, जीविका विषयक ज्ञान, क्रीड़ाकौशल में अथवा काम विषयक इङ्गित भाषा में, सजीव (मुर्गे आदि की लड़ाई) निर्जीव (पासे आदि के खेल) सम्बन्धी जुए की कलाओं में प्रशिक्षण दे तथा (एतद् विषयक ज्ञान को) आत्मसात् करने में (दक्षता प्राप्त कराए)। रति सम्बन्धिनी कलाओं में किसी विश्वस्त व्यक्ति के प्रयत्न से उनके प्रयोग का ज्ञान कराए। यात्रा, उत्सव आदि में भली भाँति परिष्कृत अपने वैभव (सेवक, गद्दी आदि) का प्रदर्शन, (आदि में नैपुण्य प्राप्त करने के लिए) उसे समुचित ढंग से बताए। प्रासंगिक संगीतादि की गोष्ठिओं में पूर्व नियोजित शिक्षकों द्वारा सिद्धि प्राप्ति, विभिन्न दिशाओं में तत् तत् शिल्पों में प्रसिद्ध जनों द्वारा उसके यश का विस्तार (फैलाना) सामुद्रज्ञों द्वारा उसके कल्याणमय (शुभ) लक्षणों की सूचना, नायक के प्रियपात्र (पीठमर्द), विट, विदूषक, भिक्षुकिणी आदि द्वारा नागरिक पुरुष समुदाय में (उसके) रूप, शील, शिल्प (नैपुण्य), सौंदर्य, माधुर्य (आदि की) प्रस्तावना पहुँचाना आदि कार्य करे। तरुणों के मनोरथ की लक्ष्य भूता युवति को प्रचुर

---

birth day and other auspicious days, Instructions in the lores of love along with its ancillaries ; careful training in Dance, Music, Instrumental Music, Dramatic performance, painting, cooking, perfumery, flower-culture, art of writing, art of conversation or (speech) etc.

Developing capacities to understand Grammar, logic and Astrology just by casual discussions, Proficiency in the art of livelihood, in the art of Games, or in the symbolic language of kama (passion) (in witty talk) and in the art of Gambling (with sentient and insentient things or stakes) receiving practical instructions in sexual science from confidential persons, appearing well dressed and possesing a large retinue of servants, on the occasion of fairs, travels etc.

Accomplishing success at the times of occasional concerts in music etc. Through previously engaged teachers (experts), spreading one's fame in different quarters through experts in various arts, making the astrologers—proclaim the

पुरुषसमवायेषु रूपशीलशिल्पसौन्दर्यमाधुर्यप्रस्तावना, युवजनमनोरथलक्ष्यभूतायाः प्रभूततमेन शुल्केनावस्थापनम्, स्वतो रागान्धाय तद्भावदर्शनोन्मादिताय वा जातिरूपवयोऽर्थशक्तिशौचत्यागदाक्ष्यदाक्षिण्यशिल्पशीलमाधुर्योपपन्नाय स्वतन्त्राय प्रदानम्, अधिकगुणायास्वतन्त्राय प्राज्ञतमायाल्पेनापि बहुव्यपदेशेनार्पणम्, अस्वतन्त्रेण वा गान्धर्वसमागमेन तद्गुरुभ्यः शुल्कापहरणम्, अलाभेऽर्थस्य कामस्वीकृते स्वामिन्यधिकरणे च साधनम्, रक्तस्य दुहित्रैकचारिणीव्रतानुष्ठापनम्, नित्य नैमित्तिकप्रीतिदायकतया हृतशिष्टानां गम्यधनानां चित्रैरुपायैरपहरणम्, अददता लुब्धप्रायेण च विगृह्यासनम्, प्रतिहस्तिप्रोत्साहनेन लुब्धस्य रागिणस्त्यागशक्तिसंधुक्षणम् ।

शुल्क (फीस) देकर (उन तरुणों के पास) भेजने का प्रबन्ध करे (अवस्थापनम्-समीपे स्थापनम्), अथवा स्वयं किसी रागान्ध (वासनाजन्य प्रेम में अन्धे), कामुक, हावभाव दर्शन से उन्मत्त हुए अथवा जाति (ब्राह्मणादि उच्च जाति) रूप, आयु, धन, शक्ति, पवित्रता, त्याग, दक्षता, नम्रता, शिल्प, शील, माधुर्य आदि से सम्पन्न व्यक्ति के लिए उसे प्रदान करने की व्यवस्था करे ।

अधिक गुण सम्पन्न, बहु प्रतिभायुक्त परन्तु पराश्रित (अस्वतन्त्र) व्यक्ति को अतीव कुशलतापूर्वक समर्पण, अथवा अस्वतन्त्र से गान्धर्व विवाह कर उसके गुरुजनों से शुल्क (धन) प्राप्त करना, (धूर्तों से) अपना धन प्राप्त न होने की स्थिति में केवल स्वेच्छा (मैत्री द्वारा) से स्वीकृत स्वामी (ग्रामाध्यक्ष) तथा न्यायालय (नागरिक संसद) द्वारा ऊँचा नीचा कह सुनकर अपने उपयुक्त विधान कराना आदि कार्य करे । अपनी दुहिता (पुत्री) को अनुरक्त व्यक्ति के प्रति पातिव्रतधर्म में स्थिर करना, नित्य किसी न किसी निमित्त से प्रेमोपहार

---

auspicious astrological signs, initiating talks about one's charming form, character, skill, beauty, sweetness etc. in the groups of the citizens, with the help of associates of heros, jesters, female mendicants etc.

Paying much amount to a damsel who is the object of desire of the wistful minds of the youth ; giving (money) of one's own accord, to that man who is blind with passion or who is excited by the manifestation of coquettish feelings or to a self-willed person who has noble birth, charm, youth, wealth, power, purity (in character and deeling) sacrifice, dexterity, courtesy, skill in various arts—character and sweet temperament,

Offering a little amount to a man, who posseses many qualities, who is not independent but is very intelligent under many pretexts, giving out that huge amount was received from him, extracting money from the elders having no ownership by marrying him according to the Gandharva type, getting the

असारस्य वाक्संतक्षणैर्लोकोपक्रोशनैर्दुहितृनिरोधनैर्व्रीडोत्पादनैरन्याभियोगैरवमानैश्चापवाहनम्, अर्थदैरनर्थप्रतिघातिभिश्चानिन्द्यैरभ्यैरनुवद्धार्थानर्थसंशयान्विचार्य भूयोभूयः संयोजनमिति। गणिकायाश्च गम्यं प्रति सज्जतैव न सङ्गः। सत्यामपि प्रीतौ न मातुर्मातृकाया वा शासनातिवृत्तिः। एवं स्थितेऽनया प्रजापतिविहितं स्वधर्ममुल्लङ्घ्य क्वचिदागंतुके रूपमात्रधने विप्रयूनि स्वेनैव धनव्ययेन रममाणया मासमात्रमत्यवाहि।

आदि द्वारा ग्रहण करने से बचे हुए विटों के धन का विचित्र उपायों से हरण करना, न देने पर लुब्ध प्राय व्यक्ति से (उसका) आसन तक भी छीन लेना, वेश्या पति के प्रोत्साहन से अनुरक्त प्रेमी की त्याग शक्ति को बढ़ाना, एवं निर्धन व्यक्ति को अपनी पुत्री के मार्ग से हटाने के लिए उस पर तीखे व्यंगों का प्रहार, लोक समुदाय के सामने उसका उल्लेख, अपनी पुत्री को उससे दूर रखना और इस प्रकार उसे लज्जा से उभाड़ना एवं नाना प्रकार से उसे अपमानित करना (आदि कार्य करे)। अपनी पुत्री को प्रभूत धनवान्, विपदाओं को दूर करने में समर्थ, अनिन्द्य व्यक्तियों के साथ बार-बार सम्पृक्त करे और उसे बताए कि—

"अपने प्रेमी के साथ केवल दिखावे का ही सम्बन्ध रखे, वास्तविक नहीं, यही एक वेश्या का कर्तव्य है।" (वेश्या को सिखाया जाता है कि) सचमुच प्रेम होने पर भी माँ या दादी की आज्ञा का उल्लंघन न करे (यही एक वेश्या का नैतिक कर्तव्य है) परन्तु ऐसा होने पर भी इसने ब्रह्मविहित अपने धर्म को

---

object in the court by winning over the chief authority by friendship (i.e. money which is not recovered); When one is attached to her, to make the daughter observe the vow of chastity towards him. (It is also her duty). To appropriate by various artifices what remains of the wealth of lovers after it has been expended by daily, occasional and love gifts to reject one who, though almost seduced, does not give anything, by picking a quarrel with him to stimulate the liberality of one, who, being attracted is deep in love by inciting him. Through a deputy (or neighbour or the lover of a neighbour cortesan);

To get rid of one who is without money by means of sarcastic remarks, by reviling him in public, by keeping her daughter off from him, and thus inspiring him with shame or by accepting another lover for her, and by insults, and often to unite her with rich persons, capable of giving much money, who are able to remove all difficulties, and who are unobjectionable, after duly considering all doubts about the advantages and disadvantages (from the connexion). A mere attendance upon a lover, and not real attachment to him is the duty of a courte-

गम्यजनश्च भूयानर्थयोग्यः प्रत्याचक्षाणयाऽनया प्रकोपितः। स्वकुटुम्बं चावसादितम्। "एषा कुमतिर्न कल्याणी।" इति निवारयन्त्यां मयि वनवासाय कोपात्प्रस्थिता। साचेदियमहार्यनिश्चया सर्व एष जनोऽत्रैवानन्यगतिरनशनेन संस्थास्यते"। इत्यरोदीत्।

अथ सा वारयुवतिस्तेन तापसेन 'भद्रे ननु दुःखाकरोऽयं वनवासः। तस्यफलम पवर्गः स्वर्गो वा। प्रथमस्तु तयोः प्रकृष्टज्ञानसाध्यः प्रायो दुःसंपाद एव, द्वितीयस्तु सर्वस्यैव सुलभः कुलधर्मानुष्ठायिनः। तदशक्यारम्भादुपरम्य मातुर्मते-

---

छोड़कर एक बार किसी रूपमात्र धन वाले आगन्तुक ब्राह्मण तरुण से अपने ही धन के व्यय से विहार करते हुए एक मास बिताया। इसने भोग योग्य प्रभूत धन सम्पन्न व्यक्तियों को दुत्कार कर क्रुद्ध कर दिया। अपने परिवार को सङ्कट में डाल दिया। 'ऐसी कुमति अच्छी नहीं है' इस प्रकार मेरे रोकने पर भी यह क्रोध से वन की ओर चल दी। यदि यही इसका दृढ़ निश्चय है तो ये सभी व्यक्ति दूसरे जीवन धारण के उपाय के अभाव में यहीं अनशन कर मर जाएँगे। ऐसा कहकर वह रोने लगी।

अब मुनि ने उस वेश्या से कहा—"कल्याणी, यह बनवास दुःखों का घर है। उसका फल मोक्ष अथवा स्वर्ग की प्राप्ति है। इनमें प्रथम अर्थात् मोक्ष प्रकृष्ट ज्ञान द्वारा ही सुलभ है और इसीलिए प्रायः अलभ्य ही है, परन्तु दूसरा फल अर्थात् स्वर्ग प्राप्ति कुल धर्म का पालन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ है। अतः असम्भव आरम्भ का त्याग कर अपनी माता के कथनानुसार कार्य करो। मुनिवर्य के इस प्रकार अनुकम्पा पूर्वक कहने पर उसने कहा—

---

san, and even when she really loves him, she must not disobey her mother or grandmother. But, such being the settled practice, this (daughter of mine) having transgressed the duties prescribed by the God Bramha, passed exactly a month indulging her passion at her own expense in company of a Brahman youth, who is altogether a stranger and whose only wealth is his handsome form (charming face or complexion).

A large number of admirers, capable of giving much money, she offended by rejecting them, and thus ruined her family, (and when I dissuded her, saying—) "This is foolish and not a wise thought", she in a rage, set out to take up her abode in the forest. Now if she, who has thus acted, proves unshaken in her resolve, all these persons, who have no other means of subsistence, will starve themselves to death; just here." with these words she burst into tears.

Upon this the sage, full of mercy, addressed the damsel—"Good girl, this forest life is surely a life of suffering. Its object is either final beatitude (salvation or freedom from the

वर्तस्व, इति सानुकम्पमभिहिता 'यदीह भगवत्पादमूलशरणम्, शरणमस्तु मम कृपणाया हिरण्यरेता देव एव' इत्युदमनायत।

स तु मुनिरनुविमृश्य गणिकामातरमवदत्—'सम्प्रति गच्छ गृहान् प्रतीक्षस्व कानिचिद्दिनानि यावदियं सुकुमारा सुखोपभोगसमुचिता सत्यरण्यवासव्यसनेनोद्वेजिता भूयोभूयश्चास्माभिर्विबोध्यमाना प्रकृतावेव स्थास्यति' इति।

'तथा' इति तस्याः प्रतियाते स्वजने सा गणिका तमृषिमलघुभक्तिर्धौतोद्गमनीयवासिनी नात्यादृतशरीरसंस्कारा वनतरुपोतालवालपूरणैर्देवतार्चन

यदि यहाँ भगवान् के चरणारविन्द में भी शरण नहीं है तो मुझ दीन के लिए भगवान् अग्नि देव ही शरण बनें। यह कहकर वह उन्मन हो गई।

तब मुनि ने स्वयं कुछ विचार कर उस वेश्या की माता से कहा "इस समय तुम घर लौट जाओ। कुछ दिन प्रतीक्षा करो। जब तक यह सुकुमार, सुखोपभोग की अभ्यस्त, अरण्य-वास के दुःखों से संत्रस्त होकर तथा बार-बार हमारे द्वारा समझाए जाने से, अपने सहज रूप में आजाएगी।"

अपने स्वजनों के 'ठीक है' इस प्रकार कहकर चले जाने पर (घर लौट जाने पर) उस वेश्या ने बहुत भक्ति के साथ, धोए हुए वस्त्रों का जोड़ा धारण कर, अपने शरीर को आभूषणादि से अधिक न सजा कर वन के छोटे-छोटे वृक्षों के आलवाल (थले) को जल से भरते हुए, देवार्चन के लिए कुसुम गुच्छों के संग्रह विषयक प्रयास करते हुए तथा अनेक अन्यान्य उपहार कर्मों के सम्पादन से, भगवान् शंकर के पूजन के लिए चन्दन, पुष्प, धूप, दीप

---

cycling of death and birth) or the attainment of heaven ; the first of these, being attainable by the perfection of spritual knowledge, is generally difficult to accomplish, the second is within the reach of every one who discharges the duties of his family. It were well, therefore, that you should desist from an impossible attempt and abide by the advice of your mother." Thus addressed she, saying—"If the root of the feet of your Reverence be not my refuge, helpless that I am, let the God of fire be." became agitated (uneasy) at heart.

The merciful sage than thought to himself, and said to her mother—"Go home for the present, wait for a few days till she, of a tender body and accustomed to the enjoyment of pleasures, grows weary of the hardship of a forest life, and being contsantly awakened to her duties by me, come to her senses."

When the relatives of the young courtesan returned to their respective homes, saying 'all right' the courtesan, full of deep devotion, wearing a couple of freshly-washed garments and not much attentive to personal decoration, (won the sage's heart in

कुसुमोच्चयावचयप्रयासैर्नैकविकल्पोपहार कर्मभिः, काम शासनार्थे च गन्ध माल्यधूपदीपनृत्यगीतवाद्याभिः क्रियाभिरेकान्ते च त्रिवर्ग संबन्धिनीभिः कथाभिरध्यात्मवादैश्चानुरूपैरल्पीयसैवकालेनान्वरञ्जयत् ।

एकदा च रहसि रक्तं तमुपलक्ष्य 'मूढः खलु लोको यत्सहधर्मेणार्थ-कामावपि गणयति' इति किंचिदस्मयत । 'कथय वासुकेनांशेनार्थकामातिशायी धर्मस्तवाभिप्रेतः' इति प्रेरिता मरीचिना लज्जामन्थरमारभताभि-धातुम—

'इतः किल जनात् भगवतस्त्रिवर्गबलाबलज्ञानम् । अथवैतदपि प्रकारा-

---

आदि की तैयारी द्वारा नृत्य, गीत, वाद्य आदि क्रियाओं द्वारा एवं एकान्त में धर्म, अर्थ, काम से सम्बन्ध रखने वाली कथाओं द्वारा तथा अपने अनुरूप अध्यात्म विषयक विवाद करते हुए थोड़े ही समय में मुनि को प्रसन्न कर लिया ।

एक दिन एकान्त में उन्हें अपने में अनुरक्त देखकर, उस वेश्या ने किञ्चित आश्चर्य के साथ कहा—' निश्चय ही ये सांसारिक जन मूर्ख हैं जो धर्म के साथ अर्थ और काम को भी गिनते हैं"। 'इस कथन को सुनकर मुनि ने पूछा' पुत्री ! बताओ कि किस दृष्टि से तुम धर्म को काम और अर्थ को अतिशायित करने वाला (ऊपर उठा हुआ) समझती हो ? इस प्रकार मरीचि से प्रेरित होकर वह लज्जावनत होकर धीरे से यह कहने के लिए प्रस्तुत हुई—

भगवन् ! क्या मेरे जैसी सामान्य स्त्री से वास्तव में सांसारिक

---

a few days by such actions) as filling the basins of the young plants with water, taking pains to collect the bunches of flowers for the worship of the deities, preparing offerings of various sorts. Keeping ready the sandal-paste, flowers, frankincense lamp-light, dancing, singing and playing on musical instruments, for the worship of lord Shiva and by engaging herself in a secluded (lonely) place in conversations with him touching the three objects of worldly existence and suitable discussions concerning the naturc of the self, (she won the sages's heart or pleased him in a very short period).

Once, when in private, finding that he was affccted by passion, she observed with some astonishment—"Foolish, indeed, are the worldly people that place Artha (wealth) and Kama (pleasure or passion) on an equal footing with Dharma (religion). Urged by the Marichi, saying—"Tell me, child, in what degree you would have Dharma transcend Artha and Kama," she began slowly to speak through modesty—

Your Reverence ! should, indeed, seek to learn of the

न्तरं दासजनानुग्रहस्य। भवतु। श्रूयताम्। ननु धर्मादृतेऽर्थकामयोरनुत्पत्तिरेव। तदनपेक्ष एव धर्मोनिवृत्तिसुखप्रसूतिहेतुरात्मसमाधानमात्रसाध्यश्च। सोऽर्थं कामवद्बाह्यसाधनेषु नात्यायतते। तत्त्व दर्शनोपबृंहितश्च यथा कथंचिदप्यनुष्ठीयमानाभ्यां नार्थकामाभ्यां बाध्यते। बाधितोऽपि चाल्पायास प्रतिसमाहितस्तमपि दोषं निर्हृत्य श्रेयसेऽनल्पाय कल्पते।

तथाहि। पितामहस्य तिलोत्तमाभिलाषः, भवानीपतेर्मुनिपत्नीसहस्र संदूषणम्, पद्मनाभस्य षोडशसहस्रान्तःपुरविहारः, प्रजापतेः स्वदुहितर्यपि प्रणय

अस्तित्व के कारण भूत तीनों पदार्थों (धर्म, अर्थ, काम) की उच्चता अथवा लघुता को जानने का प्रयास किया जा सकता है? अथवा यह भी अपने दास पर अनुग्रह प्रकट करने का ही कोइ दूसरा मार्ग (ढंग) है? ठीक है। सुनिये। निश्चय ही धर्म के बिना अर्थ और काम की उत्पत्ति हो ही नहीं सकती। अतः धर्म सर्वथा स्वतन्त्र मोक्ष-सुख को प्रदान कराने वाला कारण तथा अपना समाधान मात्र और साध्य है (अपना समाधान कराने वाला और सहज किया जा सकने वाला है)"।

यह (धर्म) अर्थ और काम की भाँति बाहरी साधनों पर अत्यन्त (पूरी तरह) निर्भर नहीं होता (आश्रित नहीं होता)। वास्तविक ज्ञान का सहारा लेकर यह किसी भी प्रकार किए जाने वाले अर्थ और काम से बाधित (प्रभावित) नहीं होता। यदि बाधित (प्रभावित) होता भी है तो सामान्य से परिश्रम से ही इसे समाहित (सुस्थापित) किया जा सकता है। एवम् निर्मूलित होने पर भी यह दोष थोड़े-से ही प्रयत्न से प्रभूत कल्याण साधन में योग देता है। (अत्यधिक कल्याण कर देता है)।

जैसे कि, पितामह ब्रह्मा द्वारा तिलोत्तमा नामक अप्सरा की कामना करना, भवानी पति शङ्कर का हजारों मुनि पत्नियों को दूषित

---

superiority or inferiority of the three objects of worldly existonce from a person like myself! Or, even this may be a new way of showing favonr to your slave! very well, please hear me now—'To be sure, Artha and kama can not come in to being without Dharama, but even without regard to them, Dharma alone is the creative cause of final beatitude, and is attainable only by the concentration of the mind.

It does not like Artha and Kama much depend on external means. Supported by the knowledge of the reality, it is not affected by Artha and Kama, howsoever pursued, and even if affected, it is set right by a little exertion; and eradicating that defect also, it conduces to the highest bliss.

Hence the passion of the Bramha for Tilottama, the pollution of thousands of the wives of the ascetics by Shiva, Lord

प्रवृत्तिः, शचीपतेरहल्याजारता, शशाङ्कस्य गुरुतल्पगमनम्, अंशुमालिनो वडवालङ्घनम्, अनिलस्य केसरिकलत्रसमागमः, बृहस्तेरुतथ्यभार्याभिसरणम्, पराशरस्य दाशकन्याङ्कशणम्, पाराशर्यस्य भ्रातृदार संगतिः, अत्रेर्मृगी समागम इति । अमराणां च तेषु तेषु कार्येष्वासुरविप्रलम्भनानि ज्ञानबलान्न धर्मपीड़ामावहन्ति । धर्मपूते च मनसि नभसीव न जातु रजोऽनुषज्यते । तन्मन्ये नार्थ कामौ धर्मस्य शततमीमपि कलां स्पृशतः' इति ।

श्रुत्वैतदृषिरुदीर्णरागवृत्तिरभ्यधात्—'अयिविलासिनि ! साधुपश्यसि । न

करना, पद्मनाभ श्रीकृष्ण का सोलह हजार रानियों के साथ विहार करना, प्रजापति का अपनी पुत्री के प्रति अनुराग दिखाना, इन्द्र का अहिल्या के साथ जारकर्म करना, चन्द्रमा का अपनी गुरु पत्नी से वलात्कार करना, सूर्य का बड़वा (घोड़ी) के साथ विपरीत गमन करना, वासुदेव का केसरी की पत्नी के साथ समागम करना, बृहस्पति का अपने ज्येष्ठ भाई उतथ्य की पत्नी के साथ (निषिद्ध) अभिसार करना, ऋषि पराशर का धीवर की कन्या को दूषित करना, वेदव्यास का अपने भाइयों की पत्नी के साथ सम्बन्ध जोड़ना तथा अत्रि का मृगी से समागम करना (आदि इसके प्रमाण हैं) ।

देवताओं का असुरों के प्रति उन उन कार्यों में विपरीत आचरण (अपने विभिन्न उद्देश्यों को पाने के लिए) ज्ञान के बल के कारण धर्म को प्रभावित नहीं करते। धर्म से मन के पवित्र हो जाने पर व्यक्ति को रजोगुण उसी प्रकार स्पर्श नहीं करता जैसे आकाश को धूलि नहीं लिप्त कर पाती। अतः मैं मानती हूँ कि अर्थ और काम धर्म की सौवीं कला का भी स्पर्श नहीं कर सकते।

—यह सुनकर बढ़ी हुई रागवृत्ति वाले मुनि बोले—अरी

Krishna's amourous sporting with sixteen thousand wives in his harem, Brahma's passionate inclination towards his own daughter, the seduction of Ahalya by Indra, the Moon's violation of the bed of his guru (prceptor) Brihaspati, the Sun's unnatural connexion with a mare, the union of Vayu with Kesari's wife (Anjana), Brihaspati's illicit interecourse with the wife of Utathya (his elder brother), Parashars despoiling of the daughter of a fisherman, Vedvyasa's connexion with the wives of his brothers, and Atri's union with a doe.

Also, the various artifices employed by Gods toward the damons to gain their various objects do not affect Dharma, by the power of knowledge. And, when the mind is purified by piety, Rajasa does not at all touch it, as dust does not the sky. I therefore, hold that Artha and Kama do not come up even to a hundredth part of Dharma."

On hearing this the sage with his passion enkindled

धर्मस्तत्वदर्शिनां विषयोपभोगेनोपरुध्यत इति। किं तु जन्मनः प्रभृत्यर्थकाम-वार्तानभिज्ञा वयम्। ज्ञेयौ चेमौ किंरूपौ किंपरिवारौ किं फलौच इति।

सात्ववादीत्—"अर्थस्तावदर्जनवर्धनरक्षणात्मकः, कृषिपशुपाल्यवाणिज्य संधिविग्रहादिपरिवारः तीर्थप्रतिदानफलश्च। कामस्तु विषयातिसक्तचेतसोः स्त्रीपुसयोर्निरतिशयसुखस्पर्शविशेषः। परिवारस्त्वस्य यावदिह रम्यमुज्ज्वलं च। फलं पुनः परमाह्लादनम्, परस्परविमर्दजन्य, स्मर्यमाणमधुरम्, उदीरिताभिमानमनुत्तम, सुखमपरोक्षं स्वसंवेद्यमेव। तस्यैवकृते विंशिष्टस्थानवर्तिनः कष्टानि तपांसि, महान्ति दानानि, दारुणानि युद्धानि, भीमानि समुद्रलङ्घनादीनि च नराः समाचरन्ति' इति।

विलासिनी! तुम ठीक (भली प्रकार) देखती हो (तुम्हारा दृष्टिकोण समुचित है।) तत्व दर्शियों को धर्म विषयों का उपभोग करने से नहीं रोकता परन्तु जन्म से लेकर अद्यावधि अर्थ, काम, विषयक वार्ता में हम अनभिज्ञ हैं। अतः सर्वप्रथम हमें इन्हें, इनके स्वरूप को, इनके पविार और फलों को जानना चाहिए।

वह बोली—"अर्थ, अर्जन (कमाना) वर्धन (बढ़ाना) तथा रक्षणात्मक होता है : कृषि, पशु पालन, व्यापार, सन्धि, विग्रह (युद्धादि) आदि इसके परिकर होते हैं और तीर्थों पर दान देना इसका फल है परन्तु काम अतीव विषयासक्त चित्त वाले स्त्री पुरुष का आत्यन्तिक सुखद स्पर्श विशेष है। विश्व के समस्त प्रिय एवं उज्ज्वल पदार्थ इसके पारिवारिक हैं। इसका फल अतीव प्रसन्नता दायक आलिंगन चुम्बनादि से उत्पन्न होने वाला और स्मरण करने योग्य माधुर्य से पूर्ण होता है। यह अतीव उदात्त (महान्) आत्मगौरव (अभिमान) को बढ़ाने वाला, प्रत्यक्ष सुख तथा स्वयं

---

said—O, beautiful lady (courtesan) you have taken a proper view of the subject, in that you say that the Dharma of him who has known the Truth is not obstructed by worldly enjoyment. But we, from our birth, are quite ignorant of matters relating to Artha and Kama. It is necessary to know what their nature are, their attendant circumstanees and their results."

She replied—"Artha is of the form of (i.e. consists in) its acquisition, increase and conservation ; its concomitants are agriculture, rearing up of cattle, trade, peace, war and the like ; and it's fruit is its bestowal on deserving persons. Kama is a peculiar kind of touch yielding the highest pleasure to persons whose hearts are deeply attached to sensual objects ; all that is beautiful and bright comes under its accessories.

Its fruit is the highest gratification, which gives the highest-delight, which springs up from mutual, close contact, which is sweet to remember, in which all self-conceit disappears, which is supreme, which is bliss directly enjoyed, and which is to be

निशम्यैतन्नियतिबलान्नु तत्पाटान्नु स्वबुद्धिमान्द्यान्नु स्वनियममनादृत्य-तस्यामसौ प्रासजत् । सा सुदूरं मूढात्मानं च तं प्रवहणेन नीत्वा पुरमुदारशोभया राजवीथ्या स्वभवनमनैषीत् । अभूच्च घोषणा 'श्वः कामोत्सवः' इति ।

उत्तरेद्युः स्नातानुलिप्तमारचितमञ्जुमालमारब्धकामिजनवृत्तं निवृत्तस्ववृत्ताभिलाषं क्षणमात्रगतेऽपि तया विना दूयमानं तमृषिमृद्धिमता राजमार्गेणोत्सव-समाजं नीत्वा क्वचिदुपवनोद्देशे युवतिजनशत परिवृतस्य राज्ञः संनिधौ स्मितमु (समासदत्) तेन—"भद्रे ! भगवता सह निषीद" इत्यादिष्टा सविभ्रमं कृत प्रणामा सस्मितं न्यषीदत् ।

अनुभव किया जाने वाला होता है । इसीलिए विशिष्ट स्थानों पर रहने वाले व्यक्ति कष्टकर तप, महान् दान, भयंकर युद्ध, भयानक समुद्र लंघनादि कार्य करते हैं ।

यह सुनकर महर्षि ने कहा कि भाग्य बल से अथवा उसके (वेश्या के) चातुर्य से, अथवा स्वयं अपनी बुद्धि की मन्दता से, यह मनुष्य (मैं) अपने नियम को अनादृत कर उसमें सम्पृक्त (आसक्त) हो गया है (हूँ)। (तब) उसने (वेश्या ने) बहुत दूर गए हुए (अर्थात् आत्म विस्तृत) उस मूढ़ात्मा को एक सवारी द्वारा नगर में ले जाकर अतीव शोभायुक्त मार्ग द्वारा अपने भवन में पहुँचाया । उसी समय घोषणा हुई कि 'कल कामोत्सव' है ।

दूसरे दिन जब ऋषि स्नान कर अपने शरीर को सुगन्धित द्रव्यों से अलंकृत कर, पुष्प माला धारण कर चुके, तब वह वेश्या उन मुनिवर को, जो अब कामी-जनों की सी चेष्टाएँ करने लगे थे तथा अपने पूर्व आचरण की रक्षा की इच्छा भी जिनके मन से दूर हट चुकी थी एवं जो क्षण मात्र बीतते ही उस वेश्या के बिना खिन्न हो जाते थे, साथ लेकर सुसम्पन्न राजमार्ग से उत्सव सभा में (जहाँ लोग उत्सव मना रहे थे), उस उपवन में जहाँ सैकड़ों युवतियों से घिरा हुआ प्रसन्न वदन राजा विराजमान था, पहुँची । उस राजा ने उससे कहा भद्रे ! भगवान् के साथ बैठो ।" इस प्रकार आज्ञा मिलने पर वह कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम कर हँसती हुई मुनि के साथ बैठ गई ।

---

felt by one's own self only. It is for the sake of this pleasure only that men practise in particular (holy) places severe penance, give liberal gifts, fight terrible battles, and undertake dangerous enterprises as Voyages.

Hearing this, the sage—'It may be owing to the power of destiny, or to her ability or to infirmity of his own mind—became attached to her, disregarding his devotions. She took him, who was too far gone in forgetting himself (i.e. his proper duty) in a carrier to the town, and led him to her own house by the magnificent high way. And (as they passed), the festival of Kama was proclaimed as taking place on the next coming day.

Next day, when the ascetic had bathed and applied perfumes

तत्र काचिदुत्थाय बद्धाञ्जलिरुत्तमाङ्गना 'देव ! जितानयाऽहम् । अस्यैदास्यमद्यप्रभृत्यभ्युपेतं मया' इति प्रभुं प्राणंसीत् । विस्मयहर्षमूलश्च कोलाहलो लोकस्योदजिहीत ।

हृष्टेन च राज्ञा महार्हैं रत्नालंकारैर्महता च परिबर्हेणानुगृह्य विसृष्टा वारमुख्याभिः पौरमुख्यैश्च गणशः प्रशस्यमाना स्वभवनमगत्वैव तमृषिमभाषत- 'भगवन् ! अयमञ्जलिः चिरमनुगृहीतोऽयं दासजनः ।' स्वार्थ इदानीमनुष्ठेयः' इति ।

तभी उस सभा में कोई श्रेष्ठ ललना उठकर और हाथ जोड़कर बोली— "देव! इस (काममंजरी) ने मुझे जीत लिया है ।(और) आज से इसका दास्य मैंने स्वीकार कर लिया है ।" यह कहकर उसने स्वामी (राजा) को प्रणाम किया । (उसी समय) जनता का आश्चर्य और प्रसन्नता मूलक कोलाहल उठ खड़ा हुआ । (जनता ने आश्चर्यमिश्रित हर्षध्वनि की) ।

प्रसन्न राजा द्वारा बहुमूल्य रत्नालङ्कार तथा बहुत से सेवक पुरस्कार स्वरूप देकर विदा कर दिए जाने पर प्रमुख वारांगनाओं के समुदायों तथा प्रमुख नागरिक समुदायों द्वारा अभिनन्दित होती हुई वह वारांगना बिना अपने घर गए (अपने घर पहुँचने से पूर्व) उन मुनिवर से बोली—"भगवन् ! यह प्रणामाञ्जलि स्वीकार कीजिए । आपने बहुत समय तक इस दासी को अनुगृहीत किया है । अब आपको स्वार्थ साधन करना चाहिए ।"

---

to his body, and puton beautiful garlands, she led him, who had begun to act like a votary of the God of love, and who had no longer any desire to keep up his former character, and who felt uneasy if he was without her even for an instant, by the splendid royal road to where people were celebrating the festival of Kama, and approached the king who was sitting, surrounded by hundreds of young ladies, in one part of the garden. The king with a smiling face said—"Dear lady, sit down with the sage" Thereupon she made a graceful bow and smilingly sat down.

There a beauteous woman with folded hands rose up, saying "Sir, I am vanquished by this Kamamanjari and own myself the Kamamanjari's slave from this day." and then bowed to the king. A general uproar due to wonder and joy rose up from the people.

The courtesan, dismissed by the delighted king after being rewarded with jewelled ornaments of great value and a large retinue. and also applauded by the different groups of courtesans and the groups of principal citizens, said to the sage even without going home—"Respected sir, here I fold my hands to you,

स तु रागादशनिहत इवोद्भ्राम्याब्रवीत्—'प्रिये! किमेतत् ? कुत इदमौदासीन्यम् ? क्व गतस्तव मय्यसाधारणोऽनुरागः' इति । अथ सा सस्मितमवादीत्—'भगवन्! ययाद्य राजकुले मत्तः पराजयोऽभ्युपेतस्तस्याश्च मम च कस्मिंश्चित् संघर्षे 'मरीचिमावर्जितवतीव श्लाघसे' इति तयाऽस्म्यहमधिक्षिप्ता । दास्यपणबन्धेन चास्मिन्नर्थे प्रावर्तिषि । सिद्धार्था चास्मि त्वत्प्रसादात्' इति ।

स तया तथावधूतो दुर्मतिः कृतानुशयः शून्यवन्न्यवर्तिष्ट । यस्तयैवं कृत स्तपस्वी तमेव मां महाभाग ! मन्यस्व । स्वशक्तिनिषिक्तं रागमुद्धृत्य तयैव बन्धक्या महद्वैराग्यमर्पितम् । अचिरादेव शक्य आत्मा त्वदर्थसाधनक्षमः कर्तुम् । अस्यामेव तावद्वसाङ्गपुर्यां चम्पायाम्' इति ।

परन्तु वे ऋषि प्रेमाधिक्य के कारण वज्र से मारे गए की भाँति व्याकुल होकर बोले—"प्रिये ! यह क्या ? यह उदासीनता कैसी ? मेरे प्रति तुम्हारा वह असाधारण प्रेम कहाँ चला गया ? यह सुनकर उसने हँसते हुए कहा—"जिस वेश्या ने आज राज सभा में मुझसे पराजय स्वीकार की है उसने किसी संघर्ष में तुम तो इस प्रकार शेखी मार रही हो 'मानो तुमने मरीचि ऋषि को ही जीत लिया हो' यह कहकर मुझ पर छींटे कसे थे । इस पर हम दोनों में शर्त लगी थी कि हारने वाला जीतने वाले का दास बनेना । इसी कारण मैं इस कार्य में (आपको जीतने में) प्रवृत्त हुई थी । (अब) आपकी कृपा से मैं सफल मनोरथ हुई हूँ ।

वह मूर्ख ऋषि उस वेश्या द्वारा इस प्रकार ठुकरा दिये जाने पर, पश्चाताप करता हुआ अपने आश्रम में लौट आया । हे महाभाग ! जिस तपस्वी के साथ उस वेश्या ने इस प्रकार व्यवहार किया था, मुझे तुम वही समझो अर्थात् उस वेश्या द्वारा अपमानित तपस्वी दूसरा कोई नहीं मैं स्वयं हूँ । उसी ने अपनी आकर्षण शक्ति से धीरे-धीरे मेरे राग को दूर कर मुझ में सांसारिक सुखों के

---

this your servant has been long favoured, now return to your pious duties or now you please fulfil your selfish desire.

But he, as if struck by the thunderbolt and greatly agitated by his passion, said to her—"Dear, what does this mean ? Whence is this indifference ? Where has gone that uncommon affection you showed for me ?" Smiling she replied—"Sir, the courtesan, who in the royal assembly acknowledged her defeat, previously in some conflict with me, rebuked me, saying—"you are boasting as if you have won over sage Marichi," so, I proceeded in this affair, it being agreed (between us) that the difeated one should become the slave of the other, and by your favour I have won the wager."

The silly ascetic, repulsed by her, greatly repented. and like one vecant minded, returned to his hermitage. And know me, O noble person, to be the same who was cheated by that cour-

अथ तन्मनश्च्युततमः स्पर्शमियेवास्तं रविरगात् । ऋषिमुक्तश्च रागः सन्ध्यात्वेनास्फुरत् । तत्कथादत्तवैराग्याणीव कमलवनानि समकुचन् । अनुमत मुनिशासनस्त्वहममुनैव सहोपास्य सन्ध्यामनुरूपाभिः कथाभिस्तमनुशय्य नीत रात्रिः प्रत्युन्मिषत्युदयप्रस्थदावकल्पे कल्पद्रुमकिसलयावधीरिण्यरुणार्चिषि तं नमस्कृत्य नगरायोदचलम् ।

अदर्शं च मार्गाभ्यासवर्तिनः कस्यापि क्षपणकविहारस्य बहिर्विविक्ते रक्ता-

---

प्रति वैराग्य जगाया है । शीघ्र ही आत्मा को तुम्हारा अर्थ साधन करने में समर्थ बनाया जा सकता है (मैं शीघ्र ही शक्ति-सम्पन्न होकर तुम्हारा कार्य पूरा करने का प्रयत्न करूँगा) । अतः तब तक तुम इसी अङ्ग देश की राजधानी चम्पापुरी मैं निवास करो ।

तदनन्तर उन मुनिवर के मन से गलित तम अर्थात् अज्ञान के स्पर्श के भय से ही मानो सूर्य अस्त हो गया । ऋषि द्वारा मुक्त काममञ्जरी बिषयक राग सन्ध्या के रूप में प्रकट हुआ । उक्त कथा द्वारा मानो वैराग्य दे दिया गया हो, इस प्रकार कमल-वन संकुचित हो गए । मुनि के शासन (आज्ञा) को स्वीकार कर मैं उन्हीं के साथ सन्ध्योपासनादि कर, समय के अनुरूप कथाओं को कहते सुनते हुए (उन्हीं के साथ) रात बिताकर, उदय होते हुए सूर्य को, जो कि उदयाचल के कूट पर दावाग्नि वत् प्रतिभासित हो रहा था तथा जिसकी रश्मियाँ कल्पवृक्ष के रागारुण पल्लवों को तिरस्कृत कर रही थीं, नमस्कार कर मैं नगर के लिए (की ओर) चल पड़ा ।

मार्ग में, मार्ग के निकट ही किसी जैन-विहार के बाहर एकान्त में रक्त

---

tesan. And that somewhere, having uprooted the passion instilled in me by her power of attraction, has now created in me a great disgust for worldly pleasures. Very soon I shall render my soul capable of achieving your object. Till that period you please reside in this Champa city, the capital of Anga."

At this time sun set, as If in fear of the touch of the darkness of ignorance that fell off from the saints mind, the Raga (Passion) cast off by him, glimmered in the shape of the twilight; and the beds of lotuses faded away, as if they had colourlessness imparted to them (as if filled with disgust) by his narration. In conformity with the sage's direction I performed the evening devotions with him, sleeping, after him, and passed the night talking on various topics suited to the occasion. At day—break, while the red rayed sun, that looked almost like a wild-fire on the peak of rising mountain, and that despised the tender sprouts of the desire-fulfilling trees, was peeping up I bowed to him and proceeded to the city.

On the way, out side a convent of Jain mendicants, I saw,

शोकखण्डे निषण्णमस्पृष्टसमाधिमाधिक्षीणमग्रगण्यमनभिरूपाणां कृपणवर्णं कमपि क्षपणकम्। उरसि चास्य शिथिलितमलनिचयान्मुखान्निपततोऽश्रुबिन्दूनलक्ष्यम्। अप्राक्षं चान्तिकोपविष्टः—'क्व तपः! क्व च रुदितम्! न चेद्रहस्यमिच्छामि श्रोतुं शोकहेतुम्' इति। सोऽब्रूत—"सौम्य! श्रूयताम्। अहमस्यामेव चम्पायां निधिपालित नाम्नः श्रेष्ठिनो ज्येष्ठ सूनुर्वसुपालितो नाम। वैरुप्यात्तुमम विरूपक इति प्रसिद्धिरासीत्। अन्यश्चात्र सुन्दरक इति यथार्थ नामा कलागुणैः समृद्धो वसुना नाति पुष्टोऽभवत्। यस्य च मम च वपुर्वसुनी निमित्तीकृत्य वैरं वैरोपजीविभिः पौरधूर्तैरुदपाद्यत।

अशोक कदम्ब समूह में बैठे हुए, नियम रहित, मानसिक पीड़ा से दुर्बल, कुरूपों में अग्रगण्य, दीनवर्ण वाले किसी क्षपणक (जैन सन्यासी) को मैंने देखा। इसके उरस्थल पर शिथिलित होती (गलती हुई) मैल और उस मैल से भरे हुए मुख से गिरते हुए आँसुओं को भी मैंने देखा।

मैंने उसके पास बैठकर पूछा—"कहाँ तप और कहाँ यह रोदन? यदि कोई रहस्य (गोपनीय) की बात न हो तो मैं तुम्हारे शोक का कारण जानना चाहता हूँ। उसने कहा—सौम्य! सुनो। मैं इसी चम्पा नगरी के निधि पालित नामक सेठ का वसुपालित नामक ज्येष्ठ पुत्र हूँ।

कुरूपता के कारण मैं विरूपक के नाम से प्रसिद्ध था। यहीं सुन्दरक नामक यथार्थ नाम वाला, शुभगुणों से सम्पन्न परन्तु धन की दृष्टि से सामान्य व्यक्ति था। उस सुन्दरक और मेरे शरीर और द्रव्य को निमित्त बनाकर, दूसरों की शत्रुता

---

seated in a lonely clump of red Ashoka trees, a Jain mendicant (monk), of a miserable look, who had not yet begun to practise Samadhi i.e. abstract meditation, who was reduced by mental anxiety and who was foremost among the ugly. I also noticed drops of tears falling on his chest from his face, the accumulation of dust whereon was loosened.

I sat down by him and asked him—"where is penance and where is this shedding of tears? how to reconcile the two? If not confidential, please let me know the cause of your sorrow"? He replied—'Gentleman, listen. I am Vasupalita by name, the eldest son of a rich person, Nidhipalit by name, an inhabitant of this very Champa city.

On account of my ugliness I came to be distinguished by the name Virupaka. There was another youth by name Sundarka whose name was quite significant in his case, who was rich in virtues and in various arts, but not much favoured by wealth. An ill feeling was created between him and me, based on our form and wealth, by the designing town sharpers who live by creating discord.

त एव कदाचिदावयोरुत्सव समाजे स्वयमुत्पादितमन्योन्यावमानमूलमधिक्षेपवचनव्यतिकरमुपशमय्य 'न वपुर्वसु वा पूंस्त्वमूलम्, अपि तु प्रकृष्टगणिका प्रार्थ्ययौवनो हि यः स पुमान् ।

अतोयुवतिललामभूता काममञ्जरी यं वा कामयते स हरतु सुभग पताकाम्, इति व्यवस्थापयन् । अभ्युपेत्यावां प्राहिणुव तस्यै दूतान् । अहमेव किलामुष्याः स्मरोन्माद हेतुरासम् ।

आसीनयोश्चावयोर्मामिवोपगम्य सा नीलोत्पलमयमिवापाङ्गदामाङ्गे मम मुञ्चन्ती तं जनमपत्रपयाऽधो मुखं व्यधत्त । सुभगंमन्येन च मया स्व धनस्य, स्वगृहस्य, स्वगणस्य, स्वदेहस्य, स्वजीवितस्य च सैवेश्वरीकृता ।

पर ही जीवित रहने वाले पुरवासी धूर्तों ने(हम दोनों में)वैर पैदा कर दिया ।

उन्हीं पौरधूर्तों ने एक उत्सव के अवसर पर समाज में हम दोनों में स्वयं पैदा किए हुए विवाद में परस्पर किए जाते हुए आक्षेप मूलक वचन-प्रसार को शान्त कर "न शरीर ही पुरुषत्व का मूल(या कसौटी)है और न धन ही, बल्कि निश्चय ही जिसके यौवन की प्रार्थना श्रेष्ठ वेश्या स्वयं करे वही वास्तविक पुरुष है, इस प्रकार कहा ।"

इसलिए तरुणियों में भूषण रूपा काममञ्जरी जिसे प्यार करे, उसे ही सुन्दरता का ध्वज (चिन्ह) हरण करने दिया जाए । इस प्रकार उन लोगों ने व्यवस्था की । इसे स्वीकार कर हम दोनों ने उसके लिए(काममञ्जरी को लाने के लिए) दूत भेजे । (परन्तु) केवल मैं ही उसके कामोन्मादका कारण बन सका अर्थात् अकेला मैं ही उस काममञ्जरी की काम भावना को उभाड़ने में सफल हो सका ।

सभा में बैठे हुए हम दोनों में से केवल मेरे ही पास पहुँचकर उसने नीलकमल जैसे अपने नयन कोर से मुझ पर दृष्टिपात किया और उस दूसरे व्यक्ति अर्थात् मेरे प्रतिद्वन्दी सुन्दरक को लज्जा से अधो मुखी बना दिया । (अब) अपने आपको सुन्दर मानने वाले मैंने उसे (काममञ्जरी को) ही अपने धन,

---

Once at a festival, they themselves put down an altercation in reproachful language between us, due to mutual insult and given rise to by themselves, and settled the matter, saying—"Neither form nor wealth is the test of manliness; but he alone in a man whose youth would be sought by the most eminent harlot (courtesan).

Let him, therefore, whom Kamamanjari, the courtesan, who is just like an ornament of young women, would love, have the banner of grace." We agreed to it and sent messengers to her (to bring her). (But) I alone became the inflamer of her passion.

For, as we were seated, she, approaching me alone, invested me with a string of side glances as if of blue lotuses, and

कृतश्चाहमनया मलमल्लकशेषः। हृतसर्वस्वतया चापवाहितः प्रपद्य लोकोपहासलक्ष्यतामक्षमश्च सोढुं धिक्कृतानि पौरवृद्धानामिह जैनायतने मुनिनैकेनोपदिष्टमोक्षवर्त्मा सुकर एष वेषो वेशनिर्गतानामित्युदीर्णवैराग्यैस्तदपि कौपीनमजहाम्।

अथ पुनः प्रकीर्णमलपङ्कः प्रबलकेशलुञ्चनव्यथः प्रकृष्टतमक्षुत्पिपासादि दुःखः स्थानासनशयनभोजनेष्वपि द्विप इव नवग्रहो बलवतिभिर्यन्त्रणाभिरुद्वेजितः प्रत्यवामृशम्।

घर, दास, शरीर और प्राणों की स्वामिनी बना दिया।

(स्वामिनी बनते ही) उसने मुझे मात्र कौपीनधारी बना दिया अर्थात् लँगोटी छोड़कर और मेरा सब कुछ अपहरण कर लिया। उसके द्वारा सर्वस्व का अपहरण कर बाहर निकाल दिए जाने पर, लोगों के उपहास का लक्ष्य बनकर तथा वृद्ध नागरिकों के धिक्कार को सहन कर पाने में असमर्थ होकर मैं यहाँ इस जैन मन्दिर में आ पहुँचा। यहाँ आने पर एक मुनि ने मुझे मोक्ष का मार्ग बताया। वेश्या गृह से निस्सारित व्यक्तियों के लिए यह वेश सुकर (आसान) है, यह सोचकर एवं अधिक वैराग्य भावना से भरकर (अधिक अरुचि युक्त होकर) मैंने लँगोटी का भी त्याग कर दिया।

इसके पश्चात् फिर शरीर पर फैले हुए मैल के कीचड़, केश उखाड़ने से होने वाली प्रबल व्यथा, भूख, प्यास आदि का महान् दुःख, स्थान, आसन, भोजन आदि में भी नए-नए पकड़े गए हाथी की तरह बलवती यन्त्रणाओं द्वारा अत्यधिक पीड़ित होकर मैंने विचार किया।

---

thus made my rival Sundaraka hang down his face through shame. (Then) I, who considered myself beautiful or blessed, made her the mistress of my wealth, my house, my retinue, my body and even of my very life.

Now, she made me one to whom a rag was left. I, who was deprived of everything and turned out by her, became an object of redicule to the world, and being unable to hear the contempt of the aged citizens, I came here to this Jain temple, where the path to final beatitude being shown to me by a jain muni. I thinking that my present garb should be easy to those who had left the house of a courtesan, and being filled with disgust, threw off that strip of cloth also.

Then again; with my body covered with a thick layer of dirt, smarting under the great pain caused by the plucking off of the hair, tormented with sever thirst and hunger and troubled by severe restraints, like a newly caught, elephant, in matters such as dwelling, sitting, sleeping and taking food, I thus thought over my position.

'अहमस्मि द्विजातिः। अस्वधर्मो ममैष पाखण्डपथावतारः। श्रुति स्मृति विहितेनैव वर्त्मना मम पूर्वजाः प्रावर्तन्त। मम तु मन्द भाग्यस्य निन्द्यवेशममन्द दुःखायतनं हरिहरहिरण्यगर्भादिदेवतापवादश्रवणनैरन्तर्यात्प्रेत्यापि निरय फलमफलं विप्रलम्भप्रायमीदृशमिदमधर्मवर्त्म धर्मवत्समाचरणीयमासीत्।'

'इति प्रत्याकलितस्वदुर्नयः पिण्डीखण्डं विविक्तमेतदासाद्य पर्याप्तमश्रु मुञ्चामि' इति। श्रुत्वा चैतदनुकम्पमानोऽब्रवम्—'भद्र! क्षमस्व। कञ्चित्का-लमत्रैव निवस निजेनद्युम्नेनासावेव वेश्या यथा त्वां योजयिष्यति तथा यतिष्ये। 'सन्त्युपायास्तादृशाः' इत्याश्वास्यतमनूत्थितोऽहम्। नगरमाविशन्नेव

मैं द्विजाति का व्यक्ति (वैश्य) हूँ। मेरा इस पाखण्ड मार्ग में प्रविष्ट होना स्वधर्म नहीं है। मेरे पूर्वज श्रुति-स्मृति विहित मार्ग पर ही चलते रहे हैं। परन्तु मैं मन्दभाग्य तो इस प्रकार के अधर्ममय मार्ग का अनुसरण कर रहा हूँ, जिसमें निन्द्यवेश धारण करना पड़ता है तथा जो तीव्र दुःखों का घर है। इसके साथ ही जिसमें सतत भगवान् विष्णु, शिव एवं ब्रह्मा आदि की निन्दा सुननी पड़ती है, जिसका फल मृत्यु के पश्चात् भी नरक प्राप्ति ही है। इस प्रकार के अधर्म का यह मार्ग वस्तुतः एक धोखा मात्र है। इसका वास्तविक कोई फल भी नहीं है। मुझे हर स्थिति में धर्मात्मा की भाँति ही आचरण करना चाहिए था।

इस प्रकार अपने दुर्नय (अविचार पूर्ण कार्य) पर विचार करता हुआ मैं इस एकान्त अशोक वृक्ष समूह में आकर अनवरत आँसू बहा रहा हूँ। उसका कथन सुनकर करुणा विगलित होकर मैंने कहा—"भद्र! क्षमा करो। कुछ समय तक यहीं रहो। अपने ही धन से यह वेश्या जिस प्रकार तुम्हें फिर से भर दे, मैं वैसा ही प्रयत्न करूँगा। ऐसे कई उपाय हैं। इस प्रकार उसे आश्वासन देकर मैं उठ खड़ा हुआ। नगर में प्रविष्ट होते ही लोगों के मुख से यह सुनकर

"I am a dwija, Vaishya by caste, and following the path of the heretics, I deviate from my proper path or faith. My ancestors followed the path laid down by the Vedas and the smritis. But I, an unlucky creature, had to follow this unrighteous path of this nature as if it were that of righteousness, where the dress is condemnable, which is the abode of excessive suffering, the fruit whereof is hell even after death owing to one's having constantly to listen to the blasphemy against the Gods—Vishnu, Shiva and Bramha etc. which is rewarded with no fruit and which is almost a deception."

Thus, with a full realization of my improper course of action, I freely give vent to my tears, having come to this solitary clumps of Ashoka trees." Moved to pity on hearing his account, I said to him—"Dear, be patient and wait for some time here. Meanwhile I shall try that the courtesan herself will restore your wealth to you.

चोपलभ्य लोकवादाल्लुब्धसमृद्धपूर्णं पुरमित्यर्थानां नश्वरत्वं च प्रदर्श्य प्रकृति स्थानमून्विधास्यन्कर्णीसुतप्रहिते पथि मतिमकरवम् ।

अनुप्रविश्य च द्यूतसभामक्षधूर्तैः समगंसि । तेषां च पञ्चविंशति प्रकारासु सर्वासु द्युताश्रयासु कलासु कौशलमक्षभूमिहस्तादिषु चात्यन्तदुरुप लक्ष्याणि कूटकर्माणि तन्मूलानि सावलेपान्यधिक्षेपवचनानि जीवितनिरपेक्षाणि संरम्भविचेष्टितानि सभिकप्रत्ययव्यवहारान् न्यायबलप्रतापप्रायानङ्गीकृतार्थं साधन क्षमान् बलिषु सान्त्वनानि दुर्बलेषुभर्त्सितानि पक्षरचनानैपुण मुच्चावचानि प्रलोभनानि ग्लहप्रभेदवर्णनानि द्रव्यसंविभागौदार्यमन्तराऽन्तराऽश्लील प्रायान्कलकलानित्येतानि चान्यानि चानुभवन्नतृप्तिमध्यगच्छम् । अहसं च किंचित्प्रमाददत्तशारे क्वचित्कितवे । प्रतिकितवस्तु निर्दहन्निव क्रोधताम्रया दृशा मामभिवीक्ष्य— शिक्षयसि रे ! द्यूतवर्त्म हासव्याजेन । आस्तामयमशिक्षितो वराकः । त्वयैवतावद्विचक्षणेन देविष्यामि' इति द्यूताध्यक्षानुमत्याव्यत्यषजत् ।

कि यह नगर कृपणों और धनिकों से परिपूर्ण है, धनिकों के सामने धन की नश्वरता प्रदर्शित कर तथा उन्हें प्रकृतिस्थ बनाते हुए मैंने कर्णीसुत सुत (चोरी विषयक विद्या के प्रवर्तक) द्वारा प्रवर्तित मार्ग में ध्यान लगाया ।

फिर द्यूत सभा में प्रविष्ट होकर मैं अक्ष धूर्तों (पाश निपुणों) से मिला । वहाँ जाकर मैंने उनके द्यूताश्रित पच्चीस प्रकार के कला कौशल को देखा । उनकी चाल को समझ पाना सर्वथा कठिन था । उनके कपटपूर्ण कार्य और उन कपटपूर्ण कार्यों के मूल, व्यर्थ के तानों से भरे हुए उनके वचन, जीवन निरपेक्ष उनके उद्दण्डतापूर्ण कार्य, सैनिकों (द्यूतकर्म दक्षों) के विश्वासपूर्ण व्यवहार, लोक व्यवहार, युक्ति और उसके वल (शक्ति) का प्रयोग एवं प्रताप सम्पन्नता, स्वीकृत अर्थ साधन में उनका सामर्थ्य, बलवानों को सान्त्वना देना, दुर्बलों को फटकारना, अपना पक्ष तैयार करने में निपुणता, ऊँचे-नीचे प्रलोभन, चौसर (द्यूत) के प्रभेदों का वर्णन, धन के बँटवारे में उदारता, बीच

There are means of that sort." Thus consoling him I rose and started towards the city. Just as I entered the city I came to know from the general talk of the people that that city abounded in greedy (or rogues) and wealthy people, and wishing to restore them to their primitive natures by proving to them the transitoriness of wealth, I resolved to take to the path laid down by Karnisuta (i.e. to thieving).

I then entered the gambling house and joined the company of the gamesters. As I observed their skill in all the twenty five sorts of arts connected with gambling ; their tricks, exceedingly difficult to notice, in cogging a die on the dice-board or shifting a piece, and the consequent abusive words uttered with vanity, and their desperate acts regardless of life ; the tran-

मयाजितश्चासौ षोडशसहस्राणि दीनाराणाम् । तदर्धम् सभिकाय सभ्येभ्यश्च दत्त्वाऽर्धं स्वीकृत्योदतिष्ठम् । उदतिष्ठंश्च तत्रगतानां हर्षगर्भाः प्रशंसालापाः ।

प्रार्थयमानसभिकानुरोधाच्च तदगारेऽत्युदारमभ्यवहारविधिमकरवम् ।

बीच में अश्लीलता से भरे हुए कोलाहलों आदि का तथा अन्य बातों का अनुभव करते हुए मैंने तृप्ति नहीं प्राप्त की। किसी द्यूत में किसी खिलाड़ी द्वारा प्रमादपूर्वक पाशे फेंकने पर मैं हँस पड़ा। (यह देखकर) प्रतिपक्षी ने क्रोध से ताम्बे की भाँति लाल बनी हुई आँखों में मुझे घूर कर कहा—"अरे! क्या तुम हँसी के बहाने से "मुझे द्यूत का मार्ग सिखा रहे हो?" इस गरीब को अकेला ही रहने दो अथवा इसे यूँ ही अशिक्षित एवं मौन बना रहने दो। तब मैं तुम्हारे जैसे चतुर खिलाड़ी के साथ जूआ खेलूँगा, यह कहकर द्यूताध्यक्ष की अनुमति से वह मेरे साथ खेलने लगा।

मैंने उससे सोलह हजार दीनार जीत लिए। उस धन में से आधा प्रधान द्यूतकर्माध्यक्ष को तथा वहाँ उपस्थित अन्य जनों को देकर, शेष आधा स्वयं स्वीकार कर (लेकर) मैं उठ खड़ा हुआ। उसी समय वहाँ उपस्थित व्यक्तियों का मेरी प्रशंसा से युक्त हर्ष-पूर्ण आलाप उठ खड़ा हुआ अर्थात् वहाँ उपस्थित व्यक्ति हर्ष पूर्ण स्वर में मेरी प्रशंसा करने लगे।

प्रार्थना किए जाने पर तथा मुख्य द्यूतकर्माध्यक्ष के अनुरोध पर मैंने

---

saction begun with the knowledge of their president, consisting chiefly in the employment of argument, force and valour, and capable of enforcing payment, their power to wheedle the resolute and bully the timid; their dexterity in making partisans; the various proffering of tempting advantages; the discriptions of different ways of betting, their generosity in the distribution of the money gained, their clamours at intervals, mostly consisting of indecent talk, and such other things; I derived no satisfaction, and I happened to laugh at a gamester who made a blunder in moving a piece. His rival, burning as it were with his eyes inflamed with anger, looked at me and said—"Ah! Dare you teach us the way to play, under the pretext of laughter? let the poor fellow alone, he is but a novice. With you then, who are such an expert in the art, I will gamble." With these words he joined with me in play with the consent of the president i. e. the chief gambler.

Very soon I won from him sixteen thousand Dinars; half of this I gave to the chief gambler and the assembly, and with the other half I rose to go. And then there rose up expressions of my praise, full of joy, from the people assembled there.

According to the request and pressure of the chief gambler

यन्मूलश्च मे दुरोदरावतारः स मे विमर्दको नाम विश्वास्यतरं द्वितीयं हृदयमासीत् ।

तन्मुखेन च सारतः कर्मतः शीलतश्च सकलमेव नगरमवधार्य धूर्जटिकण्ठ कल्माषकालतमे तमसि, नीलनिवसनार्धोरुकपरिहितो बद्धतीक्ष्णकौक्षेयकः फणीमुख-काकली-संदंशक पुरुषशीर्षक योगचूर्ण योगवर्तिका-मानसूत्र-कर्कटक रज्जु-दीपभाजन भ्रमरकरण्डक प्रभृत्यनेकोपकरणयुक्तो गत्वा कस्यचिल्लुब्धेश्वरस्य गृहे संधिं छित्त्वा पटभाससूक्ष्मच्छिद्रालक्षितान्तर्गृहप्रवृत्तिरव्यथो निजगृहमिवानुप्रविश्य नीवीं सारमहतीमादाय निरगाम् ।

उसके आवास पर जाकर रुचिपूर्ण भोजन किया। वह विमर्दक नाम वाला व्यक्ति जिसके कारण मैं द्यूत में प्रवृत्त हुआ था, मेरा अतीव विश्वास पात्र, दूसरे शब्दों में मानो मेरा दूसरा हृदय ही बन गया।

उसी के मुख से नगरवासियों के धन, कर्म और शील के सम्बन्ध में सब कुछ जानकर, भगवान् शङ्कर के कण्ठ की कालिमा के समान अतीवश्यामल अन्धकार में नील वस्त्र के अवगुण्ठन (बुर्के) में स्वयं को ढाँप कर तथा तीखी तलवार बाँध कर एवं फणीमुख (सुरङ्ग बनाने का तेज साधन) सब्बल, सीटी, संडसी, काष्ठ निर्मित मानवसिर, योगचूर्ण (धन का ज्ञान कराने वाली औषध) योगवर्तिका (यौगिक-बत्ती=उपायाञ्जन), मानसूत्र=प्रमाणरज्जु (मार्ग नापने की अथवा ऊपर चढ़ने की रस्सी), दीपपात्र, भ्रमर करण्डक (गुगरैला-पात्र) (दीप निर्वापण शलभ भाण्ड), आदि आदि अनेकानेक उपकरणों से युक्त होकर किसी कृपणराज के घर जाकर, साँध फोड़कर, देखने के साधन विशेष से सूक्ष्म छिद्र द्वारा घर की भीतरी दशा का अवलोकन कर, बिना किसी भय के अपने घर की ही भाँति उसमें प्रविष्ट होकर, धन से भरी हुई उसकी गाँठ (बहुमूल्य वस्तुओं से भरे हुए उसके बटुए) को हथिया कर निकल गया।

I went to his house and had a delicious meal there. He, Vimardaka by name on whose account I descended in to the field of gambling became my most trustworthy second heart (as it were).

By him I came to know every thing about the towns men as regards their wealth, dealing and their behaviour, and on a night extremly dark like the throat of lord Shiva, putting on a black veil, with a sharp sword and equipped with such implements as a scoop, a whistle, tongs, a sham head, magic powder, a magic wick, a measuring thread, a wrench, a rope, a lamp-case and a beetle in a box, I went to the house of a miser person. Making a breach in his house after finding out the state of things, inside through the small hole of a lattice window, I entered it without any fear, as if it were my own house, took his purse valuable on account of its costly contents and departed.

नीलनीरदनिकरपीवरतमोनिबिड़ितायां राजवीथ्यां झटिति शतह्रदा संपातमिव क्षणमालोकमलक्षयम्। अथासौ नगरदेवतेव नगरमोषरोषिता निस्संबाधवेलायां निःसृता संनिकृष्टा काचिदुन्मिषद्भूषणा युवतिराविरासीत्।

'कासि वासु, क्व यासि' इतिसदयमुक्ता त्रासगद्गदमगादीत्—"आर्य, पुर्यस्यामार्यवर्यः कुबेरदत्तनामा वसति। अस्म्यहं तस्य कन्या। मां जातमात्रां धनमित्रनाम्नेऽत्रत्यायैव कस्मैचिदिभ्यकुमारायान्वजानाद्भार्यां मे पिता।

स पुनरस्मिन्नत्युदारतया पित्रोरन्ते वित्तैर्निजैः क्रीत्वेवार्थिवर्गाद्दारिद्र्यं दरिद्रति सति अथोदारक इति च प्रीतलोकाधिरोपितापरश्लाघ्यनामनि बरयत्येव तस्मिन्मांतरुणीभूतामधन इत्यदत्त्वार्थपतिनाम्ने कस्मैचिदितरस्मै यथार्थनाम्ने सार्थवाहाय दित्सति मे पिता।

नीले बादलों के समूह के समान स्थूल (गहन) अन्धकार से परिपूर्ण राज मार्ग पर शीघ्र ही सैकड़ों बिजलियों की चमक (पात) के समान प्रकाश मुझे दिखाई पड़ा। यह प्रकाश और कुछ नहीं, नगर में होने वाली चोरियों से रुष्ट नगर देवता ही हैं, इस प्रकार जब मैं सोच ही रहा था, तभी एक तरुणी मेरे सामने आ खड़ी हुई। उसने चमकीले आभूषण धारण कर रखे थे। वह ऐसी जान पड़ती थी मानो नगर की अधिष्ठातृ देवी हो और नगर में हुई चोरियों से नाराज होकर इस निःसंकट (एकान्त प्रहर) काल में मुझ से मुठभेड़ करने के लिए आई हो।

देवी! तुम कौन हो? कहाँ जा रही हो? इस प्रकार मेरे द्वारा कृपापूर्वक पूछे जाने पर उसने भय विह्वल होकर कहा—"आर्य! इस नगरी में कुबेरदत्त नामक वैश्यवर्य रहते हैं। मैं उनकी कन्या हूँ। मेरे जन्म के साथ ही मेरे पिता ने यहीं के निवासी किसी धनमित्र नामक एक धनिक के पुत्र के साथ मेरा वाग्दान कर दिया था।

परन्तु अब वह अपने माता-पिता के देहान्त के पश्चात् अपनी अत्यन्त

On the main road covered with dense darkness thick like a mass of dark clouds I saw for a moment a flash of light like the fall of hundreds of lightnings, and just then there stood before me a young damsel, with glittering ornaments, as though she were the presiding goddess of the city, coming to encounter me at a time when the streets were devoid of crowds, angered at the theft committed in the city.

"Damsel, who are you? where are you going?" Thus compassionately asked by me, she replied in words faltering through fear—"Sir, an eminent merchant lives in this city, named Kuberdatta. I am his daughter. My father betrothed me as soon as I was born to Dhanamitra, the son of a rich person of this very city.

तदमङ्गलमद्य किल प्रभाते भावीति ज्ञात्वा, प्रागेव प्रियतमदत्तसंकेता वंचितस्वजना निर्गत्य बाल्याभ्यस्तेनवर्त्मना मन्मथाभिसरा तदगारमभिसरामि, तन्मां मुञ्च ।"गृहाणैतद्भाण्डं" इत्युन्मुच्य मह्यमर्पितवती । दयमानश्चाहमब्रवम् —'एहि साध्वि, त्वां नयेयं त्वत्प्रियावसथम्' इति त्रिचतुराणि पदान्युदचलम् । आपतच्च दीपिकालोकपरिलुप्यमानतिमिरभारं, यष्टि-कृपाण-पाणि, नागरिकवल मनल्पम् ।

उदारता के कारण अर्थियों (याचकों) से मानो दरिद्रता खरीदकर दरिद्र हो रहा है तथा इस समय अनुगृहीत संसार से 'उदारक' यह श्लाध्य नाम प्राप्त कर चुका है। उसे, यह निर्धन है यह देखकर, तरुणी हुई मुझे उसे न देकर (अर्थात् मेरा विवाह उसके साथ न करके) अर्थपति नामक किसी अन्य यथार्थ नामा वैश्य को मेरे पिता मुझे देने की इच्छा कर रहे हैं।

उस अर्थपति को मेरा समर्पण विषयक अमङ्गल आज प्रातः ही होने वाला है, यह जानकर, अपने प्रियतम धनमित्र द्वारा पहले ही से संकेत पाकर अपने स्वजनों को छोड़कर, घर से निकलकर, बाल्यावस्था से अभ्यस्त मार्ग द्वारा, कामदेव ही सहायक है जिसका वह (ऐसी) मैं उसके घर जा रही हूँ, अतः मुझे छोड़ दो, (और अपने मार्ग पर जाने दो)।

'यह आभूषणों का पात्र स्वीकार करो' यह कहकर उसने वह पात्र उतार कर मुझे दे दिया। दयार्द्र होकर मैंने उससे कहा साध्वी! आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे प्रियतम के घर ले चलता हूँ। यह कहकर मैं तीन, चार कदम चला।

But now he has grown poor, having purchased, as it were, with his wealth, upon the death of his parents, owing to extreme liberality, the condition of a pauper from his supplicants. Now although he has thus gained from the gratified world the laudable epithet of 'udaraka' and has offered to marry me now grown up, my father refuses to give me in marriage to him as being now destitute, and wishes to marry me to another rich man named Arthapati, who, true to his name, is a man of great opulence.

Knowing that that inauspicious event (my marriage) is sure to come off today at down, I agreeably to an appointment already made with my beloved, have started, having eluded my relations, and am going, under the guidance of God of passion (i.e. Kama Deva) to my lovers house, by this way, which is familiar to me from my childhood. So, please let me go.

"Take this treasure of ornaments so," saying she took them off (or the box of ornaments) and handed over those ornaments to me. But pitying her, I said—"come O virtuous maiden! I

दृष्ट्वैव प्रवेपमानां कन्यकामवदम्—'भद्रे ! माभैषीः । अस्त्ययमसि द्वितीयो मे बाहुः । अपितु मृदुरयमुपायस्त्वदपेक्षया चिन्तितः । शयेऽहं भावितविषवेगविक्रियः । त्वयाऽप्यमीवाच्याः—'निशि वयमिमां पुरीं प्रविष्टाः । दष्टश्च ममैषनायको दर्वीकरेणामुष्मिन्सभागृहकोणे । यदि वः कश्चिन्मंत्रवित्कृपालुः स एनमुज्जीवयन्मम प्राणानाहरेदनाथायाः' इति ।

साऽपिबाला गत्यन्तराभावाद् भयगद्गद्स्वरा बाष्पदुर्दिनाक्षी बद्धवेपथुः कथं कथमपि गत्वा मदुक्तमन्वतिष्ठत् । अशयिषि चाहं भावितविषविक्रियः ।

इसी समय मशाल धारी, तिमिर भार को अपसारित करती हुई, हाथ में लाठी और कृपाण लिए हुए नगर रक्षकों की एक बड़ी टुकड़ी वहाँ आ पहुँची ।

उन्हें देखते ही भय से काँपती हुई उस कन्या से मैंने कहा, भद्रे ! मत डरो । यह तलवार तथा दूसरी मेरी भुजा (तुम्हारे संरक्षण के लिए प्रस्तुत है) । फिर भी तुम्हारे कारण (तुम्हारे अनुरोध से) यह कोमल सा उपाय मैंने सोचा है । विष के वेग से आक्रान्त निश्चेष्ट व्यक्ति की भाँति मैं भूमि पर लेट जाता हूँ । तुम्हें भी इनसे (इस प्रकार) कहना चाहिए कि—"आज ही रात्रि में हम इस नगरी में प्रविष्ट हुए थे और इस सभागृह के कोने पर मेरे इन स्वामी को साँप ने डस लिया है । यदि आप में से कोई मन्त्रों को जानने वाला और कृपालु हो तो वह मेरे स्वामी के प्राणों को लौटाकर मुझ अनाथ को प्राण दान दे ।"

वह बाला भी अन्य उपाय के अभाव में भय से गद्गद् स्वर में, नेत्रों में जल भरकर, किसी प्रकार उनके पास जाकर मेरे कहे हुए को पूरा कर पाई । इधर विष के विकार को प्रकटाता हुआ मैं भूमि पर लेट (सो) गया ।

---

will lead you to the house of your lover", and proceeded a few steps, when there came a large force of the city watch who dispelled the mass of darkness by the light of the torches (i.e. mashals).

I said to the maiden who trembled with fear at their very sight—"Fear not, gentle damsel, here is my sword and second is my arm to protect you. But for your sake I have thought of this gentle plan. I will lie down, affecting to be overcome by the pangs of poison, you also tell these people thus—"we entered the city this night.

This my husband was bitten by a snake in a corner of that public-stall. If anyone among you knows the charm (a mantra that removes-poison) and feels compassion for me, he should kindly give life to a helpless woman by restoring him to life."

That maiden having no alternative, with her voice faltering through fear, and her eyes overflooded with tears, trembling somehow went up to them and did as I suggested her. I also lay down, showing as if I was affected by the virulence of the poison.

तेषुकश्चिन्नरेन्द्राभिमानी मां निर्वर्ण्य मुद्रातन्त्रमन्त्रध्यानादिभिश्चोप क्रम्याकृतार्थः 'गत एवायं काल दष्टः। तथा हि स्तब्धश्यावमङ्गम्, रुद्धादृष्टिः, शान्त एवोष्मा। शुचाऽलं वासु, श्वोऽग्निसात्करिष्यामः। कोऽति वर्तते दैवम्' इति सहेतरैः प्रायात्।

उत्थितश्चाहमुदारकाय तां नीत्वाऽब्रवम्—'अहमस्मि कोऽपि तस्करः। त्वद्-गतेनैव चेतसा सहायभूतेन त्वामिमामभिसरन्तीमन्तरोपलभ्य कृपया त्वत् समीपमनैषम्। भूषणमिदमस्याः' इत्यंशुपटलपाटितध्वान्तजालं तदप्यर्पितवान्।

उदारकस्तु तदादाय सलज्जं च सहर्षं च ससंभ्रमं च मामभाषत—"आर्य,

उनमें से कोई विषवैद्यत्व का अभिमान रखने वाला, मुझे भली भाँति देखकर तथा मुद्रा, तन्त्र, मन्त्र, ध्यान आदि द्वारा मेरी चिकित्सा कर और उसमें असफल होकर—"यह तो सर्पदंष्ट से काल कवलित हो चुका है।" (इस प्रकार कहकर बताने लगा) इसका शरीर जड़ीभूत जौर श्यामल हो गया है, दृष्टि रुँध गई है, शारीरिक उष्णता शान्त सी ही है (श्वास शीतल हो गए हैं)। अतः भद्रे! अब अधिक सोच (चिन्ता) मत करो। कल हम लोग इसका दाह संस्कार कर देंगे। दैव का अति क्रमण कौन कर सकता है? ऐसा कहकर वह दूसरे व्यक्तियों के साथ चला गया।

इसके पश्चात् मैं उठकर उदारक के लिए उस बाला को ले जाकर, उससे बोला—'मैं (कोई) एक चोर हूँ। तुम्हारे में बद्ध चित्त वाली तथा तुम्हारी ओर स्वयं अभिसरण करती हुई इस बाला को मार्ग में असहाय पाकर, मैं कृपापूर्वक सहायक बनकर इसे तुम्हारे पास ले आया हूँ। ये इसके गहने हैं। इस प्रकार अपनी रश्मियों से अन्धकार पटल का नाश कर देने वाले वे आभूषण मैंने उस धनमित्र (उदारक) को सौंप दिए।

उदारक उसे (उन गहनों के पात्र को) लेकर लज्जा, हर्ष और उद्वेग के साथ

One of them, who prided himself on his being a poison—doctor, carefully surveyed me, and after treating me with a talisman, mystical formularies, charms and mental efforts, without success, declared—"Gone indeed, is he, bitten by the deadly serpent, for his body is stiff and dark-blue, his eye sight is steadied and his warm breath stopped. Enough of grieving, O maiden, we shall consign the body to fire tomorrow. Who can transgress fate?" So saying, he departed with his comrades.

I rose up, and having taken her to Udarka I addressed him thus—"I am a certain thief, encountering on my way this maiden coming to you with no other companion than her heart set on you, I have attended her through compassion hither, here are her ornaments." so saying, I also handed over to him those ornaments, which pierced the mass of darkness by their numerous rays.

त्वयैवेयमस्यां निशि प्रिया मे दत्ता। वाक्पुनर्ममापहृता। तथा हि न जाने वक्तुम्। त्वत्कर्मैतदद्भुतमिति। इदं ननु ते स्वशीलमद्भुतवत्प्रतिभाति।

नैवमन्येनापि कृतपूर्वमिति प्रतिनियतैव वस्तुशक्तिः। न हि त्वय्यन्यदीया लोभादयः। त्वयाद्य साधुतोन्मीलितेति तत्प्रायस्त्वत्पूर्वावदानेभ्यो न रोचते। दृष्टमिदानीमौदार्यस्य स्वरूपमिति। त्वदाशयमननुमान्य न युक्तो निश्चय:।

त्वयाऽमुना सुकृतेन क्रीतोऽयं दासजन इत्यसारमतिगरीयसा क्रीणासीति स ते प्रज्ञाधिक्षेपः। प्रियादानस्य प्रतिदानमिदं शरीरमिति तदलाभे निधनोन्मुखमिदमपि त्वयैव दत्तम्।

मुझ से बोला—'आर्य, तुम्हीं ने इस रात में यह मेरी प्रिया मुझे दी है। परन्तु मेरी वाणी का अपहरण कर लिया है। इसीलिए मैं कुछ कह पाने में समर्थ नहीं हो पा रहा हूँ। तुम्हारा यह कर्म निश्चय ही अद्भुत है। निश्चय ही तुम्हारा यह मेरी प्रियतमा तथा उसके गहनों का समर्पण विषयक शील (व्यवहार) मुझे अद्भुत सा लग रहा है।

यदि मैं यह कहूँ कि ऐसा कर्म किसी अन्य ने आज से पूर्व कभी नहीं किया और वस्तुओं की शक्ति प्रत्येक में पृथक् पृथक् ही नियत है (तो अन्यथा न होगा)। दूसरे लोगों में पाए जाने वाले लोभादिक विकार तुम्हारे भीतर नहीं हैं। तुमने आज जिस साधु जनोचित व्यवहार का परिचय दिया है, वह तुम्हारे पूर्व कालिक कृत्यों से मेल नहीं खाता। आज उदारता का स्वरूप मैंने देख लिया है। तुम्हारा आशय बिना जाने किसी प्रकार के निश्चय पर पहुँचना उचित भी नहीं है।

यह कहना कि तुमने अपने इस अच्छे कार्य से इस दास को खरीद लिया है, ऐसा ही होगा जैसे किसी अतीव मूल्यवान के लिए असार वस्तु को खरीदना

Udarka too, took them up, and with shame, joy and excitment said—'Respected sir, you have given my beloved this night, but again have deprived me of speech. For I do not know what to say. Your act is really wonderful your character, indeed, appears to be something marvellous.

If I were to say that this has never been done by any other (thief) before, (then it might be urged against me) that the power of things is fixed in each individually : for avarice and such other qualities which are found in others are absent in you. (If I were to say), that today you have clearly displayed what saintly character is, it would not agree with your previous virtuous acts mostly of such nature, also (if I were to say) that today is seen what the real nature of nobility of mind is, it will not be reasonable to arrive at such a decision without having consulted your opinion.

To say that you have bought this slave by this good act, would be an insult to your high mental faculties as it

अथवैतावदत्र प्राप्तरूपम् । अद्यप्रभृति भर्तव्योऽयं दासजनः' इति मम पादयोरपतत् । उत्थाप्य चैनमुरसोपश्लिष्याभाषिषि—'भद्र, काद्य ते प्रतिपत्तिः' इति ।

सोऽभ्यधत्त—'नशक्नोमि चैनामत्र पित्रोरनभ्यनुज्ञयोपयम्य जीवितुम् । अतोऽस्यामेव यामिन्यां देशमिमं जिहासामि । कोवाऽहम्, यथात्वमाज्ञापयसि' इति ।

अथ मयोक्तम्—'अस्त्येतत् । स्वदेशो देशान्तरमिति नेयं गणना विदग्धस्य पुरुषस्य । किंतु बालेयमनल्पसौकुमार्या, कष्टाः प्रत्यवायभूयिष्ठाश्च कान्तार पथाः ।

और वह तुम्हारी बुद्धि पर प्रहार (बुद्धि की निन्दा) होगा । यदि मैं यह कहूँ कि प्रिया दान के प्रतिदान में मैं अपना शरीर तुम्हें समर्पित करता हूँ (तो यह भी संगत न होगा क्योंकि) मेरा शरीर भी उस (प्रिया) के प्राप्त न होने की दशा में बिनाशोन्मुख ही होता, अतः यह भी तुम्हारा ही दिया हुआ है ।

अथवा इस अवसर पर मेरे लिए यही कहना उपयुक्त होगा कि आज से अपने इस दास का पूरा भार आप पर ही होगा । यह कहकर वह मेरे पाँवों पर गिर पड़ा । मैंने उसे उठाकर, हृदय से लगाया और उससे पूछा कि—'भद्र ! आज से तुम्हारा क्या कर्तव्य होगा अथवा आज से तुम्हारा क्या करने का, किस प्रकार के आचरण को अपनाने का विचार है ?

उसने उत्तर दिया—'बिना इसके माता-पिता की अनुमति के इसके साथ विवाह करके यहाँ निरापद रहने में मैं समर्थ नहीं हो सकूँगा । अतः आज ही रात में मैं इस देश को छोड़ दूंगा । अथवा यह निर्णय लेने वाला मैं कौन हूँ ? जैसी तुम्हारी आज्ञा होगी मैं वही करूँगा ।

यह सुनकर मैंने कहा—"यह बात तो सही है । चतुर पुरुष यह स्वदेश है, यह

---

would amount to saying that you bought a worthless thing for an extremely valuable one. If I were to say that I offer my body to you as a return-gift for your gift of my beloved to me (it would not also be reasonable for) my body is virtually a gift from you, as it would have perished had I not obtained my beloved. Or this much will be proper for me to say on this occasion "From today, this your slave, should be supported by you", saying this he fell at my feet. I raised him, embraced him and asked him what course of conduct he meant to adopt,

He replied—"I shall not be able to reside in the city with safety upon marrying the damsel without the consent (permission) of her parents. I, therefore, propose to leave the city this very night." "or rather", "he added. "who I am to decide ? I will follow your advice."

Hearing this I said—'It is as you say, staying in one's own country or going to some foreign country is no consideration

शैथिल्यमिव किंचित्प्रज्ञासत्त्वयोरनर्थेनेदृशेन देशत्यागेन संभाव्यते । तत्सहानया सुखमिहैव वस्तव्यम् । एहि । नयावैनां स्वमेवावासम्' इति । अविचारानुमतेन तेन सद्य एवैनां तद्गृहमुपनीय तयैवापसर्पभूतया तत्र मृद्भाण्डावशेषमचोरयाव ।

ततो निष्पत्य क्वचिन्मुषितकं निधाय समुच्चलन्तौ नागरिकसंपाते मार्गपार्श्वशायिनं क्वचिन्मत्तवारणमुपरिपुरुषमाकृष्याध्यारोहाव । ग्रैवेयप्रोतपाद युगलेन च मयोत्थाप्यमान एव पतिताधोरणपृथुलोरःस्थलपरिणतःपुरीतल्लतापरीतदन्तकाण्डः सरक्षिकवलमक्षिणोत् ।

विदेश, इस प्रकार की गणना नहीं किया करते । किन्तु यह बाला अतीव सुकुमारी है और वन मार्ग अनेकों कष्टों और बाधाओं से परिपूर्ण है ।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार देश-त्याग रूपी अनर्थ से बुद्धि और बल की शिथिलता की सम्भावना भी होती है । अतः इसके साथ तुम्हें यहीं सुखपूर्वक रहना चाहिए । आओ, हम इसे इसके अपने ही घर में ले जाएँ । उसने बिना कुछ विचार किए ही मेरे साथ उसे उसके घर ले जाकर, हमारी मार्गदर्शिका सी बनी हुई उसके साथ ही (उसके घर जाकर हमने) मिट्टी के बर्तनों को छोड़कर उसके घर का अन्य सब कुछ चुरा लिया ।

तब वहाँ से निकलकर तथा किसी (उपयुक्त) स्थान पर चुराई हुई वस्तुएँ रखकर जब हम आगे बढ़े तब हमारी मुठभेड़ (सहसा) नगर रक्षकों से हो गई । (तब हम) मार्ग के पास में सोए हुए मत्त हाथी के सवार को नीचे उतार (खींच) कर उस पर सवार हो गए । उसकी कण्ठ रज्जु में दोनों पाँव फँसा कर मेरे पाँव की ठोकर द्वारा उठाए जाते ही नीचे गिराए हुए महावत के विशाल वक्षस्थल पर दाँतों द्वारा तिरछा प्रहार कर उसकी आन्त्रवल्ली (आँत रूपी बेल) से युक्त अपने दाँतों से उस हाथी ने नगर रक्षकों को नष्ट कर दिया ।

---

with a man of talent. But this maiden is very tender and the paths through a wilderness are very difficult and full of obstacles.

And (again), such an abandonment of the native place bespeaks something like want of talent and spirit on one's part. You should, therefore, just live here happily with her. Com, let us conduct her to her own house". He readily assenting (without giving thought to it), we at once took her to her house, and with her serving as our guide, we stole every thing (in the house) except the earthan pots.

Going forth from that place we placed our booty some where, and then proceeding, as we encountered a party of city guards, we mounted an intoxicated elephant laying down by the road-side after having pulled down the rider. Just as he was being urged to rise by me with my feet thrust into the

अध्वंसयाव चामुनैवार्थपतिभवनम्। अपवाह्य च क्वचन जीर्णोद्याने शाखाग्राहिकयाऽवातराव। स्व गृहगतौ च स्नातौ शयनमध्यशिश्रियाव।

तावदेवोदगादुदधेरुदयाचलेन्द्रपद्मरागशृंगकल्पं कल्पद्रुमहेमपल्लवापीड-पाटलं पतंगमण्डलं। उत्थाय च धौतवक्त्रौ प्रगेतनानि मङ्गलान्यनुष्ठायास्मत्कर्म तुमुलं पुरमनुविचरन्तावशृणुव वरवधूगृहेषु कोलाहलम्।

अथार्थैरर्थपतिः कुबेरदत्तमाश्वास्य कुलपालिकाविवाहं मासावधिकम-कल्पयत्। उपह्वरे पुनरित्यशिक्षयं धनमित्रं—'उपतिष्ठ सखे एकान्त एव चर्मरत्नभस्त्रिकामिमां पुरस्कृत्याङ्गराजम्।

और फिर उसी हाथी द्वारा हमने अर्थपति के भवन को नष्ट कर दिया। इसके पश्चात् उस हाथी को चलाते हुए हम एक जीर्ण उद्यान में; एक वृक्ष की शाखा को पकड़कर उसके ऊपर से नीचे उतरे और तब अपने घर जाकर हमने स्नान और शयन किया।

उसी समय समुद्र से उदयाचलेन्द्र के पद्मराग (माणिक्य) शिखर के समान, कल्पवृक्ष के स्वर्णिम पत्तों के समूह की भाँति अनेक वर्ण वाला सूर्य का बिम्ब उदय हुआ। हम दोनों ने उठकर अपने मुंह धोए और प्रातःकालोचित माँगलिक कृत्य कर, अपने घोर कर्म (के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए) नगर में घूमते हुए वार-वधू गृहों में हमने उठते हुए महान् कोलाहल को सुना।

इसके पश्चात् अर्थपति (वर) ने धन से कुबेरदत्त को आश्वस्त कर कुल पालिका का विवाह मासावधि में तय कर लिया। एकान्त में मैंने फिर धनमित्र को इस प्रकार समझाया—'मित्र! उस उत्तम चमड़े की प्रसेविका (रत्नधारक बटुआ) अर्थात् 'भाते' को एकान्त में ही अङ्गराज के सामने रखकर (इसके

---

chain round his neck, he, striking a blow slantingly with his tusk on the broad chest of the driver that was thrown down and with his tusk encircled by his entrails, destroyed the city guards.

And by the same elephant we destroyed the house of Arthapati. Driving him on we alighted in an old grove (park) by catching hold of the branches of a tree. Then going to our house we took a bath and lay down on bed.

Just then rose up from the ocean the orb of the Sun, looking almost like a ruby peak of the rising mountain, and red like a wreath of the golden sprouts of the desire-fulfilling trees. We got up, washed our faces, and after performing the customary rites of the morning, walked about the town, astir on accouut of our deeds, when in the houses of the bride and the bridegroom, we heard a great clamour.

Arthapati satisfied Kuberdatta with a gift of riches, and arranged to have the marriage of kulapalika by the end of the

आचक्ष्व च—'जानात्येव देवो नैककोटिसारस्य वसुमित्रस्य मां धनमित्रं नामैकपुत्रम् । सोऽहं मूलहरत्वमेत्यार्थिवर्गादस्म्यवज्ञातः ।

मदर्थमेव संवर्धितायाँ कुलपालिकायां मद्दारिद्र्यदोषात्पुनःकुबेरदत्तेन दुहितर्यर्थपतये दित्सितायामुद्वेगादुज्झितुमसूनुपनगरभवं जरद्वनमवगाह्य कण्ठ-न्यस्तशस्त्रिकः केनापिजटाधरेण निवार्यैवमुक्तः—"किं ते साहसस्य मूलम्" इति ।

मयोक्तं—'अवज्ञा सोदर्यं दारिद्र्यम्' इति । स पुनरेवं कृपालुरन्वग्रहीत्—'तात, मूढोऽसि । नान्यत्पापिष्ठतममात्मत्यागात् । आत्मानमात्मनाऽनवसाद्यै-वोद्धरन्ति सन्तः । सन्त्युपाया धनार्जनस्यबह्वः, नैकोऽपि च्छिन्नकण्ठप्रतिसंधान पूर्वस्य प्राणलाभस्य ।'

संदर्भ में) उनसे इस प्रकार कहना । देव ! आप यह जानते ही हैं कि मैं अनेक कोटि द्रव्य के स्वामी वसुमित्र का एकमात्र पुत्र धनमित्र हूँ । अनेकानेक अर्थियों के कारण अपने मूल (पैत्रिक) धन को खोकर, इस तिरस्कृत दशा में आ पहुँचा हूँ ।

फिर मेरे लिए ही संवर्धित अपनी कन्या को, मेरी दरिद्रता के दोष से कुबेरदत्त अर्थपति को देना चाहता है, यह जानकर एक दिन मैं नगर के पास विद्यमान एक पुराने वन में अपने प्राण दे देने की इच्छा से प्रविष्ट हुआ । वहाँ पहुँचकर जैसे ही मैंने अपने कण्ठ पर तलवार रखी, किसी जटाधारी साधु ने मुझे रोककर कहा—"तुम्हारे इस साहस का क्या मूल कारण है ।"

मैंने कहा—'अवज्ञा का बन्धुवत् दारिद्र्य (ही इसका मूल कारण है)। उस कृपालु ने पुनः इस प्रकार मुझ पर अनुग्रह किया—"तात ! तुम मूर्ख हो । आत्मघात से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है । सज्जन (बुद्धिमान) लोग अपने निजी प्रयत्न से ही बिना अपना नाश किए ऊपर उठते हैं (अपनी स्थिति को सुधारते हैं) । धन कमाने के बहुत-से उपाय हैं परन्तु कटे हुए मस्तक को जोड़-कर प्राण-लाभ (जीवन प्राप्त) करने का कोई भी दूसरा उपाय नहीं है ।

---

month. Then I instructed Dhanamitra in secret thus—"Friend, wait upon the king of the Angas with special refrence to this Jewel of a leather-bag just in private, and say—"your Majesty knows that I am Dhanamitra, the only son of Vasumitra, whose wealth consisted of many crores. Having lost all my paternal wealth on account of a number of supplicants, I came to be despised by men.

Now, due to the fault of my poverty, Kuberdatta wished to give to Arthapati his daughter Kulapalika, who was brought up for my sake only, I, in grief entered an old grove situated near the city, wishing to give up my life, but when about to place the scimitar on my throat, I was prevented by an ascetic and thus asked—'what is the reason of this desperate act ?'

I replied—'poverty, the sister of contempt. Then he, the compassionate one, thus favoured me—"My son, you are

किमनेन । सोऽस्म्यहं मन्त्रसिद्धः साधितेयं लक्षग्राहिणी चर्मरत्नभस्त्रिका। चिरमहमस्याःप्रसादात्कामरूपेषु कामप्रदः प्रजानामवात्सम् । मत्सरिण्यां जरसि भूमिस्वर्गमात्रोद्देशेप्रवेक्ष्यन्नागतः । तामिमां प्रतिगृहाण ।

मदन्यत्र चेयं वणिग्भ्यो वारमुख्याभ्यो वा दुग्धे इति हि तद्गता प्रतीतिः। किं तु यत्सकाशादन्यायापहृतं तत्तस्मै प्रत्यर्पणीयम् । न्यायार्जितं तु देव ब्राह्मणेभ्यस्त्याज्यम् । अथेयं देवतेव शुचौ देशे निवेश्यार्च्यमाना प्रातः प्रातः सुवर्णपूर्णैव दृश्यते ।

इससे (इस प्रकार आत्मघात विषयक प्रयास से) क्या लाभ ? मैं मन्त्र सिद्ध हूँ। मैंने यह चमड़े का बटुआ (भाता) जो कि एक लाख मुद्राएँ देने में समर्थ है साधित किया है। चिरकाल तक मैं इसकी सहायता से लोगों की इच्छा पूर्ति करता हुआ 'कामरूप' में रहा हूँ। मत्सर (डाह) पैदा करने वाली वृद्धावस्था में मैं इस स्थान पर भूमि—स्वर्ग में प्रविष्ट होने की इच्छा से आया हूँ। अतः अब तुम इस चमड़े के बटुए को ग्रहण करो।

मेरे अतिरिक्त यह केवल व्यापारियों अथवा प्रमुख वेश्याओं को ही धन देता है, यही इसके सम्वन्ध में मेरा अनुभव है। किन्तु जिसके पास से अन्याय पूर्वक कुछ अपहृत किया गया हो वह उसे पहले लौटा देना चाहिए और जो कुछ भी न्यायार्जित (धन) हो वह देवताओं और ब्राह्मणों के लिए दे देना चाहिए। इसके पश्चात् इसे देवता की तरह पवित्र स्थान पर रखकर पूजन करने पर यह प्रातःकाल के समय स्वर्ण से पूर्ण दिखाई देता है।

---

foolish ; no sin is more heinous than suicide. The good raise themselves (improve their position) by personal efforts, without destroying themselves. There are many ways of recovering lost wealth or earning wealth, but none to regain life that would depend on the re-joining of a throat that is cut off.

But why go on thus ? I am perfect in the power of spells ; this leather bag is endowed with magical power so as to grant a lac of coins. I lived for a long time in Kamarupa, fulfilling the desires of the people there through its favour. Being exposed to jealousy in my old age, I came to this place wishing to enter a heaven on earth. So take this bag of that virtue.

Excepting me, it yields treasures only to merchants or the best of courtesans, such is the experience about it. But one must first restore to a person whatever one might have dishonestly got from him, and must also give away to Brahmanas and Gods whatever is gained by just means. After this, being worshipped daily after being placed like an idol in a pure place it will be found to be filled with gold every morning.

स एष कल्पः' इति वद्धाञ्जलये मह्यमेनां दत्त्वा किमपि ग्रावच्छिद्रं प्राविशत् । इयं च रत्नभूता चर्मभस्त्रिका देवायानिवेद्य नोपजीव्येत्यानीता । परंतु देवः प्रमाणम्' इति । राजा च नियतमेव वक्ष्यति—'भद्र ! प्रीतोऽस्मि । गच्छ, यथेष्टमिमामुपभुङ्क्ष्व' इति । भूयश्च ब्रूहि—'यथा न कश्चिदेनां मुष्णाति तथाऽनुगृह्यताय्' इति । तदप्यवश्यमसावभ्युपैष्यति । ततः स्वगृहमेत्य यथोक्त-मर्थत्यागं कृत्वा दिने दिने वरिवस्यमानां स्तेयलब्धैरर्थैर्नक्तमापूर्य प्राह्णे लोकाय दर्शयिष्यसि । ततः कुबेरदत्तस्तृणायमत्वाऽर्थपतिमर्थलुब्धः कन्यकया स्वयमेव त्वामुपस्थास्यति । अथ कुपितोऽर्थपतिर्व्यवहर्तुमर्थगर्वादभियोक्ष्यते । तं च भूयश्चित्रैरुपायैः कौपीनावशेषं करिष्यावः । स्वकं चौर्यमनेनैवाभ्युपायेन सुप्रच्छन्नं भविष्यति' इति । हृष्टश्च धनमित्रो यथोक्तमन्वतिष्ठत् ।

यही इसको कार्यरत करने का वर्णित ढंग है । यह कहकर, हाथ जोड़कर खड़े हुए मुझे वह रत्नभूत चर्म का बटुआ देकर वे किसी पर्वतीय गुफा में प्रविष्ट हो गए । यह सोचकर कि यह चमड़े का बटुआ जो कि वास्तव में एक बहुमूल्य रत्न ही है, बिना आपको बताए इसका उपयोग करना उचित् नहीं, मैं इसे महाराज की सेवा में ले आया हूँ । अब आगे जैसी महाराज की इच्छा हो । यह सुनकर महाराज निश्चय ही यही कहेंगे कि भद्र ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ । जाओ और यथेष्ट इसका उपभोग करो । उनसे फिर यह कहना—"जिससे कोई इसे न चुराए ऐसी कृपा कीजिए । वह ऐसा करना स्वीकार कर लेंगे । तब अपने घर पहुंचकर अपने कथनानुसार अर्थ का (धनादि का) त्याग (दान) करके, प्रतिदिन सेव्यमान इस बटुए को चोरी द्वारा प्राप्त धन से रात्रि में भरकर प्रभात में लोगों को दिखाना । (इसके पश्चात् दैनिक आवश्यकताओं के कारण रिक्त इस बटुए को रात्रि में पुनः चोरी से प्राप्त धन द्वारा भरकर प्रातः लोगों को इसे दिखाना) ।

"This is the prescribed mode for making it work" with this he gave it to me who had folded my hands before him, and himself entered a cave. Thinking that this leather bag, which is a precious gem, should not be used without informing your Majesty about it, I have brought it to you, so your Majesty should decide what is proper in this case." The king will surely say—"gentleman, I am pleased. Go, use it just as you like." Then say to him again "May I be so favoured that none can steel it away from me". This also be undoubtedly under take to do. After this, go home and according to your statement give away everything you have. Afterwards fill the bag which will be emptied by daily demands, at night with money obtained by theft and show it in the morning to the people. Then Kuberdatta, who is ever covetous of money, will esteem Arthapati as insignificant as grass, and will himself wait upon

तदहरेव मन्नियोगाद्विमर्दकोऽर्थपतिसेवाभियुक्तस्तस्योदारके वैरमभ्यवर्धयत् अर्थलुब्धश्च कुबेरदत्तो निवृत्यार्थपतेर्धनामित्रायैव तनयां सानुनयं प्रादित्सत् ! प्रत्यबध्नाच्चार्थपतिः ।

एष्वेव दिवसेषु काममञ्जर्याः स्वसा यवीयसी रागमञ्जरी नाम पञ्चवीर-गोष्ठे सगीतकमनुष्ठास्यतीति सान्द्रादरः समागमन्नागरजनः । स चाहं सह सख्या धनमित्रेण तत्र संन्यधिषि । प्रवृत्तनृत्यायां च तस्यां द्वितीयं रङ्गपीठं ममाभून्मनः-तदृष्टिविभ्रमोत्पलवनसच्चापाश्रयश्च पञ्चशरो भावरसानां सामग्रयात्समुदितबल इव मामतिमात्रमव्यथयत् । अथासौ नगरदेवतेव नगरमोषरोषिता लीलाकटाक्ष-मालाशृङ्खलाभिर्नीलोत्पलपलाशश्यामलाभिर्मामबध्नात् ।

तब कुबेरदत्त अर्थपति को तिनके के समान मानकर धन के लालच से अपनी कन्या स्वयं ही तुम्हें दे देगा। इसके बाद क्रुद्ध होकर अर्थपति धन के गर्व से तुमसे बदला लेने के लिए तुम्हारे ऊपर अभियोग लगाएगा। परन्तु हम लोग फिर से विचित्र उपायों द्वारा लङ्गोटी छोड़कर उसका सब कुछ अपहरण कर लेंगे। अपनी चोरी भी केवल इसी उपाय से छिपी रहेगी।

प्रसन्न होकर धनमित्र ने इसी प्रकार किया। उसी दिन अर्थपति की सेवा में लगे हुए विमर्दक ने मेरे निदेश पर उसका उदारक (धनमित्र) के विरुद्ध क्रोध (वैर) उभाड़ दिया। धन के लालची कुबेरदत्त ने भी अर्थपति को छोड़ कर धनमित्र को ही अनुनय पूर्वक (प्रार्थना के साथ) अपनी पुत्री दे दी। अर्थपति ने उसका विरोध किया (उसके आड़े आया या रुकावट डाली)।

इन्हीं दिनों काममञ्जरी की छोटी बहन रागमञ्जरी पञ्चवीर गोष्ठ (पञ्चवीर नामक कक्ष) में संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करेगी, यह सुनकर प्रचुर आदर के साथ अनेक नागर वहाँ आए। मैं भी अपने मित्र के साथ वहाँ उपस्थित हुआ। उसके नृत्य आरम्भ करते ही मेरा मन दूसरा रङ्गमंच बन गया। उसका दृष्टिविभ्रम (नेत्र नर्तन) ही मानो नीलकमल-वन हो और वही समीचीन धनुष रूपी आश्रय है जिसका, उस कामदेव ने विभावादि भावों और शृङ्गारादि नवरसों की सम्पूर्णता से प्राप्त बल की भाँति मुझे बहुत बुरी

---

you with his daughter. Then Arthapati, being enraged, will, through the pride of riches, try to seek redress by legal means. Him, also we will again reduce to a rag by various means. By this means our own theft also will be quite concealed."

Dhanamitra being delighted, did exactly as he was adviced by me. That very day Vimardaka, who had taken service under Arthapati, at my direction excited his enmity against Udaraka (Dhanamitra). The avaricious Kuberdatta giving up Arthapati, earnestly wished to give his daughter in marriage to Dhanamitra alone. And Arthapati came in his way (or opposed him). In these days, as Ragamanjari the younger

नृत्योत्थिता च सा सिद्धिलाभशोभिनी—'किं विलासात् ? किमभिलाषात्? किमकस्मादेव वा ? न जाने,—असकृन्मां सखीभिरप्यनुपलक्षितेनापाङ्गप्रेक्षितेन सविभ्रमारेचितभ्रूलतमभिवीक्ष्य, सापदेशं च किंचिदाविष्कृतदशनचन्द्रिकं स्मित्वा लोकलोचनमानसानुयाता प्रातिष्ठत ।

तरह मथ डाला (अर्थात् नृत्यमुद्रा में जब वह अपनी दृष्टि इधर-उधर घुमाती थी तब नीलकमल वन का आभास दर्शकों को होने लगता था और वे ही नेत्र भौं रूपी धनुष का आश्रय लेकर प्रहार करने वाले पञ्चशर (कामदेव) को भाव और रसों की समग्रता से बलवान बनाकर मुझे बुरी तरह उसके द्वारा मथे जा रहे थे)। इसके पश्चात् वह (रागमञ्जरी) मानो नगरदेवता हो और नगर की चोरियों से रुष्ट हो इस प्रकार उसने खेल-खेल में नीलकमल और पलाश के समान श्यामल अपने नेत्रों द्वारा चलाए हुए कटाक्षों की पंक्ति रूपी शृंखला (बेड़ी) से मुझे बाँध डाला ।

नृत्य से निवृत्त होकर, सफलता प्राप्ति से अधिक सुशोभित होने वाली उस रागमञ्जरी ने, न जाने विलास (हाव-भाव) से, न जाने इच्छावश, न जाने अकस्मात् ही अथवा न जाने किस कारण बार-बार अपनी सखियों की दृष्टि से बचाकर, भौंहों को टेढ़ा कर नयन कोर से विभ्रमपूर्वक बार-बार मेरी ओर दृष्टिपात किया तथा व्याज पूर्वक कुछ-कुछ दाँतों की कोरों की चाँदनी को प्रकटाते हुए हास्य कर (मुस्कराते हुए) लोगों के नेत्र और मन द्वारा अनुसारित होकर वह अपने घर की ओर रवाना हुई ।

---

sister of Kamamanjari, was to give a musical concert at the public hall by name Panchveer goshtha, the citizens, full of eager curiosity, were collected there. I, with such precedents, was present there with my friend Dhanamitra. When she had commenced dancing, my mind became a second stage for her dance. (i.e. she made a deep impression on my mind). cupid, taking refuge in the excellent bow in the form of the lotus bed of her amorous glances, and gaining strength as it were on account of the display of feelings and sentiments in their entirety, tormented me exceedingly. Thereupon she bound me with the chains of a series of her sporting side-glances, dark-blue like the petals of blue lotuses, as if she were the presiding deity of the town, incensed at my thefts in the town.

As she rose after dancing, appearing more graceful by the flush of success, she repeatedly looked at me, I know not whether through coquetry, or through desire for me, or merely by chance, with a glance from the corner of her eye, unnoticed even by her friends, and in a manner in which the creeper like eyebrows were gracefully contracted, and smiling under some

सोऽहं स्वगृहमेत्य दुर्निवारयोत्कण्ठया दूरीकृताहारस्पृहः शिरःशूलस्पर्शनमपदिशन्विविक्ते तल्पे मुक्तैरवयवैरशायिषि । अतिनिष्णातश्च मदनतन्त्रे मामभ्युपेत्य धनमित्रो रहस्यकथयत्—'सखे ! सैव धन्या गणिकादारिका, यामेवं भवन्मनोऽभिनिविशते । तस्याश्च मया सुलक्षिता भाववृत्तिः । तामप्यचिराद्युग्मशरः शरशयने शाययिष्यति । स्थानाभिनिवेशिनोश्च वामयत्नसाध्यः समागमः ।

किं तु सा किल वारकन्यका गणिका स्वधर्मप्रतीपगामिना भद्रोदारेणाशयेन समगिरत—'गुणशुल्काहम्, न धनशुल्का । न च पाणिग्रहणादृतेऽन्यभोग्यं यौवनम्' इति । तच्च मुहुः प्रतिषिध्याकृतार्था तद्भगिनी काममञ्जरी माता च

तब मैं अपने घर जाकर तीव्रतम उत्कण्ठा के कारण भोजन की इच्छा को दूर हटाकर, मस्तक में पीड़ा का बहाना कर, एकान्त स्थित अपने बिस्तर (तल्प=रेशमी गद्दा) पर निढाल होकर पड़ गया । कामशास्त्र में अतीव कुशल धनमित्र तब एकान्त में मेरे पास आकर इस प्रकार बोला—मित्र ! निश्चय ही वह वेश्यापुत्री धन्य है, जिसमें आपका मन इस प्रकार पूर्णतः निवास करता है, (अनुरक्त है) । मैंने उसकी चित्तवृत्ति को भली भाँति देखा-परखा है । उसे भी शीघ्र ही कामदेव वाणों की शैया पर सुला देगा । समुचित स्थान (उपयुक्त व्यक्तियों) पर प्रेमाधान करने वाले आप दोनों प्रेमियों का मिलाप (बिना किसी प्रयत्न के) सहज ही कराया जा सकता है ।

किन्तु उस वेश्या पुत्री ने वेश्या के अपने धर्म (रुपया लेकर आत्मसमर्पण करना) के विरुद्ध जाने वाले कल्याणमय और उदार भाव (विचार) को इस प्रकार व्यक्त किया है—"मेरा मूल्य गुण है, धन नहीं ।" अर्थात् मुझे श्रेष्ठ गुणों

---

pretext, so as to display the moonlight of her teeth a little, she set out for her house followed by the eyes and minds of the people.

I returned home, but on account of an irresistible longing, I had no desire whatsoever, to take food ; and under pretence of a headache I lay on my solitary bed, with droping limbs. Dhanamitra, who was an adept in love affairs, came to me and privately said to me thus—'Friend, blessed is that courtesan girl alone, since your mind is so deeply attached to her ; I closely marked the affected state of her mind, too. Kama the God of passion will make her also lie on a bed of arrows in no time. And the union of you two, who have each fixed your affection on the worthy person, can be brought about without any efforts.

But that courtesan girl, with a noble and generous thought that goes contrary to the proper duties of courtesans—declared thus—"I am to be won by merit and not by money. My youth

माधवसेना राजानमश्रुकण्ठ्यौ व्यजिज्ञपताम्—'देव ! युष्मद्दासी रागमञ्जरी रूपानुरूपशीलशिल्पकौशला पूरयिष्यति मनोरथानित्यासीदस्माकमतिमहत्याशा साऽद्य मूलच्छिन्ना । यदियमतिक्रम्य स्वकुलधर्ममर्थनिरपेक्षा गुणेभ्य एव स्वं यौवनं विचिक्रीषते कुलस्त्रीवृत्तमेवाच्युतमनुतिष्ठासतीति । सा चेदियं देवपादाज्ञयाऽपि तावत्प्रकृतिमापद्येत तदा पेशलं भवेत्' इति ।

राज्ञा च तदनुरोधात्तथाऽनुशिष्टा सत्यप्यनाश्रवैव सा यदासीत्, तदास्याः स्वसा माता च रुदितनिर्बन्धेन राज्ञे समगिरताम्—यदि, कश्चिद्भुजङ्गोऽस्मदिच्छया विनैनां वालां विप्रलभ्य नाशयिष्यति स तस्करवद्वध्यः' इति तदेवं स्थिते

से खरीदा जा सकता है, धन से नहीं, एवं बिना मेरा पाणिग्रहण किये कोई मेरे यौवन का उपभोग नहीं कर सकता। उसे बार-बार रोकने पर भी सफल न होने पर उसकी बहन काममञ्जरी तथा माता माधवसेना ने वाष्प गद्गद् कण्ठ से राजा से इस प्रकार कहा—'देव ! हमारी यह महत्तम आशा थी कि आपकी दासी रागमञ्जरी अपने रूप के अनुरूप (सदृश) शील, शिल्प, कौशल आदि में सम्पन्न होने के कारण हमारे मनोरथों को पूर्ण करेगी। (परन्तु) आज वह आशा समूल नष्ट हो गई है। यदि यह अपने कुलधर्म का अतिक्रमण कर, धन को उपेक्षित कर, गुणों के लिए ही अपने यौवन को बेचेगी, (और) कुलीन स्त्री के आचरण का ही अनुसरण करेगी तो (हमारी इच्छा कैसे पूरी होगी, अतः) यदि आपकी आज्ञा से (आपकी बात मानकर) यह अपनी स्वाभाविक स्थिति (होश) में आ जाए तो यह एक बहुत सुन्दर बात होगी।'

उक्त अनुरोध से राजा के द्वारा समझाए जाने पर भी जब उसने उनकी बात नहीं सुनी तब उसकी बहन और माता ने अनवरत रोते हुए राजा से कहा—"यदि कोई प्रेमी हमारी इच्छा के बिना इस बाला को फुसलाकर इसका शील भंग करे तो उसे चोर की भाँति मार डाला जाए।"

ऐसा होने पर उसके आत्मीयजन बिना धन के उससे विवाह की अनुमति

---

also will not be enjoyed by another except by marriage." Her sister Kamamanjari and her mother—Madhavasena remonstrated with her against that, and not succeeding in their effort (object), they, with tears choking their throats, said to the king.

'Sir, we had a very great hope that your slave, Ragamanjari, as perfect in character and in accoplishment as in form, would fulfil our desires, but now that hope totaly vanished. Because she, setting aside the duties of her family, and neglecting wealth wishes to sell her youth for merits only, and desires to follow the unfailing course of life of a respectable homely woman. It will be a nice thing, if even at your advice she comes to her senses.'

When she refused to listen, even though advised according

धनादृते न तत्स्वजनोऽनुमन्यते। न तु धनदायासावभ्युपगच्छतीति विचिन्त्योऽत्राभ्युपायः' इति। अथ मयोक्तम्—'किम अचिन्त्यम्। गुणैस्तामावर्ज्य गूढं धनैस्तत्स्वजनं तोपयावः' इति।

ततश्च कांचित्कामम्ञ्जर्याः प्रधानदूती धर्मरक्षिता नाम शाक्यभिक्षुकीं चीवरपिण्डदानादिनोपसंगृह्य तन्मुखेन तया बन्धक्या पणबन्धमकरवम्—'अजिनरत्नमुदारकान्मुषित्वा मया तुभ्यं देयम्, यदि प्रतिदानं रागमञ्जरी' इति।

सोऽहं संप्रतिपन्नायां च तस्यां तथा तदर्थं संपाद्य मद्गुणोन्मादिताया रागमञ्जर्याः करकिसलयमग्रहीषम्। यस्यां च निशि चर्मरत्नस्तेयवादस्तस्याः प्रारम्भे कार्यान्तरापदेशेनाहूतेषु शृण्वत्स्वेव नागरमुख्येषु मत्प्रणिधिर्विमर्दकोऽर्थपतिगृह्यो

नहीं देंगे। तथा धन देने वाले के पास यह स्वयं ही नहीं जाएगी। अतः इसके प्रतिकार का उपाय हमें सोचना चाहिए। यह सुनकर मैंने कहा—"भला इसमें सोचने की क्या बात है? हम गुणों द्वारा उसे जीतकर (उसके मन पर काबू पाकर) चुपचाप धन से उसके स्वजनों को सन्तुष्ट कर देंगे।"

दनन्तर काममञ्जरी की किसी प्रधान दूती को जिसका नाम धर्मरक्षिता था तथा जो बौद्ध भिक्षुणी थी चीवर (वस्त्र) पिण्ड (भोजन) दान आदि द्वारा अपने वश में कर, उस कुलटा के साथ मैंने उस भिक्षुणी के माध्यम से यह अनुबन्ध किया—"यदि तुम मुझे रागमञ्जरी दो तो मैं बदले में धनरत्न के आश्चर्यजनक बटुए को चुराकर तुम्हें दे दूँगा।

उसके यह स्वीकार कर लेने पर, उसी प्रकार उस कार्य को कर (बटुवा चुरा) मैंने अपने गुणों से उन्मादित रागमञ्जरी का पाणिग्रहण किया।

---

ly by the king out of regard to them, her sister and mother sheding tears continuesly said to the king—"If any lover would mislead and seduce her without our wish, he should be put to death as a thief."

Such being the case, her relations will not give their consent without wealth and she will not accept that one, who will give money to her relatinns for her. So, here we have to think of a remedy." I said to him—"what is there to be thought over? We shall win her over by our good qualities (virtues) and at the same time we shall secretly gratify her relations with money."

Then I won over Dharmarakshita, a Buddhist female medicant, the chief agent of Kamamanjari, with gifts of old garments, food and the like, and through her medium I made an agreement with that courtesan that I should steel Dhanamitra's wonderful bag and give it to her if she would give me in return Ragamanjari.

I, then, when she accepted my proposal, accomplished the

नाम भूत्वा धनमित्रमुल्लङ्घ्य वह्वतर्जयत् । उक्तं च धनमित्रेण—'भद्र ! कस्तवार्थो यत्परस्य हेतोर्मामाक्रोशसि । न स्मरामि स्वल्पमपि तवापकारं मत्कृतम्' इति । स भूयोऽपि तर्जयन्निवाब्रवीत्—'स एष धनगर्वो नाम, यत्परस्य भार्यां शुल्कक्रीतां पुनस्तत्पितरौ द्रव्येण विलोभ्य स्वीचिकीर्षसि । ब्रवीषि च—'कस्तवापकारो मत्कृतः' इति ।

ननु प्रतीतमेवैतत् 'सार्थवाहस्यार्थपतेर्विमर्दको बहिश्चराः प्राणाः, इति । सोऽहं तत्कृते प्राणानपि परित्यजामि । ब्रह्महत्यामपि न परिहरामि । ममैकरात्रजागर-

---

जिस रात उक्त बटुवा चुराया जाने वाला था उसके प्रारम्भ में अन्य किसी कार्य के लिए बुलाए गए प्रमुख नागरिकों के सुनते हुए (अर्थात् उन्हें सुनाकर) विमर्दक नामक मेरे गूढ़ पुरुष ने अर्थपति का पक्षपाती बनकर धन मित्र को अपमानित कर उसे बहुत कटुवचन कहे । धनमित्र ने कहा—'जो तुम दूसरे के लिए मेरी निन्दा कर रहे हो इससे तुम्हें क्या लाभ ? मुझे स्मरण नहीं कि मैंने कभी स्वल्प सा भी तुम्हारा अपकार किया हो ?" यह सुनकर वह फिर भी उसे डाँटते हुए बोला—'यही वह धनगर्व नाम का व्यक्ति है, जो दूसरे की धन देकर ली हुई पत्नी को पुनः उसके माता पिता को धन का लालच देकर स्वयं हथिया लेना चाहता है, और कहता है, "कि मैंने तुम्हारा कौन-सा अपकार किया है ?"

यह तो सुविदित ही है कि विमर्दक धनपति सार्थवाह का बाह्य जीवन ही है। इस स्थिति में उसके लिए मैं निज प्राणों को भी दे दूंगा । ब्रह्म-हत्या में भी

---

business in that way (stol the bag for her) and took the sprout like (red and tender as a leave) hand of Ragamanjari, who was fascinated (intoxicated) with my qualities. In the beginning of the night on which the wonderful bag was to be given out as stolen, while the prominent citizens, called under the pretext of some other business, were listening, Vimardaka, my secret agent, having insulted Dhanamitra, spoke many an angry word, showing himself as a partisan of Arthapati.' Dhanamitra said—"what is your gain that you revile me for the sake of another ? I do not remember to have done even a small injury to you." As if in a threatening tone, Vimardaka said again—"This is what is known as the Pride of wealth, that you seek to make your own another's bride, bought off with the bride's money, by alluring (charming) her parents again by means of wealth, and again you ask me "what wrong I have done to you ?"

Why, it is well known that Vimardaka is the external life of Arthapati, the leader of merchants. In this position I will even give up my life for him, and will not shrink even from the

प्रतीकारस्तवैष चर्मरत्नाहंकारदाहज्वरः' इति। तथा ब्रुवाणश्च पौरमुख्यैः सामर्षं निषिध्यापवाहितोऽभूत्। इयं च वार्ता कृत्रिमार्तिना धनमित्रेण चर्म-रत्नाशमादावेवोपक्षिप्य पार्थिवाय निवेदिता। स चार्थपतिमाहूयोपह्वरे पृष्टवान्—'अङ्ग! किमस्ति कश्चिद्विमर्दको नामात्रभवतः' इति। तेन च मूढात्मना 'अस्ति देव! परं मित्रम्'। कश्च तेनार्थः' इति कथिते राज्ञोक्तम्—'अपि शक्नोषि तमाह्वातुम्?' इति 'बाढमस्मि शक्तः' इति निर्गत्य स्वगृहे वेशवाटे द्यूतसभा-यामापणे च निपुणमन्विष्यन्नोपलब्धवान्। कथं वोपलभ्येत स वराकः। स खलु विमर्दको मद्ग्राहितत्वदभिज्ञानचिह्नो मन्नियोगात्त्वदन्वेषणायोज्जयिनीं तदहरेव प्रातिष्ठत। अर्थपतिस्तु तमदृष्ट्वा तत्कृतमपराधमात्मसंबद्धं मत्वा मोहाद् भयाद्वा प्रत्याख्याय पुनर्धनमित्रेण विभाविते कुपितेन राज्ञा निगृह्य निगडबन्धनमनीयत।

सङ्कोच नहीं करूँगा। तुम्हारे इस आश्चर्यजनक बटुवे (चर्मरत्न) के आश्रय भूत अहङ्कार रूपी दाहक ज्वर का प्रतिकार करने के लिए (समाप्त करने के लिए) मेरा एक रात जागना ही पर्याप्त है (अर्थात् मैं केवल एक रात जाग कर तुम्हारे इस बटुवे का अपहरण कर तुम्हारे अहङ्कार ज्वर को उतार सकता हूँ)। जब वह इस प्रकार कह रहा था तभी प्रमुख नागरिकों ने क्रोधपूर्वक उसे रोककर (डाँटकर) वहाँ से भगा दिया। धनमित्र ने बनावटी दुःख के साथ यह सारी बात तथा चर्मरत्न (आश्चर्यजनक धन की थैली) की चोरी की बात पहले ही ढोंग के साथ राजा को निवेदन कर दी थी। अतः राजा ने अर्थपति को बुलाकर एकान्त में पूछा—"प्रियवर! क्या यहाँ तुम्हारा विमर्दक नाम का कोई व्यक्ति है।" उस मूर्ख ने भी—"हाँ, राजन्! वह मेरा परम मित्र है। क्या उससे कोई काम है?" इस प्रकार कहा। यह सुनकर राजा ने कहा 'क्या तुम उसे बुला सकते हो?' "हाँ मैं उसे आपके सामने उपस्थित करने में समर्थ हूँ" यह कहकर उसने वहाँ से निकलकर अपने घर में, वेश्या-गृह-मार्ग में, सभा में (द्यूतगृह में), बाजार में सर्वत्र भली भाँति उसे ढूँढा परन्तु वह कहीं भी नहीं मिला। वह गरीब आखिर उसे मिलता भी कैसे? क्योंकि उस विमर्दक को तो स्वयं मैंने तुम्हारे परिचय के चिन्ह बताकर, भली भाँति समझा कर तुम्हें ढूँढने के लिए उसी दिन उज्जैन भेज दिया था। अर्थपति उस (विमर्दक) को न देख (पा) कर उसके द्वारा किए गए अपराध को अपने से सम्बद्ध मानकर, मोह अथवा भय से विपरीत बात कहकर (चुप बैठ गया)। फिर धनमित्र द्वारा यह बात प्रकट की जाने पर क्रुद्ध राजा ने उसे पकड़कर बेड़ियों में जकड़ दिया।

---

murder of a Brahmana. It needs only one night's awakening on my part to chase away this your fever of pride of the wonderful bag." As he was saying so, the principal citizens angrily interrupted him and drove him away. First mentioning the loss of the wonderful bag, Dhanamitra feigning (pretend-

तेष्वेव दिवसेषु विधिना कल्पोक्तेन चर्मरत्नं दोग्धुकामा काममञ्जरी पूर्वं-दुग्धं क्षपणीभूतं विरूपकं रहस्युपसृत्य ततोऽपहृतं सर्वमर्थजातं तस्मै प्रत्यर्प्य सप्रश्रयं च बह्वनुनीय प्रत्यागमत्। सोऽपि कथंचिन्निर्ग्रन्थिकग्रहान्मोचितात्मा मदनुशिष्टो हृष्टतमः स्वधर्ममेव प्रत्यपद्यत। काममञ्जर्यपि कतिपयैरेवाहोभिर-श्मन्तकशेषमजिनरत्नदोहाशया स्वमभ्युदयमकरोत्। अथ मत्प्रयुक्तो धनमित्रः पार्थिवं मिथो व्यज्ञापयत्—'देव! येयं गणिका काममञ्जरी लोभोत्कर्षाल्लोभ मञ्जरीति लोकावक्रोशपात्रमासीत्, साद्य मुसलोलूखलान्यपि निरपेक्षं त्यजति।

इन्हीं दिनों काममञ्जरी यथाविधि उस धन की थैली (बटुवे) को दुहने की (कुछ धन पाने की इच्छा से) पहले अपने द्वारा दुहे (निचोड़े) हुए, जैन संन्यासी बने हुए विरूपक के पास एकान्त में पहुंचकर, उससे छीने हुए सम्पूर्ण धन को नम्रतापूर्वक उसे लौटाकर तथा अनेक प्रकार से उसकी अनुनय-विनय कर लौट आई। वह भी किसी प्रकार जैनों के बन्धनों से मुक्त होने के लिए, मेरे द्वारा सिखाए जाने (परामर्श दिए जाने) के कारण अतीव प्रसन्न होकर पुनः अपने ही धर्म में लौट आया। अर्थात् पुनः उसने अपने पूर्व धर्म को ही स्वीकार कर लिया। काममञ्जरी ने भी कुछ ही दिनों में उस अजिन रत्न (धन देने वाली अद्भुत थैली) को दुहने की आशा से (उससे कुछ प्राप्त होगा इस आशा से) अपने सौभाग्य को सर्वथा बंजर (पाषाण मात्र शेष) बना डाला। इसके बाद मेरे द्वारा निर्दिष्ट धनमित्र ने एकान्त में राजा से कहा—"देव! जो यह वेश्या काममञ्जरी लोभ की अधिकता के कारण लोभमञ्जरी के रूप में लोगों की निन्दा का पात्र थी, वही आज निरपेक्ष भाव से मूसल, ऊखल आदि गृहोपकरणों तक को लोगों को दिए डाल रही है।

---

ing) uneasiness. communicated this news to the king, who sent for Arthapati and ask him in private—"Dear, have you same one connected with you named Vimardaka ?" the foolish Arthapati said, "yes, sir, he is my close friend; what is to be done with him ?" when this was said the king asked him—'if he could call him to his presence ?" Arthapathi, saying that he could do this, went home and carefully looked for him in his own house, in the streets, through the residence of courtesans, in the gaming houses and in the market place, but did not find him. And how could the poor fallow find him out ? For verily that Vimardaka, fully instructed by me as to the marks for recognizing you, had started for Ujjain,—that very day, at my command. Arthapati, on his part, not finding (seeing) him, thought that the crime committed by him would be connected with himself, and denied the charge, either through delusion or

तन्मन्ये मच्चर्मरत्नलाभ हेतुः ! तस्य खलु कल्पस्तादृशः वणिग्भ्यो वारमुख्याभ्यश्च दुग्धे नान्येभ्य इति हि तद्गता प्रतीतिः । अतोऽमुष्यामस्ति मे शङ्का' इति । सा सद्य एव राज्ञा सह जनन्या समाहूयत । व्यथितवर्णेनेव मयोपह्वरे कथितम्—'नूनमार्ये ! सर्वस्वत्यागादतिप्रकाशादाशङ्कनीयचर्मरत्नलाभा । तदनुयोगायाङ्गराजेन समाहूयसे । भूयोभूयश्च निर्बद्धया त्वया नियतमस्मि तदागतित्वेनाहम-

इससे मैं समझता हूँ कि मेरे अद्भुत धनदायी बटुए की उपलब्धि ही इसका कारण है। (अर्थात् इसके हाथ मेरा वह बटुवा लग गया है जिसके कारण यह इस प्रकार दान कर रही है)। उसके प्रयोग का यही ढंग है। उसके सम्बन्ध में यही विदित हुआ है कि वह वैश्यों को तथा श्रेष्ठ वेश्याओं को ही धन देता है दूसरों को नहीं। अतः वही मेरा बटुवा इसके पास है, यही मेरी शंका (सन्देह) है। (यह सुनते ही) राजा ने तत्काल उसे उसकी माता के साथ बुला भेजा।

कृत्रिम दुःख प्रकट करते हुए मैंने उससे एकान्त में कहा—"आर्ये (मान्ये !) सर्वस्व त्याग की अत्यधिक प्रसिद्धि के कारण चर्मरत्न (धनदायी अद्भुत थैली) तुम्हें प्राप्त हो गया है, इसी आशङ्का से उसके सम्बन्ध में प्रश्न करने के लिए राजा ने तुम्हें बुलाया है। जब बार-बार तुम पर दबाव डाला जाए तब तुम इसकी प्राप्ति का स्रोत मुझे ही बताना।

तब मेरा यन्त्रणापूर्वक (विचित्र ढंग से) वध किया जाएगा। मेरे मर जाने पर तुम्हारी बहन भी जीवित नहीं रहेगी। और स्वयं तुम सर्वथा अकिंचन

through fear, but again when the matter was explained to him by Dhanamitra, he was seized by enraged king and put in chains.

In these days Kamamanjari, desirous of making the wonderful bag yield treasures according to the prescribed procedure for its use, went in secret to virupaka, whom she had previously milked of every thing and who had became a jain mendicant and having greatly pacified him restored to him with courtesy the property appropriated from him, and returned home. He, too, samehow freeing himself from the clute hes of the jains and being advised by me, he with the greatest gladness, resumed his former religion. Within a few days, kamamanjari also reduced her large fortune to the residue of a hearth, with the hope of milking the wonderful bag (i.e. she lost her every thing). Dhanamitra, instructed by me, informed the king in private thus—"Sir, the courtesan Kamamanjari, who by her unique greed had become the object of the censure of the people by being nick-named Lobhamanjari, is today indifferently giving away, in charity, even the pestle and mortar etc. in her house.

पदेश्यः। ततश्च मे भावी चित्रवधः। मृते च मयि न जीविष्यत्येव ते भगिनी। त्वं च निःस्वीभूता। चर्मरत्नं च धनमित्रमेव प्रतिभजिष्यति। तदियमापत्समन्ततोऽनर्थानुबन्धिनी। तत्किमत्र प्रतिविधेयम्?' इति। तया तज्जनन्या चाश्रूणि विसृज्योक्तम्—'अस्त्येवैतदस्मद्वालिश्यान्निर्भिन्नप्रायं रहस्यम्। राज्ञश्च निर्बन्धाद्विस्त्रिश्चतुर्निह्नुत्यापि नियतमागतिरपदेश्यैव चोरितस्य त्वयि। त्वयि त्वपदिष्टे सर्वमस्मत्कुटुम्बमवसीदेत्। अर्थपतौ च तदपयशो रूढम्। अङ्गपुरप्रसिद्धं च तस्य कीनाशस्यास्माभिः संगतम्। अमुनैव तदस्मभ्यं दत्तमित्यपदिश्य वरमात्मा गोपयितुम्' इति मामभ्युपगमय्य राजकुलमगमताम्। राज्ञानुयुक्ते च 'नैष न्यायो वेशकुलस्य यद्दातुरपदेशः। न ह्यर्थैर्न्यायार्जितैरेव पुरुषा वेशमुपतिष्ठन्ति' इत्य-

---

वन जाओगी तथा वह धनदायी थैली पुनः धनमित्र के अधिकार में चली जाएगी। तब यह आपत्ति चारों ओर से अनर्थों की परम्परा ले आएगी अतः बताओ इस स्थिति में क्या करना चाहिए?

(तब) उसने और उसकी माँ ने आँसू बहाते हुए कहा—"यह हमारी मूर्खता का ही परिणाम है कि रहस्य इस प्रकार पूर्णतः प्रकट हो गया है। यद्यपि हम एक दो दिन अथवा दो, तीन, चार बार तक इसे छिपा सकते हैं परन्तु राजा के अधिक दबाव डालने पर तथा अन्य चारा न रहने पर चुराई हुई वस्तु के मूलोत्स के रूप में हमें तुम्हारा नाम लेना ही होगा। और इस प्रकार तुम्हारा नाम लेने पर हमारा सारा कुटुम्ब ही नष्ट हो जाएगा।

अर्थपति पर तो वह अपयश लग ही गया है। उस धूर्त (अथवा क्षुद्र) व्यक्ति का हमारे साथ सम्पर्क भी अंगपुर में प्रसिद्ध है। इस स्थिति में, इसी ने यह चर्मरत्न (थैली) हमें दिया है, यह कहकर अपने आपको बचा लेना अच्छा है। इस प्रकार मुझे समझाकर वे दोनों राजमहल में चली गई।

So, I think it must be due to her acquisition of my magical bag, for such is the prescribed mode for its use; and it has been known about it that it yields money to merchants and the best courtesans and not to any one else. So, I suspect her for the said bag. at this She was suddenly summoned with her mother by the king.

With apparent concern (showing my self as an artificial grieved) I said to her in private—"Madam, surely you must have been suspected of having the wonderful bag, on account of your very widely-known abandonment of every thing in charity. You are summoned by the king to be questioned about it. When pressed again and again, you will certainly point me out as the source of its acquisition.

Then I shall be put to a torture death, and when I am dead, your sister will not certainly live (being a faithful wife of

सकृदतिप्रणुद्य कर्णनासाच्छेदोपक्षेपमीषिताभ्यां दग्धबन्धकीभ्यां स एव तपस्वी तस्करत्वेनार्थपतिरग्राह्यत । कुपितेन च राज्ञा तस्य प्राणेषूद्यतो दण्डः । प्राञ्जलिना धनमित्रेणैव प्रत्यषिध्यत—"आर्य ! मौर्यदत्त ! एष वरो वणिजाम् ईदृशेष्वपराधेष्वसुभिरवियोगः । यदि कुपितोऽसि हृतसर्वस्वो निर्वासनीयः पाप एषः' इति । तन्मूला च धनमित्रस्य कीर्तिरप्रथत । अप्रीयत च भर्ता । पटच्चर-च्छेदशेषोऽर्थपतिरर्थमत्तः सर्वपौरजनसमक्षं निरवास्यत । तस्यैव द्रव्याणां तु केनचिदवयवेन सा वराकी काममञ्जरी चर्मरत्न मृगतृष्णिकापविद्धसर्वस्वा

राजा के पूछने पर (उन्होंने कहा कि) वेश्या कुल का यह न्याय नहीं है कि दाता का नाम प्रकट किया जाए । केवल न्यायार्जित धन के साथ ही व्यक्ति वेश्याओं के यहाँ नहीं आते बल्कि नाक-कान काटने के दण्ड से डराए (धमकाए) गए व्यक्ति भी उन वेश्याओं के पास आते हैं । यह कहते हुए उसी तपस्वी अर्थ पति पर (उसे चोर रूप में गांठकर) उन्होंने जीन कसली अर्थात् उसी को चोर बना दिया ।

क्रुद्ध राजा ने उसे सूली पर चढ़ाने का (प्राण) दण्ड दिया । तभी धन मित्र ने हाथ जोड़कर राजा को रोकते हुए कहा—'आर्य ! नीतिज्ञ मौर्यदत्त ने वैश्यों के लिए यह सुविधा दी है कि ऐसे अपराधों में उन्हें प्राणदण्ड न दिया जाय । यदि आप क्रुद्ध हैं तो इस पापी का सर्वस्व छीन कर इसे अपने राज्य से

---

mine). As for you, you have not a pie with you (you will be bankrupt in all respect) and this wonderful bag will again go in to the possession of Dhanamitra. Thus this calamity will on all sides carry in its train, a series of misfortunes. So, let me know, what should be done ?

She and her mother, both in tears said—"It is surely on account of our folly that this secret has almost leaked out, though we may hide it for a day or two or for once, twice, thrice or four times but being pressed hard by the king, we shall have to give out your name as the source of the thing stolen i. e. the wonderful bag, and you being thus pointed out our family will certainly be ruined.

That infamy has already settled itself on Arthapati, and that stingy (bad) person's close connexion with us is quite well known in the town of Anga. So, it is better to save ourselves by declaring that it was he who gave it to us. "Having thus communicated their intention to me, they both went to the palace.

Beeing questioned by the king again and again they said-That it would not be just for harolts to expose their patrons, adding that it was not always the case that people came to them

सानुकम्पं धनमित्राभिनोदितेन भूपेनान्वगृह्यत। धनमित्रश्चाह्नि गुणिनि कुलपालिकामुपायंस्त। तदेवं सिद्धसंकल्पो रागमञ्जरीगृहं हेमरत्नपूर्णमकरवम्।

अस्मिंश्च पुरे लब्धसमृद्धवर्गस्तथा मुषितो यथा कपालपाणिः स्वैरेव धनैर्मद्विश्राणितैः समृद्धीकृतस्यार्थिवर्गस्य गृहेषु भिक्षार्थमभ्रमत्। न ह्यलमतिनिपुणोऽपि पुरुषो नियतिलिखितां लेखामतिक्रमितुम्। यतोऽहमेकदा रागमञ्जर्याः

निर्वासित कर दें। इस प्रयास के कारण (तन्मूलक) धनमित्र की कीर्ति चारों ओर फैल गई तथा स्वामी (राजा) भी बहुत प्रसन्न हो गया।

इसके पश्चात् राजा ने धनमत्त अर्थपति को मात्र चिथड़ों में सभी नागरिकों के सामने अपने राज्य से निकाल दिया। उसी के द्रव्यों के किसी अंश से उस बेचारी काम मंजरी को जो चर्मरत्न (धनदायी बटुए) की मृगतृष्णा से अपना सब कुछ खो चुकी थी, धनमित्र की प्रेरणा से राजा ने अनुगृहीत किया (उसे धनमित्र के धन का एक भाग दिया)।

धनमित्र ने शुभ दिन में कुलपालिका से विवाह कर लिया। इस प्रकार अपने सभी संकल्पों के पूरा हो जाने पर मैंने राग मंजरी के घर को सुवर्ण और रत्नों से भर दिया।

इसी नगर में लालची समृद्ध वर्ग को इस प्रकार लूटा गया कि वे मेरे द्वारा दिये गए, उनके अपने ही धन से समृद्ध बने हुए (बनाए गए) याचकों के घरों में हाथ में खप्पर लेकर भीख माँगने के लिए भटकने (घूमने) लगे। अतीव चतुर व्यक्ति भी भाग्य द्वारा (नियति द्वारा) लिखित रेखा का अतिक्रमण नहीं कर सकता (समर्थ नहीं होता)।

---

with many honestly earned, but being threatened with the punishment of having their noses and ears cut off, those wretched harolts—Saddled the theft on that poor fellow Arthapati.

The angry king sentenced him to death, when Dhanamitra with folded hands inter posed, saying, "Sir, as per Maurya the great politician, the merchants have a special previlage, i.e. immunity from death in such offences: If you are angry let this villain have his whole property confiscated and banished." For this noble act the fame of Dhanamitra spreaded all over, the king also was highly pleased with him.

Arthapati, who was vain of his wealth, was banished in rags before all the citizens. The wretched Kamamanjari, who had given away her every thing through the mirage of the wonderful money yelding bag, was at the intance (by the inspiration) of Dhanamitra companionately favoured by the king with a portion of Arthepati's wealth.

Dhanamitra married kulpalika on an auspicious day.

प्रणयकोपप्रशमनाय सानुनयं पायितायाः पुनःपुनः प्रणयसमर्पितमुखमधुगण्डूष-मास्वादमास्वादं मदेनास्पृश्ये। शीलं हि मदोन्मादयोरमार्गेणाप्युचितकर्मस्वेव प्रवर्तनम्। यदहमुपोढमदः 'नगरमिदमेकयैव शर्वर्या निर्धनीकृत्य त्वद्भवनं पूरयेयम्' इति प्रव्यथितप्रियतमाप्रणामाञ्जलिशपथशतातिवर्ती मत्तवारण इव रभसच्छिन्नशृङ्खलः कयापि धात्र्या शृगालिकाख्ययानुगम्यमानो नातिपरि-करोऽसिद्वितीयो रंहसा परेणोदचलम्। अभिपततोऽपि नागरिकपुरुषानशङ्कमेव विगृह्य तस्कर इति तैरभिहन्यमानोऽपि नातिकुपितः क्रीडन्निव मदावसन्नहस्त-

---

क्योंकि एक बार मैं राग मंजरी के प्रणय कोप को शान्त करने के लिए, उसके द्वारा अनुनयपूर्वक पिलाई गई मदिरा को पीकर उसके (राग मंजरी के) द्वारा बार-बार प्रणयपूर्वक अपने मुख में लेकर मेरे मुख में दिये गए मदिरा के गण्डूष (कुल्ले) के स्वाद का आस्वादन करता हुआ नशे में चूर हो गया। मदोन्मत्त व्यक्तियों का यह स्वभाव ही होता है कि वे विपरीत मार्ग से भी उचित कामों में (कार्य करने में) ही प्रवृत्त होते हैं।

एक दिन नशे की अधिकता में मैंने (अपनी प्रियतमा से) वायदा किया कि मैं इस नगर को एक ही रात में निर्धन बनाकर (लूटकर, उस धन से) उसके घर को भर दूंगा। (इसके पश्चात्) अतीव दुखी प्रियतमा की प्रणा-माञ्जलि तथा सैकड़ों कसमों की अवहेलना कर, मदमत्त हाथी की तरह जिसने बलपूर्वक अपनी बेड़ियों को (शृंखलाओं को) तोड़ डाला हो (उसी प्रकार सब

Thus, having-succeeded in all my plans, I filled the house of Ragamanjari with Gold and jewels.

The greedy but wealthy people of the city were so robbed of their wealth, that they roamed about, with potsherds in their hands, begging almost at the houses of the supplicants, who had become rich, with treasures given by me. Even though one is highly intelligent, one can not transgress the linedrawn by fate.

For, one day, I persuded Ragamanjari, to drink, with a view to assuage her love anger. I became intoxicated with the mouthful of liquor that she passed in my mouth affectionately. It is the nature of drunkenness and excitement to be doing one's regular works, even by resorting to wrong courses.

In excessive intoxication, I promised her that I would fill her house with wealth after robbing the city (making it peniless) in one night, and disregarding hundreds of oaths and bows with folded hands of my beloved who was extremly distressed at it, like an intoxicated elephant that has forcibly snapped its chains, I rushed forth with great speed, armed only with my sword and

पतितेन निस्त्रिंशेन द्वित्रानेव हत्वाऽवघूर्णमानताम्रदृष्टिरपतम्। अनन्तरमार्तरवान्विसृजन्ती शृगालिका ममाभ्याशमगमत्। अबध्ये चाहमरिभि: आपदो तु मदापहारिण्या सद्य एव बोधितस्तत्क्षणोपजातया प्रतिभया व्यचीचरम्—'अहो, ममेयं मोहमूला महत्यापदापतिता। प्रसृततरं च सख्यं मया सह धनमित्रस्य, मत्परिग्रहत्वं च रागमञ्जर्या:। मदेनसा च तौ प्रोर्णुतौ श्वो नियतं निगृहीष्येते। तदियमिह प्रतिपत्तिर्ययाऽनुष्ठीयमानया मन्नियोगतस्तौ परित्रास्येते। मां च कदाचिदनर्थादितस्तारयिष्यन:! इति कमप्युपायमात्मनैव निर्णीय

बन्धनों को हटाकर) किसी शृगालिका नामक धाय का अनुगमन करता हुआ, बिना अधिक परिजनों को साथ लिए केवल तलवार लेकर में तेजी से आगे बढ़ा ।

मैंने अपनी ओर बढ़ते हुए नगर रक्षकों का निडरता पूर्वक सामना किया। यद्यपि उन्होंने 'चोर' कहकर मुझे खूब मारा तथापि बिना विशेष क्रुद्ध हुए, मानो खेल सा करते हुए मैंने दो-तीन रक्षकों को मार डाला। इसके पश्चात् मदजन्य जड़ता के कारण मेरे हाथ से तलवार गिर गई और मैं स्वयं भी (नशे से प्रभावित) अपनी लाल आँखों को घुमाता हुआ गिर पड़ा।

इसके पश्चात् दु:ख पूर्ण ध्वनि करती हुई शृगालिका मेरे पास आई। उसी समय मेरे शत्रुओं ने मुझे बाँध डाला। मद को अपहरण करने वाली (में समर्थ) आपत्ति ने मुझे तत्काल सावधान (जागरूक) बना दिया और उसी समय उत्पन्न प्रतिभा से मैंने (इस प्रकार) विचार किया— 'अरे! नशे के कारण मुझ पर यह महान् विपत्ति आ पड़ी है।'

---

not with many servents, only followed by that certain nurse, named shrigalika.

I fought fearlessly with the city guards, who were advancing towards me. Though struck by them, and though taken for a thief but without being much angry, I, as if in sport, killed two or three of them with my sword. Then the sword fell down from my hand, which had became weak (enfeeble) due to intoxication, and I then too fell down with my reddened eyes rolling.

Shrigalika, uttering cries of distress, came up to me, when I was tied down by my enemies, put to my senses atonce by the calamity, that took away my drunkenness, I reflected with the help of the ready wit, that flashed to me at that time (due to that I compelled to think that) oh, this serious calamity has befallen me on account of my drunken state.

My friendship with Dhanamitra and also my acceptence of Ragamanjari (my marriage with Ragamanjari) are spread

शृगालिकामगादिषम्—'अपेहि जरतिके ! या तामर्थलुब्धां दग्धगणिकां रागमञ्जरिकामजिनरत्नमत्तेन शत्रुणा मे मित्रच्छद्मना धनमित्रेण संगमितवती, सा हताऽसि। तस्य पापस्य चर्मरत्नमोषाद् दुहितुश्च ते साराभरणापहारादहमद्य निःशल्यमुत्सृजेयं जीवितम्' इति। सा पुनरुद्घट्टितज्ञा परमधूर्ता साश्रुगद्गदमुदञ्जलिस्तान्पुरुषान्सप्रणाममासादितवती सामपूर्वं मम पुरस्तादयाचत—'भद्रकाः ! प्रतीक्ष्यतां कंचित्कालं यावदस्मादस्मदीयं सर्वं मुषितमर्थजातमवगच्छेयम्' इति। तथेति तैः प्रतिपन्ने पुनर्मत्समीपमासाद्य 'सौम्य ! क्षमस्वास्य दासीजनस्यैकमपराधम्। अस्तु स कामं त्वत्कलत्राभिमर्शी वैरास्पदं धनमित्रः।

धनमित्र की मेरे साथ मित्रता तथा मेरे साथ राग मंजरी के विवाह की बात (नगर में) भली-भाँति फैल गई है। मुझ पापी के साथ वे दोनों (राग मंजरी और धनमित्र भी, मेरे कृत्य में सहभागी होने के कारण) कल पकड़ लिए जाएँगे, अतः इस स्थिति में वही मार्ग ग्रहण करना चाहिए, जिसका अनुसरण मेरे निदेशानुसार करने पर उन्हें बचाया जा सके।

और शायद वही मुझे भी इस अनर्थ से बचा दे। फिर कोई उपाय अपने आप ही विचार कर मैंने शृगालिका से कहा—"अरी बुढ़िया ! जाओ (यहाँ से चली जाओ)। जिसने (तुमने) उस अर्थ लोलुप बेचारी राग मंजरी वेश्या का, अजित रत्न (धन देने वाले बटुवे) के कारण मत्त बने हुए मेरे छद्म मित्र परन्तु वास्तव में शत्रु धनमित्र के साथ मिलाप कराया था, वह (तुम) अब मारी गई यह समझ लो।"

उस पापी के उस धनदायी बटुवे को चुरा लेने के कारण तथा तुम्हारी पुत्री के बहुमूल्य गहनों को भी चुरा लेने के कारण अब मैं बिना किसी दुःख के अपने प्राण त्याग दूंगा। कही गई बात के रहस्य को जानने वाली परमधूर्ता वह

---

over (well known) in the city, By the sin of mine (being involved in my offence) both of them will be arrested tomorrow, So, this is the course to be adopted at this juncture, which being followed at my direction, they will certainly be saved.

And will, in all probability, save me from this distress. Thus reflecting, I decided some plan with in myself and said to shrigalika—"clear off, you old wench ! undone are you, who brought about a union between that wretched courtesan Ragamanjari, who is greedy of wealth and Dhanamitra, inoxicated with the pride of the wonderful bag and who is my enemy wearing the grab of a friend.

But I have stolen the wonderful bag of that wretch and also carried away the precious ornaments of your daughter, I shall now relinquish (to give up) my life, without any grief

स्मरंस्तु चिरकृतां ते परिचर्यामनुग्रहीतुमर्हसि दासीं रागमञ्जरीम्। आकल्पसारो हि रूपाजीवाजनः। तद्ब्रूहि क्व निहितमस्या भूषणम्' इति पादयोरपतत्। ततो दयमान इवाहमब्रवम्—'भवतु, मृत्युहस्तवर्तिनः किं ममामुष्या वैरानुबन्धेन' इति तद्ब्रुवन्निव कर्णे एवैनामशिक्षयम्—'एवमेवं प्रतिपत्तव्यम्' इति। सा तु प्रतिपन्नार्थेव जीव चिरम्, प्रसीदन्तु ते देवताः, देवोऽप्यङ्गराजः पौरुषप्रीतो मोचयतु त्वाम्, एतेऽपि भद्रमुखस्स्तव दयन्ताम्, इति क्षणादपासरत्। आनीये चाहमारक्षिकनायकस्य शासनाच्चारकम्!

अथोत्तरेद्युरागत्य दृप्ततरः सुभगमानी सुन्दरंमन्यः पितुरत्ययादचिराधिष्ठि-

---

शृगालिका आँखों में आँसू भरकर, गद्गद् स्वर में, हाथ जोड़कर उन रक्षकों के पास पहुँची और उन्हें प्रणाम कर उनसे इस प्रकार शान्तिपूर्वक बोली—"भद्र पुरुषो! कुछ समय प्रतीक्षा करो, जिससे इसके द्वारा हमारी चुराई हुई सभी वस्तुओं की जानकारी मुझे मिल जाए।"

'ठीक है,' उन रक्षकों के इस प्रकार कहने पर वह पुनः मेरे पास आकर बोली—"सौम्य! इस दासी का एक अपराध क्षमा करना। तुम्हारी पत्नी को फुसलाने वाले धनमित्र को तुम भले ही अपनी शत्रुता का पात्र समझो परन्तु दीर्घकाल तक इमानदारी पूर्वक उसके (काम मंजरी के) द्वारा की गई सेवाओं को ध्यान में रखकर तुम्हें उस अपनी दासी पर अनुग्रह करना ही चाहिए क्योंकि आभूषण वेश्याओं के लिए जीवन तुल्य होते हैं। अतः बताओ तुमने उसके गहने कहाँ रखे हैं?" यह कहकर वह मेरे पाँवों पर गिर पड़ी।

तब उस पर दया दिखाते हुए मैंने कहा—"ठीक है, जबकि मैं मृत्यु के हाथ में पड़ा हुआ हूँ। तब उस (राग मंजरी) से वैर रखकर क्या लाभ?"

(i.e. easily). She, an extremely clever women, took the hint, folded her hands, approaching with tears and sobs, bowed low to the guards and said in a conciliatory tone—"Gentlemen, wait for some time, so that I shall try to know from him about the whole of our property that has been stolen.

When the guards consented saying 'very well' she approached me and said—"Dear, please forgive this one offence of your slave. Let that Dharamamitra, the seducer of your wife, be the object of your hatred. But remembering the long and faithful service she did to you, it is proper for you to be kind enough to Ragamanjari. The life of courtesans is dependent on personal decoration (costly dresses and ornaments). So, please let me know where you have kept her ornaments? With these words she fell at my feet.

Showing pity on her, I said—"All right what is the use of my continued enemity with her, especially when I am in the

ताधिकारस्तारुण्यमदादनतिपक्वः कान्तको नाम नागरिकः किंचिदिव भर्त्सयित्वा मां समभ्यधत्त—'न चेद्धनमित्रस्याजिनरत्नं प्रतिप्रयच्छसि, न चेद्वा नागरिकेभ्यश्चोरितकानि प्रत्यर्पयसि, द्रक्ष्यसि पारमष्टादशानां कारणानामन्ते च मृत्युमुखम्' इति। मया तु स्मयमानेनाभिहितम्—'सौम्य! यद्यपि दद्यामाजन्मनो मुषितं धनं न त्वर्थपतिदारापहारिणः शत्रोर्मे मित्रमुखस्य धनमित्रस्य चर्मरत्नप्रत्याशां पूरयेयम्। अदत्त्वैव तदयुतमपि यातनानामनुभवेयम्। इयं मे

यह कहते हुए मैंने उसे कान में यह सीख दी—"(तुम्हें) इस इस प्रकार (और यह यह) करना चाहिए।"

उसने भी मानो मेरे भाव को जान लिया हो इस प्रकार मुझे आशीर्वाद दिया—"चिरञ्जीवी बनो, देवता तुम पर प्रसन्न हों, महाराज अंगराज भी तुम्हारे पौरुष पर प्रसन्न होकर तुम्हें मुक्त करदें और ये भद्रमुख (रक्षक) भी तुम्हारे ऊपर दया करें।" यह कहती हुई वह शीघ्र ही वहाँ से चली गई। इसके बाद आरक्षकों के नायक की आज्ञा से मुझे जेल में लाया गया।

इसके पश्चात् दूसरे दिन अतीव गर्वित, स्वयं को सौभाग्यशाली और सुन्दर मानने वाले, अपने पिता के निधन के कारण अभी हाल ही में अधिकार (उनका पद) प्राप्त करने वाले, जवानी के मद से चूर परन्तु अनुभवहीन (अपरिपक्व बुद्धि तथा अनुभव वाले) कान्तक नाम के (काराधिपति ने) ने मुझे कुछ धमकाते हुए कहा—

"यदि तुम धनमित्र को उसका धनदायी बटुवा नहीं लौटाओगे, अथवा यदि नागरिकों को उनकी चुराई हुई वस्तुएँ नहीं लौटाओगे तो अठारहों प्रकार की यन्त्रणाओं की पराकाष्ठा को एवं अन्त में मृत्यु के मुख को देखोगे।"

---

hands of death ?" And then if I were going to say every thing about the ornaments or to reveal every thing about theft, I whispered into her ear—'It should be done thus and thus.

She, as if having understood me, blessed me thus—'May you live long, may the Gods be pleased with you, may the king of Anga pleased by your manliness : release you, may these good people also be kind to you, saying these words she moved away immediately. I, too, was taken to the prison by the order of the police chief.

Next day, Kantaka the chief of the prision, who had recently succeeded to his father's post, who was excessively proud, who was considering himself highly fortunate and beautiful and who was inexperienced, due to the pride of youth, threatening me a little, said thus —

'If you will not return the wonderful bag of Dhanamitra and the stolen property of the citizens, you will see the other

साधीयसी संधा' इति । तेनैव क्रमेण वर्तमाने सान्त्वनतर्जनप्राये प्रतिदिनमनुयोगव्यतिकरेऽनुगुणान्नपानलाभात्कतिपयैरेवाहोभिर्विरोपितव्रणः प्रकृतिस्थोऽहमासम् ।

अथ कदाचिदच्युताम्बरपीतातपत्विषि क्षयिणि वासरे हृष्टवर्णा शृगालिकोज्ज्वलेन वेषेणोपसृत्य दूरस्थानुचरा मामुपश्लिष्याब्रवीत्—'आर्य ! दिष्टया वर्धसे ? फलिता तव सुनीतिः ? यथा त्वयाऽऽदिश्ये तथा धनमित्रमेत्याब्रवम्—

(यह सुनकर) मैंने हँसते हुए कहा—"सौम्य, यद्यपि जन्म से लेकर आज तक चुराए हुए धन को मैं लौटा दूँगा तथापि अर्थपति की पत्नी का अपहरण करने वाले, मित्र मुखी परन्तु वस्तुतः शत्रुभूत धनमित्र का धनदायी बटुवा लौटाकर (उसके प्रति) उसकी आशा को पूरा नहीं करूँगा । उसे (बटुवे को) बिना दिए (लौटाए) ही मैं असंख्य यातनाएँ सहलूँगा अर्थात् भले ही मुझे असंख्य यातनाएँ क्यों न सहनी पड़ें परन्तु मैं उस बटुए को नहीं लौटाऊँगा । यही मेरा दृढ निश्चय है ।" (साधीयसी=दृढ, संधा=प्रतिज्ञा) । फिर उसी क्रम से शान्ति तथा धमकी से भरे हुए शब्दों में प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को पूछे जाते हुए, अनुकूल भोजनपान आदि के लाभ (प्राप्ति) से कुछ ही दिनों में मेरे घाव भर गए और मैं स्वस्थ हो गया ।

इसके पश्चात् एक दिन भगवान् विष्णु के पीताम्बर की भाँति पीली धूप की कान्ति वाले तथा जिसकी प्रभा अब ढल रही थी ऐसे समय में (संध्या काल में) प्रसन्न वदना शृगालिका उज्जवल वेश धारण किए हुए अपने सेवकों को दूर खड़ा कर मेरे पास आई और इस प्रकार बोली—"आर्य ! आप

---

end of the eighteen tortures and lastly the face of death.'

Laughing at this, I told—"Dear sir, though I may return all the weatlh, stolen by me since birth, but I will never fulfil the desire for the wonderful purse of my enemy Dhanamitra, who has ravished the wife of Arthapati and who is only my apparent friend. I will suffer even millions of tortures, but not give it back to them.

This is my firm deter mination. While I was continuosly being asked all types of questions, which were full of threats as well as conciliatory words, I, getting wholsome food and drink, had all my wounds headed up within a few days and I regained my normal health—(I became healthy again, getting good food & drink).

After this, once when the day was drawing to a close with its light yellow like the garment of Lord Vishnu, shrigalika appearing to be pleased and dressed nicely, approached me, while her servants were standing at a distance, said thus—

'आर्य ! तवैवमापन्नः सुहृदित्युवाच—'अहमद्य वेशसंसर्गसुलभात्पानदोषाद्बद्धः । त्वया पुनरविशङ्कमद्यैव राजा विज्ञापनीयः—'देव, देवप्रसादादेव पुरापि तदजिनरत्नमर्थपतिमुषितमासादितम् । अथ तु भर्ता रागमञ्जर्याः कश्चिदक्षधूर्तः कलासु कवित्वेषु लोकवार्तासु चातिवैचक्षण्यान्मया समसृज्यत । तत्संबन्धाच्च वस्त्राभरणप्रेषणादिना तद्भार्यां प्रतिदिनमन्ववर्ते । तदसावशङ्क्ष्टि निकृष्टाशयः कितवः । तेन च कुपितेन हृतं तच्चर्मरत्नमाभरणसमुद्गकश्च तस्याः । स तु भूयः स्तेयायभ्रमन्नगृह्यत नागरिकपुरुषैः । आपन्नेन चामुनानुसृत्य रुदत्यै राग-

---

सौभाग्यशाली हैं । आपकी सुनीति (सुन्दर योजना) सफल रही है ।

जिस प्रकार आपने आदेश दिया था उसी प्रकार मैंने धनमित्र के पास जाकर कहा—'आर्य ! आपके ही आपद्ग्रस्त मित्र ने इस प्रकार कहा है कि—'आज मैं वेश्याओं के सम्पर्क में सुलभ मदिरा पान के दोष से जेल में पड़ा हूँ । तुम्हें फिर निर्भय होकर आज ही राजा से इस प्रकार कहना चाहिए कि—'देव आपकी ही कृपा से पहले भी अर्थपति द्वारा चुराए गए धनदायी बटुए को पुनः प्राप्त किया गया था ।''

इसके पश्चात् राग मंजरी के पति का जो कि द्यूत में, विभिन्न कलाओं में कवित्व तथा लोक वार्ता (अफवाह फैलाने) में अतीव निपुण था, उसके नैपुण्य के कारण मेरे साथ मिलाप हुआ । और उसी सम्बन्ध से वस्त्र आभूषण आदि भेजने के द्वारा मैं प्रतिदिन उसकी पत्नी के साथ अपने सम्बन्धियों की तरह व्यवहार करता हूँ । वह नीच भावना का व्यक्ति यह सब देखकर शंकाविष्ट हो गया है तथा उसी ने नाराज होकर वह धनदायी बटुवा तथा उसके (राग मंजरी के) गहनों का डिब्बा चुरा लिया है ।

"Sir you are very lucky. Your clever plan has become successful.

I went to Dhanamitra as instructed by you, and said—"Sir, your friend, who is now indistress said this through me that "I am today in prision on account of the vice of drinking, which is so easy to contract by beng in the company of courtesans. But you, today only by approaching the king say fearlessly thus—"Sir, through the favour of your Majesty alone, the wonderful purse was recovered on a previous occasion from Arthapati.

After some days the husband of Ragamanjari, who was an expert gambler came in contact with me (became my friend) owing to his extreme proficiency in fine arts, poetry and in spreading public rumours. On account of my relations with him, I used to please his wife every day by sending her garment and precious ornaments etc. That mean-spirited fellow

मञ्जरी-परिचारिकायै पूर्वप्रणयानुवर्तिना तद्भाण्डनिधानोद्देशः कथितः। ममापि चर्मरत्नमुपायोपक्रान्तो यदि प्रयच्छेदिह देवपादैः प्रसादः कार्यः' इति। तथा 'निवेदितश्च नरपतिरसुभिर्मामवियोज्योपच्छन्दनैरेव स्वं ते दापयितुं प्रयतिष्यते। तन्नः पथ्यम्' इति। श्रुत्वैव च त्वदनुभावप्रत्ययादनतित्रस्नुना तेन तत्तथैव संपादितम्।

अथाहं त्वदभिज्ञानप्रत्ययितायाः रागमञ्जर्याः सकाशाद्यथेप्सितानि वस्तूनि लभमाना राजदुहितुरम्बालिकाया धात्रीं माङ्गलिकां त्वदादिष्टेन मार्गेणान्व-

---

परन्तु वह पुनः चोरी के लिए घूमता हुआ नगर-रक्षकों द्वारा पकड़ा गया है। अब आपद्ग्रस्त होने के कारण पूर्व प्रणय को ध्यान में रखकर उसने अपने पास आकर रोती हुई राग मंजरी की परिचारिका को उस राग मंजरी के गहनों के पात्र को रखने का स्थान बता दिया है। मेरा धनदायी बटुवा भी यदि उपायों से वश में करने पर वह दे दे, इस दृष्टि से आपको मुझ पर कृपा करनी चाहिए (अर्थात् आप मुझ पर इस प्रकार अनुग्रह कीजिए जिससे प्रभावित होकर वह मेरा बटुवा भी लौटा दे)। इस प्रकार निवेदन करने पर राजा मुझे प्राणदण्ड न देकर (उपच्छेदनैः=सान्त्वनैः) सान्त्वना न देकर तुम्हारा धनदायी बटुवा तुम्हें दिलाने का प्रयत्न करेगा। (स्वं=चर्मरत्नम्) (और) 'यह हमारे लिए लाभप्रद होगा'। यह सुनते ही तुम्हारी शक्ति (प्रभाव) पर विश्वास रखने के कारण, बिना किसी त्रास (भय) के उसने वह सब उसी प्रकार किया (जैसा मैंने कहा था)। इसके पश्चात् मैंने तुम्हारे परिचय चिह्न से विश्वासित राग मंजरी के पास से इच्छानुसार वस्तुएँ प्राप्त करने वाली राजकुमारी अम्बालिका की धाय मांगलिका को तुम्हारे बताए हुए मार्ग से

---

grew suspicious about that, and being enraged he took away that wonderful purse and along with (her) Ragamanjar's ornament box.

But roaming over the town again to steal he was arrested by the city-guards. Now being in distress, he, having regard for his former love i.e. for Ragamanjari, informed the proper place, where he has placed the box of ornaments to the maid servant of Ragamanjari who had followed him in tears. Let your Majesty be pleased to do favour to me, so that, he, being over powered by my devices will return back my wonderful purse. Thus informed, the king will not deprive me of my life, but try to persuade me to give back your purse to you.

And this will be beneficial to us. Just afer hearing this, having confidence in your powers, he did all, without being much alarmed. Then, I, getting every thing according to my wishes, from Ragamanjari, whose confidence I gained by

रञ्जयम् । तामेव च संक्रमीकृत्य रागमञ्जर्याश्चाम्बालिकाया: सख्यं परमवीवृधम् । अहरहश्च नवनवानि प्राभृतान्युपहरन्ती कथाश्चित्तहारिणी: कथयन्ती तस्या: परं प्रसादपात्रमासम् । एकदा च हर्म्यंगतायास्तस्या: स्थानस्थितमपि कर्णकुवलयं स्रस्तमिति समादधती प्रमत्तेव प्रच्याव्य पुनरुत्क्षिप्य भूमेस्तेनोपकन्यापुरं कारणेन केनापि भवनाङ्गणं प्रविष्टस्य कान्तकस्योपरि प्रवृत्तकुहर पारावतत्रासनापदेशात्प्रहसन्ती प्राहार्षम् । सोऽपि तेन धन्यंमन्य: किंचिदुन्मुख: स्मयमानो मत्कर्मप्रहासिताया राजदूहितुर्विलासप्रायमाकारमात्माभिलाषमूलमिव यथा संकल्पयेत्तथा मयाऽपि संज्ञयैव किमपि चतुरमाचेष्टितम् ।

प्रसन्न किया । उसी को उपाय (साधन अथवा माध्यम) बनाकर मैंने राग मंजरी और अम्बालिका में गहरी मित्रता उत्पन्न की ।

प्रतिदिन उसके लिए नए-नए उपहार (प्राभृतान्युपायनानि) लाकर तथा चित्तहारिणी (सुन्दर) कथाएँ सुनाकर मैं उसका अतीव कृपा पात्र बन गया । एक बार जब वह (अम्बालिका) अपने महल में बैठी हुई थी उसका यथा स्थान पहना हुआ भी कर्ण कुवलय (कर्णाभरण) फिसल गया । प्रमत्त की भाँति कभी उसे सँभालकर, कभी फिर से गिराकर, तथा पुन: उस गिरे हुए कर्णफूल को भूमि पर से उठाकर, रति क्रिया में प्रवृत्त कपोत मिथुन को डराने के बहाने से हँसते हुए मैंने उस कर्णफूल से कान्तक के ऊपर प्रहार किया, जो कि किसी कारणवश कन्या के अन्त:पुर से सटे हुए भवन के आँगन में प्रविष्ट हुआ था ।

वह भी उस कर्णफूल के प्रहार से स्वयं को धन्य मानकर, कुछ मुँह को ऊपर उठाकर मुस्कराया । तभी मैंने भी अपने काम पर हँसती हुई राजपुत्री की

---

means of the token of recognition from you, pleased by the ways indicated by you, Mangalika the nurse of the princess Ambalika. Using her (mangalika) as a medium (instrument) I developed a fast-friendship between Ragamanjari and Ambalika.

Bringing to her daily new presents and telling her wonderful stories ; which were attractive to the mind I became an exalted object of favour with her. Once when she (Ambalika) was sitting on the terrace of her palace. I pretended that a lotus, her ear-ornament had slipped down though it was in its proper place, put in right place, but allowed it to fall as if through negligence, I picked it up again from the ground and laughed overtly to frighten the pair of pigeons, which was engaged in amorous-sport and then I struck with it (Lotus) kantaka who had entered for some reason the courtyard of the palace adjecent to the apartment of the princess.

आकृष्टधन्वना च मनसिजेन विद्धः स दिग्धफलेन पत्रिणाऽतिमुग्धः कथंकथमप्यपासरत्। सायं च राजकन्याङ्गुलीयकमुद्रितां वासताम्बूलपट्टांशुकयुगलभूषणावयवगर्भां च वङ्करिकां कयाचिद्वालिकया ग्राहयित्वा रागमञ्जर्या इति नीत्वा कान्तकस्यागारमगाम्। अगाधे च रागसागरे मग्नो नावमिव मामुपलभ्य परमहृष्यत्। अवस्थान्तराणि च राजदुहितुः सुदारुणानि व्यावर्णयन्त्या

विलासमयी मुद्रा को जोकि उसकी अपनी अभिलाषा की मूल रूपा थी, जिस प्रकार (वह) मानले समझ ले उसी प्रकार इशारे से ही कुछ चतुरतापूर्ण चेष्टा की। अर्थात् जिस प्रकार वह इच्छा पूरी करने के लिए मान जाए उसी प्रकार की चतुरतापूर्ण चेष्टा इशारे में ही मैंने उसकी विलासमयी-सी मुद्रा को देखकर की।

धनुष खींचे हुए (चढ़ाए हुए) कामदेव द्वारा विषबुझे फल (बाण के अग्रभाग) वाले बाण से बिंधकर (अर्थात् काम के विषबुझे नुकीले बाण से घायल होकर) वह कान्तक अतीव मुग्ध होकर (आपे से बाहर होकर) किसी प्रकार (अतीव कठिनाई के साथ) वहाँ से चला गया। सायंकाल के समय राजकन्या की अंगूठी (मुहर) से मुद्रित एक बेंत की पिटारी में सुवासित पान अथवा—वास=कपूर तथा ताम्बूल=पान एवं रेशमी वस्त्रों का जोड़ा और कुछ गहने रखकर तथा उस पिटारी को एक बालिका द्वारा पकड़वाकर, इस प्रकार जैसे राग मंजरी के लिए उसे ले जा रहा हूँ, मैं कान्तक के घर में पहुँचा।

He too, owing to that, considered himself blessed and looked up with a smile. I too, with gesture, acted ina manner, which was very clever and induced him to think about the almost graceful postures of the Princess, who was induced to burst into laughter by my act, due to her affection for him.

Wounded by the Kāmā (Mansija=mind born one), who had fully drawn his bow, by the cart of the shaft which was poisoned he became quite beside himself, and then went away with difficulty. In the evening, I made a particular girl carry a basket (changeri is famous name for it) sealed with the princess' signet-ring and containing in it some tamboola (betel-leaves) perfumed with camphorete or betel leaves, perfume, two silken garments and a few ornaments, and taking it as it meant for Ragamanjari, I went with that girl to the house of Kantaka.

He, who was plunged in the unfathomable ocean of passion, became very happy on getting me at his residence, as a boat. When I described in detail the exceedingly tormenting states of the princess, the wicked man's passion was raised to a very

मया स दुर्मतिः सुदूरमुदमाद्यत। तत्प्रार्थिता चाहं त्वत्प्रियाप्रहितमिति ममैव मुखताम्बूलोच्छिष्टानुलेपनं निर्माल्यं मलिनांशुकं चान्येद्युरुपाहरम्। तदीयानि च राजकन्यार्थमित्युपादाय च्छन्नमेवापोढानि।

इत्थं च संधुक्षितमन्मथाग्निः स एवैकान्ते मयोपमन्त्रितोऽभूत्—'आर्य! लक्षणान्येव तवाविसंवादीनि। तथा हि मत्प्रातिवेश्यः कश्चित्कार्तान्तिकः 'कान्तकस्य हस्ते राज्यमिदं पतिष्यति। तादृशानि तस्य लक्षणानि' इत्यादिक्षत्। तदनुरूपमेव च त्वामियं राजकन्यका कामयते। तदेकापत्यश्च राजा तया त्वां समागतमुपलभ्य कुपितोऽपि दुहितुर्मरणभयान्नोच्छेत्स्यति। प्रत्युत प्रापयिष्य-

---

अगाध अनुराग सागर में निमग्न वह कान्तक मुझे पाकर उसी प्रकार अतीव हर्षित हो उठा जैसे अगाध सागर में डूबते हुए व्यक्ति को नाव मिल गई हो। मेरे द्वारा राजकुमारी की दारुणतर वेदना का वर्णन सुनकर वह दुर्बुद्धि बहुत अधिक उन्मादग्रस्त (उन्मत्त) हो गया। दूसरे दिन उसकी प्रार्थना पर, जैसे उसकी प्रिया द्वारा ही प्रेषित हों, इस प्रकार मैंने अपने मुख का पान, अपना जूठा (अपने उपयोग से बचा हुआ) अंगराग, अपनी पहनी हुई पुष्प माला तथा मलिन वस्त्र उसे दिए एवं राजकन्या के लिए उसके द्वारा दी गई वस्तुओं को मैंने लिया तो सही परन्तु उन्हें चुपचाप पहुँचा कहीं और दिया।

इस प्रकार उसकी कामाग्नि को बढ़ाकर एकान्त में मैंने उसे इस प्रकार समझाया—'आर्य! आपके लक्षण ही सर्वथा निर्दोष हैं। इसीलिए मेरे पड़ोसी किसी लक्षणज्ञ ने मुझे बताया है कि यह राज्य एक दिन कान्तक के हाथ में अवश्य ही आएगा, क्योंकि उसके लक्षण ही वैसे हैं। उन्हीं लक्षणों के अनुरूप ही (अथवा उसके कथन के अनुरूप ही) तुम्हें यह राजकन्या चाहती है।

वही (राजकुमारी) है एकमात्र सन्तान जिसकी ऐसा वह राजा भी उसे तुम्हारे साथ सम्पृक्त पाकर क्रुद्ध होते हुए भी अपनी पुत्री के मर जाने के भय से तुम्हें नहीं मारेगा, अपितु तुम्हें अपना युवराज बनाएगा। इस प्रकार यह विषय राजरूप अर्थ से सम्बन्धित है—अर्थात् यह विषय दूसरे अच्छे विषय द्वारा

---

high pitch. Next day, at his request I presented to him as presents from his beloved a tambula (betel-roll) from my mouth, an unguent used by me, a garland worn by me on the previous day or on the same day in the early hours and a soiled garment. I took the things, he gave for the princess, but they were carried away in secret elsewhere.

He himself whose fire of love was thus kindled, was addressed me in private—"Sir, your marks themselves are very clear, and without any mistake. Because a neighbour of mine, who is an astrologer (or soothsayer) told me that "this kingdom shall fall in the hands of Kanṭaka, as he bears such marks (as

त्येव यौवराज्यम् । इत्थं चायमर्थोऽर्थानुबन्धी । किमिति तात ! नाराध्यते । यदि कुमारीपुरप्रवेशाभ्युपायं नावबुध्यसे । ननु बन्धनागारभित्तेर्व्यामत्रयमन्तरालमारामप्राकारस्य । केनचित्तु हस्तवर्तकागारिकेण तावतीं सुरङ्गां कारयित्वा प्रविष्टस्योपवनं तवोपरिष्टादस्मदायत्तैव रक्षा । 'रक्ततरो हि तस्याः परिजनो न रहस्यं भेत्स्यति' इति । सोऽब्रवीत्--'साधु भद्रे ! दर्शितम् । अस्ति कश्चित्तस्करः खननकर्मणि सगरसुतानामिवान्यतमः । स चेल्लब्धः क्षणेनैतत्कर्म साधयिष्यति' इति । 'कतमोऽसौ ? किमिति न लभ्यते ?' इति मयोक्ते 'येन तद्धनमित्रस्य चर्मरत्नं मुषितम्' इति त्वामेव निरदिक्षत् । 'यद्येवमेहि ! त्वयास्मिन्कर्मणि साधिते चित्रैरुपायैस्त्वामहं मोचयिष्यामीति शपथपूर्वं तेनाभि-

---

अनुरित होगा । अतः प्रिय ! तुम इसे प्राप्त करने का प्रयत्न क्यों नहीं करते । यदि तुम राजकुमारी के अन्तःपुर में प्रवेश करने का उपाय नहीं सोच सकते तो सुनो, मैं बताती हूँ कि जेल की दीवार तथा प्रमदोद्यान के परकोटे के मध्य केवल तीन याम का ही अन्तराल (दूरी) है।

यदि किसी कुशल श्रमिक द्वारा उतनी बड़ी सुरंग बनवाकर तुम उपवन में प्रविष्ट हो जाओ तो तुम्हारी रक्षा हमारे ऊपर निर्भर हो जाएगी (अर्थात् तब हम तुम्हारी रक्षा करेंगे) । उस (राजकुमारी) के सेवक भी उसमें अतीव अनुरक्त होने के कारण रहस्य का भेदन नहीं करेंगे (नहीं खोलेंगे) ।' (यह सुनकर) उसने कहा—"भद्रे ! तुमने अच्छा मार्ग सुझाया । कोई एक चोर है जो सगरपुत्रों की भाँति खोदने के (सुरंग आदि बनाने के) कार्य में बहुत निपुण अथवा अप्रतिम है । यदि वह मिल जाए तो क्षण भर में ही वह इस कार्य को पूरा कर देगा ।"

---

long as his marks are concerned, I can say that one day this kingdom shall be under his control)." And just accordingly, the princess likes (loves) you.

The king, who has only child, the princess when knows about your union with her, he might be enraged and yet never ask to destroy you, out of fear of his daughter's death, but on the contrary he will make you his heir-apparent. Thus, this matter is going to be followed by another good one. Oh Dear one, then why not you try to secure it, If you are unable to think for an entrance into the apartment of the princess, I can suggest that the distance between the prison-wall and the rempart of the pleasure garden is only three-yamas.

If by some skilful robber you get a subterranean passage made of that length, then your protection will rest with us. Her servants are deeply attached to her and so they will never leak out this secret.' Hearing this he replied—"Good lady,

संधाय सिद्धेऽर्थे भूयोऽपि निगडयित्वा 'योऽसौ चोरः स सर्वथोपक्रान्तः, न तु धाष्टर्यभूमिः प्रकृष्टवैरस्तदजिनरत्नं दर्शयिष्यति' इति राज्ञे विज्ञाप्य 'चित्रमेनं हनिष्यसि, तथा च सत्यर्थः सिद्ध्यति, रहस्यं च न स्रवति' इति मयोक्ते सोऽतिहृष्टः प्रतिपद्य 'मामेव त्वदुपप्रलोभने नियुज्य बहिरवस्थितः। प्राप्तमितः परं

'वह कौन हो सकता है और क्यों नहीं मिल सकता ?' मेरे यह कहने पर उसने यह कहते हुए जिसने 'धनमित्र का धनदायी बटुवा चुराया था' तुम्हारा ही निर्देश किया। 'यदि ऐसा है तो जाओ, और उसके साथ यह अनुबन्ध करो कि इस काम के पूरा हो जाने पर विचित्र उपायों से मैं तुम्हें मुक्त कर दूंगा।'

"शपथ पूर्वक उसके साथ उक्त प्रकार से अनुबन्ध कर, पुनः कार्य सम्पन्न होने पर उसे फिर से लौह शृंखलाओं (बेड़ियों) में जकड़कर, यह जो चोर है उसका भली-भाँति इलाज कर दिया गया है (उपक्रान्तश्चिकित्सितः)। परन्तु अचलधैर्य वाला यह चोर अत्यधिक वैर के कारण तुम्हें (आपको) वह धनदायी बटुआ नहीं दिखाएगा (उसका पता नहीं बताएगा)। इस प्रकार राजा को सूचित कर, फिर तुम उसे विचित्र उपायों से मार सकोगे।"

ऐसा होने अथवा करने पर ही सही अर्थ पूरा होगा और रहस्य भी नहीं खुलेगा। मेरे इस प्रकार कहने पर वह बहुत प्रसन्न हुआ और मुझे ही उसे प्रलोभित करने (इस पर राजी करने) के लिए नियुक्त कर स्वयं बाहर ही ठहर गया। यहाँ तक (इतना तो) तो हो गया अब आगे का विचार करो। प्रसन्न होकर मैंने कहा—"मेरा कथन तो स्वल्प सा ही है परन्तु तुम्हारी नीति ही यहाँ प्रचुर रही है। ठीक है, उसे (भीतर) ले आओ।"

---

you have suggested a good way." There is a thief who is like the sons of well known King Sagara, is expert in digging; If he is procured (secured for this work), he will do (finish) this work in no-time (or in a moment).

At this when I asked, "who can he be, and why can he not be secured (procured) for this purpose ?" He pointed you out, saying—"He is the man who has stolen Dhanamitras wonderful purpose." (I said) if it so, come on. (Make an agreement with him with an oath) that you will set him free by some wonderful ways.

Making an agreement with an oath (that you will free him after this work) and that being done, put him in chains again and report to the king that though prevailed upon in every way that thief, who is the very abode (dwelling) of intrepidity (boldness) and whose enmity is inveterate with you, would not show that wonderful purse, then you will put him to death, by putting him to strange types of tortures.

चिन्त्यताम्' इति । प्रीतेन च मयोक्तम्—, मदुक्तमल्पम्, त्वन्नय एवात्र भूयान् । आनयैनम्' इति । अथानीतेनामुना मन्मोचनाय शपथः कृतः, अहं च रहस्यानिर्भेदाय विनिगडीकृतश्च स्नानभोजनविलेपनान्यनुभूय नित्यान्धकाराद्भित्तिकोणादारभ्योरगास्येन सुरङ्गामकरवम् ॥

अचिन्तयं चैवम्—'हन्तुमनसैवामुना मन्मोचनाय शपथः कृतः । तदेनं हत्वापि नासत्यवाददोषेण स्पृश्ये' इति । निष्पततश्च मे निगडनाय प्रसार्यमाणपाणेस्तस्य पादेनोरसि निहत्य पतितस्य तस्यैवासिधेन्वा शिरो न्यकृन्तम् ।

इसके पश्चात् जब वह भीतर लाया गया, तब उसने मुझे मुक्त करने के लिए शपथ खाई तथा मैंने रहस्य को गुप्त रखने की शपथ ली । बन्धन मुक्त होने पर स्नान, भोजन, अनुलेपनादिका का अनुभव अर्थात् सेवन कर, नित्य अन्धकार में विलीन रहने वाली कारागार की दीवार के कोने से आरम्भ कर सर्पमुखी खोदने के साधन से मैंने सुरंग बनाई ।

तब उस समय मैंने इस प्रकार विचार किया—इसने अपने मन में मेरी हत्या का विचार लेकर ही मेरी मुक्ति के लिए शपथ खाई है । अतः इसे मार कर भी मैं असत्य भाषण के दोष से स्पृष्ट नहीं हूँगा । इसके बाद जब में बाहर निकलने (जाने) लगा तब उसने मुझे जकड़ने के लिए हाथ फैलाया परन्तु मैंने पाँव से उसके वक्ष पर ठोकर मारी, जिससे वह धराशायी हो गया और तभी मैंने नीचे गिरे हुए उस कान्तक का सिर अपनी छुरी से काट डाला ।

Having done this, you will gain your object and the secret will not leak out. When I said this, he became very happy and having accepted my advice and appointed me to persuade you to it, standing himself out side. This much is done, now think of what is proper to do next." At this I said, "what I said was very little (or nothing) but your policy has greatly contributed to this. All right, bring him in."

When brought in, he took an oath to set me free, and I never to disclose (leak out or divulge) his secret. After this when chains were removed, I had a bath and food along with unguents, and then from an everdark-corner of the prison wall, I excavated a subterranean passage with a snake-headed tool.

Then I thought thus—"This man has taken an oath to free me, only with a desire to murder me. So, I shall not be touched with the sin of proving false to my promise, even if I kill him." After this, when I was going out, he extended his hand to fetter (bind) me, then I kicked him on the chest. When he fell down, I cut off his head with my knife.

अकथयं च शृगालिकाम्—'भण भद्रे ! कथंभूतः कन्यापुरसंनिवेशः ? महानयं प्रयासो मा वृथैव भूत् । अमुत्र किंचिच्चोरयित्वा निवर्तिष्ये, इति । तदुपदर्शितविभागे चावगाह्य कन्यान्तःपुरं प्रज्वलत्सु मणिप्रदीपेषु नैकक्रीडाखेदसुप्तस्य परिजनस्य मध्ये महितमहार्घरत्नप्रत्युप्तसिंहाकारदन्तपादे हंसतूलगर्भशय्योपधानशालिनि कुसुमलवच्छुरितपर्यन्ते पर्यङ्कतले दक्षिणपादपार्ष्ण्यधोभागानुव-

---

इसके बाद मैंने शृगालिका से कहा—"भद्रे! राजकुमारी के अन्तःपुर की स्थिति किस प्रकार की है (यह मुझे यथावत् बताओ) जिससे (सुरंग निर्माण विषयक) यह महान् प्रयास बेकार न हो। वहाँ से मैं कुछ चुराकर (शीघ्र ही) लौट आऊँगा।" उस (शृगालिका) द्वारा बताए गए विभागों वाले राजकुमारी के अन्तःपुर में प्रविष्ट होकर, प्रज्वलित मणिमय दीपकों के प्रकाश में मैंने अपने परिजनों के मध्य में अनेक खेलों से थकी हुई राजकुमारी को सोते हुए देखा। वह उत्कृष्ट बहुमूल्य रत्नों से खचित, सिंह के आकार वाले, हाथी-दाँत के पाँव वाले, हंस के पँखों से निर्मित गद्दे और तकिए वाले, फूलों की पंखुड़ियों से पूरी तरह भरे हुए (खचित) पलँग पर लेटी हुई थी। उसके वाम पादका अग्रभाग दक्षिण पाँव की ऐडी से ढका हुआ था एवं उसका दाया पाँव पलँग के पादमूल के अधोभाग पर सिमटा हुआ था और दूसरा (बायाँ पाँव) उस (पलँग) के अगले भाग पर रखा हुआ था। उसके सुन्दर टखनों की संधि कुछ-कुछ खुली हुई थी, दोनों जँघाएँ एक-दूसरे से सटी हुई थीं, दोनों कोमल घुटने सिकुड़े हुए थे, दोनों

Then I said to Shrigalika, "Tell me dear, the position of the apartment of princess (how it is situated) so that this great task would not prove fruitless (failure). From there I shall steal something and return." (After getting proper idea about princess' apartment) I entered the apartment of the princess, whose various parts were shown to me by her i.e. Shrigalika. While jewel-lamps were burning brightly—

I saw her sleeping in the midst of her attendants, due to the exhaustion caused by different sports. She was laying on such a coat, which was studded with good and precious jewels, which had the shape of a recumbant lion, which had the ivory feet and which was having (over which was spreaded) a bed on it full with swany cotten (wings of the swan) alongwith a pillow and this coat's borders were decked with petals of flowers. Her right foot was folded in such a manner that it was touching the end of the coat and the second one or left was placed on its front portion. She was sleeping in such a position that the upper part of her left foot was covered by the inner side of her right heel.

लितेतरचरणाग्रपृष्ठम्, ईषद्विवृत्तमधुरगुल्फसंधि, परस्पराश्लिष्टजङ्घाकाण्डम्, आकुञ्चितकोमलोभयजानु, किंचिद्वेल्लितोरुदण्डयुगलम्, अधिनितम्बस्रस्त-मुक्तैकभुजलताग्रपेशलम्, अपाश्रयान्तानिमिताकुञ्चितेतरभुजलतोत्तानतलकर-किसलयम्, आभुग्नश्रोणिमण्डलम्, अतिश्लिष्टचीनांशुकान्तरीयम्, अनतिवलि-ततनुतरोदरम्, अतनुतरनिःश्वासारम्भकम्पमानकठोरकुचकुड्मलम्, आतिरश्चीनवन्धुरशिरोधरोद्देशदृश्यमाननिष्टप्ततपनीयसूत्रपर्यस्तपद्मरागरुचकम्,

---

जाँघें कुछ मुड़ी हुई थीं, नितम्ब पर गिरे हुए बाल जैसे कर से वह अतीव आकर्षक जान पड़ती थी, मस्तक के नीचे सिकोड़कर रखी हुई—भुजलता के किसलय सदृश करके द्वारा मस्तक को ऊपर उठाए हुए थी, घुमावदार कूल्हों को थोड़ा-सा मोड़े हुए थी। बुरी तरह शरीर से सटा हुआ चीनी रेशम का अधोवस्त्र (पेटीकोट-लँहगा) उसने पहन रखा था। उसका अत्यधिक कोमल उदर बहुत ही (भीतर) धँसा हुआ था। श्वासोच्छ्वास प्रक्रिया में उसके कली के समान सुपुष्ट और कठोर उरोज कम्पित हो उठते थे। उसका मणिक्य से बना हुआ कण्ठाभरण तथा तपाए हुए सोने से बना हुआ वह कण्ठ-हार जिसमें मणिक्य पिरोए गए थे, उसके गल प्रदेश में झूल रहा था और वह अतीव मनोहर जान पड़ता था।

उसके कानों में निष्पन्द पड़े हुए कुण्डल कुछ तिरछे होने के कारण आधे ही दृष्टिगोचर होते थे। उसका शिथिल केशकलाप, कानों में पहने हुए रत्ना-भरण के कारण अथवा उससे निकलकर आती हुई रक्तिम रश्मियों के कारण

Her charming ankle joints were slightly turned aside. The long massive calves of her legs were in close contact with each other. Her tender knees were turned a bit aside. Her things were a little drawn in, (with all these) she looked attractive on account of the extremity of one of her creeper like arm was thrown lightly over her hips. Her sprout like tender hand, with its upstretched palm, of the other creeper like arm was contracted and thrown under the crown of the head. Her circular hips were slightly curved.

The thin china silk garment lay closely adhering to her person. Her extreemly slender belly was bent much. When she was breathing, her bud-like developed breasts were shaking slightly. Her neck-ornament made of rubies and intervowen in her necklace of burnished gold, was to be seen laying near the region of her lovely neck resting slantingly.

Her ear-ornament which was in her beautiful ear turned down was partially visible and her some what loosened braid of hair-laying unevenly was tinged reddish with the rays emerg-

अर्धलक्ष्याधरकर्णपाशनिभृतकुण्डलम्, उपरिपरावृत्तश्रवणपाशरत्नकर्णिकाकिरण-मञ्जरीपिञ्जरितविषमव्याविद्धाशिथिलशिखण्डबन्धम्, आत्मप्रभापटलदुर्लक्ष्यपाटलोत्तराधरविवरम्, गण्डस्थलीसंक्रान्तहस्तपल्लवदर्शितकर्णावतंसकृत्यम्, उपरिकपोलादर्शतलनिषिक्तचित्रवितानपत्रजातिजनितविशेषकक्रियम्, आमीलितलोचनेन्दीवरम्। अविभ्रान्तभ्रूपताकम्, उद्भिद्यमानश्रमजलपुलकभिन्नशिथिलचन्दनतिलकम्, आननेन्दुसंमुखालकलतं च विश्रब्धप्रसुप्तामतिधवलोत्तरच्छद-

---

किंचित् लाल-सा प्रतीत हो रहा था। अपनी प्रभा के समूह से लाल-लाल ऊपर और नीचे के होंठ के मध्य का विवर दुर्लक्ष्य-सा था अथवा दोनों होंठों के मध्य का अन्तराल उनकी अपनी ही कान्ति से पाट दिया गया था।

गण्डस्थल के नीचे रखा हुआ कर किसलय कर्णाभरण का कार्य कर रहा था। पलँग के ऊपर तने हुए बेल बूटों वाले वितान (छोलदारी) का प्रतिबिम्ब दर्पण जैसे पारदर्शी ऊपरी गाल पर पड़कर विभिन्न पत्तों द्वारा उस पर की गई प्रसाधन सज्जा का परिचय दे रहा था। उसके कमल के समान दोनों नेत्र बन्द थे। पताका रूपी भौंहें सर्वथा निष्पन्द (अकम्पित) थीं। निकलती हुई पसीने की बूंदों से उसका चन्दन का तिलक शिथिल (पतला) होकर पसीने की बूंदों के साथ मिल गया था।

उसके लम्बे घुँघराले बाल उसके मुखचन्द्र पर छितराए हुए थे। वह पूर्ण निश्चिन्त होकर सो रही थी। अतीव शुभ्र चादर में उसके शरीर का एक भाग डूबा हुआ-सा (लिपटा हुआ) था। चिरकाल तक खेलने के कारण वह सर्वथा निश्चल-सी इस प्रकार सोई हुई थी जैसे शारदीय मेघ की गोद में बिजली सोई हुई हो। इस रूप में मैंने उस राजकन्या को उसके अपने अन्तःपुर में सोया हुआ देखा।

---

ing from the jewelled ear-ornament which was in the ear turned upwards. The space between the red upper and lower lips was covered up with the reddish lustre of their own.

Her tender and leaf like hand placed under the check served the purpose of the ear-ornament. The act of drawing the ornamental painting on her check was done by the different leaves in the embroidered canopy mirrored into her transparent check that was turned upwards. Her lotus like eyes were closed. Her banner like eyebrows were steady. The Sandal-Tilaka (mark) on the forehead had been moistened and mixed with the drops of perspiration that were raising up.

Her long and curly hair covered her moon like face. She was sleeping in full confidence. On account of her one side being almost burried in the exceedingly white bed-sheet, she was appearing like lightning, laying steady on the lap of an

निमग्नप्रायैकपार्श्वतया चिरविलसनखेदनिश्चलां शरदम्भोधरोत्सङ्गशायिनी-मिव सौदामिनीं राजकन्यामपश्यम्। दृष्ट्वैव स्फुरदनङ्गरागश्चकितश्चोर-यितव्यनिस्पृहस्तयैव तावच्चौर्यमाणहृदयः किं कर्तव्यतामूढः क्षणमतिष्ठम्।

अतर्कयं च—'न चेदिमां वामलोचनामाप्नुयां न मृष्यति मां जीवितुं वसन्तबन्धुः। असंकेतितपरामृष्टा चेयमतिबाला व्यक्तमार्तस्वरेण निहन्यान्मे मनोरथम्। ततोऽहमेवाऽऽव्नीय। तदियमत्रप्रतिपत्तिः' इति। नागदन्तलग्ननिर्या-सकल्कवर्णितं फलकमादाय मणि समुद्गकाद्‌वर्णवर्तिकामुद्धत्य तां तथाशयानां

उसे देखते ही मेरी कामाग्नि भड़क उठी और मैं चकित-सा होकर चोरी के प्रति उदासीन हो, अपना हृदय चुरवाकर (अर्थात् आया था वहाँ कुछ चुराने परन्तु अपना ही हृदय उसके द्वारा लुटवाकर) किंकर्तव्य विमूढ़-सा बनकर वहाँ क्षण-भर खड़ा रह गया और सोचने लगा—'यदि मैंने इस सुलोचना को प्राप्त न किया तो वसन्तबन्धु कामदेव मुझे जीवित न छोड़ेगा। यदि बिना संकेत दिए मैंने इसका स्पर्श किया तो यह अतीव कोमल बाला अपनी दुःखद चीखों से मेरे मनोरथ को निष्फल बना देगी।

और यह स्वयं पर ही प्रहार करने के समान होगा। इस स्थिति में मुझे अब यही करना चाहिए—यह विचार खूँटी पर टँगे हुए गोंद जैसे किसी चूर्ण से रचित (रँगे हुए) तख्ते (फलक) को लेकर रत्नखचित रंगों की पेटी से कूची निकाल कर, मैंने उस रूप में सोई हुई, उस कुमारी का उसपर चित्र बनाया तथा स्वयं को उसके चरणों में नमित हो, हाथ जोड़े हुए चित्रित कर यह आर्या छन्द लिखा—(अर्थात् मैंने गोंदलिप्त उस काष्ठ फलक पर कूची की सहायता से उसका ऐसा

---

autumnal cloud. In this condition I have seen the princess in her apartment.

The very moment I saw her, my passion was kindled. I was simply stunned. I had a desire to steel her something of her palace, but robbed instead of my heart, I stood for a moment, being quite at a loss to know what to do.' Then I thought—"The friend of spring season Kama will not permit me to live, if I do not secure this maiden with beauteous eyes. If I touch her now, without previous indication, this extremely young girl will surely destroy my desire by her cry of distress.

It amounts to striking at myself. So, this is the way to be followed in the present case or present situation. Having thought like this, I took a wooden board dyed with the paste of a kind of gum, which was hanging from a peg, took out a painting brush from a jewelled drawing box, I draw her sleeping in that position and myself kneeling at her feet with folded hands, and than I wrote the following verse in Arya meter—

तस्याश्च मामाबद्धाञ्जलिं चरणलग्नमालिखमार्यां चैताम्—

'त्वामयमाबद्धाञ्जलि दासजनस्तमिममर्थमर्थयते ।
स्वपिहि मया सह सुरतव्यतिकरखिन्नेव मा मैवम् ॥'

हेमकरण्डकाच्च वासताम्बूलवीटिका कर्पूरस्फुटिकां पारिजातकं चोपयुज्यालक्तकपाटलेन तद्रसेन सुधाभित्तौ चक्रवाकमिथुनं निरष्ठीवम् ! अङ्गुलीयकविनिमयं च कृत्वा कथंकथमपि निरगाम् । सुरङ्गया च प्रत्येत्य बन्धनागारं तत्र बद्धस्य नागरिकवरस्य सिंहघोषनाम्नस्तेष्वेव दिनेषु मित्रत्वेनोपचरितस्य 'एवं मया हतस्तपस्वी कान्तकः, तत्त्वया प्रतिभिद्य रहस्यं लब्धव्यो मोक्ष' इत्युपदिश्य सह शृगालिकया निरक्रामिषम् । नृपतिपथे च समागत्य रक्षिकपुरुषैरगृह्ये ।

चित्र बनाया जिसमें वह उपरोक्त ढँग से सोई हुई थी— तथा मैं हाथ जोड़े घुटनों के बल उसके चरणों में झुका हुआ था—एवं उसके नीचे यह आर्या छन्द लिखा हुआ था—

करबद्ध यह तुम्हारा दास तुमसे केवल यही एकमात्र याचना करता है (तुमसे यही एक बात चाहता है) कि तुम सुरत व्यापार से थककर मेरे साथ शयन करो, इस प्रकार (बाल सुलभ खेलों से थककर) नहीं । इसके पश्चात् स्वर्णिम-ताम्बूल पिटारी से एक पान का बीड़ा, थोड़ा-सा कपूर तथा कुछ सुगन्धित खिवाम लेकर मैंने अपने मुँह में डाला और इन सबको चबाकर अलक्तक जैसी उसकी लाल-लाल पीक को उस कक्ष की चूने से पुती हुई सफेद दीवार पर इस प्रकार थूका कि उससे वहाँ एक चकवे का जोड़ा सा उभर आया । इसके बाद उसके साथ अपनी अँगूठी का अदला-बदला कर मैं किसी प्रकार (कठिनाईपूर्वक) वहाँ से निकल आया । इसके बाद मैं सुरंग द्वारा जेल में लौटा और वहाँ चिरकाल से मेरे साथ विद्यमान सिंहघोष नामक प्रतिष्ठित नागरिक से, जिसके साथ मेरी इन्हीं दिनों मित्रता हुई भी— बोला—"तुम्हें इस रहस्य को प्रकट कर यहाँ से मुक्ति प्राप्त कर लेनी चाहिए ।" उसे इस प्रकार समझाकर मैं शृगालिका के साथ वहाँ से निकल आया ।

"This your slave, entreats you with folded hands, only with this one object—"Sleep with me, exhausted by love sports and not in this manner (tired by other sports). Then I took from the golden betel box a specid betel roll, a little camphor, and some seented catechu (parijata) and chewed all this and then spat on the white wall in such a way, as to form a pair of Chakravakas. (I spat on the white wall in such a manner that a pair of Chakravakas appeared on the wall).

After this, exchanging my ring with her, I somehow departed. I returned to the jail through the underground passage. There was an eminent citizen by name Simhagosha who was in the

अचिन्तयं च—'अलमस्मि जवेनापसर्तुमनामृष्ट एवैभिः। एषा पुनर्वराकी गृह्येत। तदिदमत्र प्राप्तरूपम्' इति तानेव चपलमभिपत्य स्वपृष्ठसमर्पितकूर्परः पराङ्मुखः स्थित्वा 'भद्राः! यद्यहमस्मि तस्करः, बध्नीत माम्। युष्माकमयमधिकारः। न पुनरस्या वर्षीयस्याः' इत्यवादिषम्। सा तु तावतैवोन्नीतमदभिप्राया तान्सप्रणाममभ्येत्य 'भद्रमुखाः! ममैष पुत्रो वायुग्रस्तश्चिरं चिकित्सितः। पूर्वेद्युः प्रसन्नकल्पः प्रकृतिस्थ एव जातः! जातास्थया मया बन्धनान्निष्क्रमय्य

राजमार्ग पर आते ही नगर रक्षकों के साथ मेरी मुठभेड़ हो गई। मैंने सोचा कि मैं इनके द्वारा अस्पृष्ट (बिना छुए हुए ही) ही तेजी से यहाँ से भाग सकता हूँ, परन्तु यह बेचारी पकड़ी जाएगी। अतः इस समय यही करना उचित होगा (यह मन में विचारकर) मैं तेजी से उनके पास पहुँचा और अपनी कोहनियों को पीठ के पीछे रखकर तथा अपने मुँह को दूसरी ओर घुमाए हुए उनसे बोला, 'यदि मैं चोर हूँ तो मुझे बाँध लो। यह तुम्हारा अधिकार है। परन्तु इस वृद्धा को पकड़ना तुम्हारा अधिकार नहीं है।' वह इतने (मेरे कथन मात्र) से ही मेरे अभिप्राय को जान गई और प्रणामपूर्वक उनके पास पहुँचकर बोली, "भद्र पुरुषो! यह मेरा पुत्र है। यह चिरकाल से वातरोग (उन्माद) से ग्रस्त था तथा चिकित्साधीन था। कल ही यह पूरी तरह स्वस्थ होकर स्वाभाविक दशा में आया है।

"इसके पूर्ण स्वस्थ हो जाने की आशा से मैंने इसे कारागार से मुक्त कराकर स्नान कराया, अनुलेपन लगाया, नए वस्त्र पहनाए और स्वादिष्ट-सुपुष्ट

---

prison along with me and who was treated by me in those days as friend of mine. I said to him—"Thus I have killed Kantaka. You should disclose this secret (intrigue=under hand plotting of Kantaka) and get your release. Saying this I came out with Shrigalika.

When I came to the royal road, I encountered the city guards. (At this) I thought I am able to run away untouched by these guards, but this poor Shrigalika will be arrested. So, this is the best thing to be done now—"I quickly ran up to them, and placing my elbows behind and standing with my face turned away from them, I said to them thus—"Gentlemen, if I am a thief, you could arrest me without any hesitation.

It is your duty (to seize a thief like me) but not this old lady." By this much of my talk she guessed my intention and approached them, bowing her head and said—"Gentlemen, this is my son. He was suffering from hysteria and was under treatment for a long time. Only yesterday he was almost cured and regained the natural condition of his normal health.

स्नापितोऽनुलेपितश्च परिधाप्य निष्प्रवाणियुगलमभ्यवहार्य परमान्नमौशीरेऽद्य कामाचारः कृतोऽभूत् ।

अथ निशीथे भूय एव वायुनिघ्नः 'निहत्य कान्तकं नृपतिदुहित्रा रमेयम्, इति रंहसा परेण राजपथमभ्यपतत् । निरूप्य चाहं पुत्रमेवंगतमस्यां वेलयामनुधावामि । तत्प्रसीदत बद्ध्वैनं मह्यमर्पयत' इतियावदसौ क्रन्दति तावदहं 'स्थविरे ! केन देवो मातरिश्वा बद्धपूर्वः ? किमेते काकाः शौङ्गेयस्य मे निगृहीतारः ? शान्तं पापम्' इत्यभ्यधावम् । असावप्यमीभिः 'त्वमेवोन्मत्ता यानुन्मत्त इत्युन्मत्तं मुक्तवती । कस्तमिदानीं बध्नाति ?' इति निन्दिता कर्दथिता रुदत्येव

भोजन कराया और इसे यथेच्छ काम करने की स्वतन्त्रता दे दी । परन्तु मध्य रात्रि में यह पुनः वातविष्ट (उन्मत्त) हो गया और यह कहता हुआ—"कान्तक को मारकर राजपुत्री के साथ रमण करूँगा" बहुत तेजी से राजमार्ग पर दौड़ पड़ा ।

अपने पुत्र को इस अवस्था में देखकर इस निशीथ काल में मैं उसके पीछे दौड़ रही हूँ । इसलिए कृपा कीजिए । इसे बाँध कर मुझे सौंप दीजिए ।" जब तक वह चिल्ला ही रही थी तब तक मैंने—' बुढ़िया भला बता तो सही कि क्या कभी वायुदेव भी पकड़े जा सके हैं, क्या ये कौवे मुझ बाज को पकड़ सकेंगे ? आप शान्त हो । यह कहा और मैं फिर से दौड़ पड़ा ।

"तुम स्वयं ही उन्मत (पागल) हो, जिसने इसे सामान्य जानकर इस प्रकार मुक्त कर दिया है ।" उन्होंने इन शब्दों के साथ उस पर दोषारोपण किया । इस प्रकार आक्षिप्त होकर वह—'अब इसे कौन पकड़ेगा' ? इस प्रकार कहकर रोती हुई मेरे पीछे दौड़ पड़ी । इसके पश्चात् रागमंजरी के घर जाकर

Hoping that he was cured, I secured his release from the prison. Then I made him take bath, and then unguents were applied to his body. I also made him wear a pair of new garments and take a rich and delicious food. Today he was given the freedom about his action or of sitting and sleeping. But at midnight, he was attacked again by hysteria and ran off with great speed to the royal-road (main road) shouting that he would kill Kantaka and enjoy with the princess.

Finding my son in this condition, I am running after him even at this odd hour (midnight). So, please have mercy on me, catch hold of my son and hand him over to me.'' While she was crying like this, I shouted thus—'You old hag ! who has ever bound the god-wind ? Can these crows (cowards) catch me, a hawk (bold one) ?' With these words I again ran away.

She was blamed by the guards thus—"You yourself were mad, who set him free, thinking him to be normal, when actu-

मामन्वधावत्। गत्वा च रागमञ्जरी गृहं चिरविरहखेदविह्वलामिमां बहुविधं समाश्वास्य तं निशाशेषमनयम्। 'प्रत्यूषे पुनरुदारकेण च समगच्छे।

अथ भगवन्तं मरीचिवेशकृच्छ्रादुत्थाय पुनः प्रतितप्ततपःप्रभावप्रत्यापन्नदिव्यचक्षुषमुपसंगम्य तेनारस्म्येवंभूतत्वद्दर्शनमवगमितः। सिंहघोषश्च कान्तकापचारं निर्भिद्य तत्पदे प्रसन्नेन राज्ञा प्रतिष्ठापितः तेनैव चारकसुरङ्गापथेन कन्यापुरप्रवेशं भूयोऽपि मे समपादयत्। समगंसि चाहं शृगालिकामुखनिस्सृतवार्तानुरक्तया राजदुहित्रा। तेष्वेव दिवसेषु चण्डवर्मा सिंहवर्माविधूतदुहितृप्रार्थनः कुपितोऽभि-

---

चिरकालीन विरह दुःख से दुःखी रागमंजरी को अनेक प्रकार से समझा-बुझाकर मैंने रात्रि का शेष भाग बिताया और प्रातःकाल होते ही मैं उदारक से जा मिला।

इसके पश्चात् मैं वेश्या के प्रभाव से मुक्त होकर प्रकृष्ट तपकर उसके प्रभाव से पुनः दिव्यदृष्टि पाने वाले भगवान् मरीचि के पास गया और उन्हीं से यह जानकर कि इस प्रकार यहाँ आपका दर्शन हो सकेगा (मैं यहाँ पहुँचा हूँ)। सिंहघोष को भी कान्तक के दुराचार का पर्दाफाश (उद्घाटित) करने के कारण राजा ने प्रसन्न होकर उस (कान्तक) के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया और तब उसी ने फिर से सुरंग के द्वारा मुझे कन्या के कक्ष में पहुँचाया।

इस प्रकार शृगालिका के मुख से मेरे सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर मुझमें अनुरक्त हुई राजकुमारी के साथ मेरा मिलाप हुआ। उन्हीं दिनों

---

ally he was not so." Who can catch him now? She ran after me just weeping. Then I reached to the house of Ragamanjari. She was distressed due to long separation, I consoled her in many ways, passed the remaining part of the night at her residence. In the morning (dawn) I joined Udaraka.

I then went to the respected saint Marichi, who had regain his divine power with the help of penance practised by him after emerging from the calamity of the harlot, and by him I was told that I should thus be able to see you. Simhaghosha was appointed in the place of Kantaka by the king, who was much pleased with him after openly announcing Kantaka's misconduct. He again helped in my entry into the apartment of the princess through the same underground passage from the prison.

Thus, I came in contact with the princess who had developed attachment for me, after hearing the account coming from the mouth of Shrigalika.

At the same time (in these days) Chandavarma attacked and besieged the city, as he was highly enraged at his request

युज्य पुरमवारुणत् । अमर्षणश्चाङ्गराजो यावदरिः पारग्रामिकं विधिमाचिकीर्षति तावत्स्वयमेव प्राकारं निर्भिद्य प्रत्यासन्नानपि सहायानप्रतीक्षमाणो निर्गत्याभ्यधिकबलेन विद्विषा महति संपराये भिन्नवर्मा सिंहवर्मा बलादगृह्यत । अम्बालिकां च बलवदभिगृह्य चण्डवर्मणा हठात्परिणेतुमात्मभवनमनीयत । कौतुकं च स किल क्षपावसाने विवाह इत्यबध्नात् । अहं च धनमित्रगृहे तद्विवाहार्यैव पिनद्धमङ्गलप्रतिसरस्तमेवमवोचम्—'सखे ! समापतितमेवाङ्गराजाभिसरं राजमण्डलम् । सुगूढमेव संभूय पौरवृद्धैस्तदुपावर्तय । उपावृत्तश्च कृत्तशिरसमेव शत्रुं द्रक्ष्यसि'

सिंहवर्मा द्वारा अपनी पुत्री को स्वीकार करने की प्रार्थना अस्वीकृत किए जाने के कारण क्रुद्ध चण्डवर्मा ने आक्रमण कर उसके नगर को घेर लिया ।

असहनशील अंगराज सिंहवर्मा ने, जब तक शत्रु आक्रमण की योजना ही बना रहा था, तब तक स्वयं ही चारदीवारी को तोड़कर समीपस्थ सहायकों की भी बिना प्रतीक्षा किए, नगर से बाहर निकलकर भयंकर युद्ध किया परन्तु उसके अधिक बलशाली शत्रु ने उसके बल को छिन्न-भिन्न कर तथा उसका कवच तोड़कर उसे बलपूर्वक बन्दी बना लिया ।

चण्डवर्मा, अम्बालिका को भी बलपूर्वक पकड़कर बलपूर्वक उससे विवाह करने के लिए अपने भवन में (छावनी में) ले आया। उसने विवाह के रूप में रात्रि के अन्त में उसके गले में मंगलसूत्र बाँधा । इधर मैंने भी धनमित्र के घर में उस राजकुमारी से विवाह करने के लिए ही अपनी कलाई में मंगलसूत्र बाँधा और उससे इस प्रकार कहा—"मित्र ! अंगराज का सहायक राजमण्डल अब निकट ही है—(यहाँ पहुंचना ही चाहता है) ।

---

for the hand of his daughter being turned down by Simha Varma.

The king of Anga, Simha Varma, who was impatient, himself made a breach into the rampart, while the enemy was just planning the siege operation, and without waiting for the help of his allies, who had arrived very near by that time, came out of the city, but having his armour shattered to pieces by his powerful enemy, who was having a big army, in a fierce battle, was forcibly taken captive.

The princess Ambalika was also arrested forcibly, and was carried to his own camp by Chanda Varma, with a view to marry her. It was said that he tied the Mangalsootra (auspicious marriage-string) around her neck, at the close of the night. I also tied the auspicious string to my wrist, at Dhan mitra's house for marrying the same princess. Then I said to him (Dhanamitra) Friend, the allies advancing to help the king of the Angas are very near.

इति। 'तथा' इति तेनाभ्युपगते गतायुषोऽमुष्य भवनमुत्सवाकुलमुपसमाधीयमान-परिणयोपकरणमितस्ततः प्रवेशनिर्गमप्रवृत्तलोकसंबाधमलक्ष्यशस्त्रिकः सह प्रविश्य मङ्गलपाठकैरम्बालिकापाणिपल्लवमग्नौ साक्षिण्याथर्वणेन विधिनार्प्यमाणमादित्समानस्यायामिनं बाहुदण्डमाकृष्य च्छुरिकयोरसि प्राहर्षम्। स्फुरतश्च कतिपयानन्यानपि यमविषयमगमयम्। हतविध्वस्तं च तद्गृहमनुविचरन्वेपमानमधुरगात्रीं विशाललोचनामभिनिशाम्य तदालिङ्गनसुखमनुबुभूषुस्तामादाय

तुम नागरिक वृद्धों के साथ गुप्त मन्त्रणा कर उन्हें और निकट ले आओ। लौटने पर तुम अपने शत्रु को कटे हुए सिर वाला ही देखोगे। उसके 'ठीक है' यह कहकर चले जाने पर (मैं भी) अब गतायु (चण्डवर्मा) के मंगल महोत्सव से परिपूर्ण उस भवन (में पहुँचा) जहाँ लोग इधर-उधर विवाह सामग्री को लाने ले जाने में (संलग्न थे)।

लोक समुदाय कार्यों में संलग्न होकर आने-जाने में (भीतर जाने, बाहर आने में) लगा हुआ था। मैंने भी गुप्तशस्त्र लेकर मंगल पाठ करने वाले ब्राह्मणों के साथ भीतर प्रविष्ट होकर, अग्नि को साक्षी बनाकर यथाविधि पुरोहित द्वारा समर्पित किए जाने वाले अम्बालिका के कर ग्रहण के लिए प्रस्तुत चण्डवर्मा के दीर्घ (लम्बे) बाहू को खींचकर उसकी छाती पर छुरे से प्रहार किया तथा कतिपय उन लोगों को भी मैंने उसके साथ ही यम सदन पठा दिया जो मुझे पकड़ने के लिए झपटे थे।

उसके बाद मृतकों और घायलों से भरे हुए उस घर में घूमते हुए मैंने अतीव सुन्दर तथा भय से विकम्पित शरीर वाली विशाल नयना राजकुमारी को देखा तथा उसके आलिंगन का सुख पाने के लिए उसे लेकर अन्तर्गृह

Now you, conspiring with the elderly citizens, with utmost secrecy, bring them (allies) nearer. When you return you will surely find the enemy's head cut off. When he agreed-saying 'all right' then I entered in the camp of my enemy Chand Varma, who was about to die. This camp or house was full of the bustle attendant of the festival, and wherein the materials for the ceremony were being collected and the people were busy going in and out. I, with concealed weapon entered along with Brahmanas, who were chanting auspicious verses, Chanda Varma's palace. There I saw, Chanda Varma was about to take the delicate and charming hand of Ambalika, which was offered by the officiating priest, with the holy fire as witness. I pulled his long arm and stabbed him in the chest with my dagger. I also sent to the abode of death some other persons, who dared to seize (attack) me.

गर्भगृहमविक्षम् । अस्मिन्नेव क्षणे तवास्मि नवाम्बुवाहस्तनितगम्भीरेण स्वरेणानुगृहीतः' इति ।

श्रुत्वा च स्मित्वा च देवोऽपि राजवाहनः 'कथममि कार्कश्येन कर्णीसुतमप्यतिक्रान्तः' इत्यभिधाय पुनरवेक्ष्योपहारवर्माणम् आचक्ष्व, तवेदानीमवसरः इत्यभाषत । सोऽपि सस्मितं प्रणम्यारभताभिधातुम्—

इति श्रीदण्डिनः कृतौ दशकुमारचरितेऽपहारवर्मचरितं नाम द्वितीय उच्छ्वासः ।।

(भीतरी कक्ष में) में प्रविष्ट हो गया । उसी समय आपके नव-मेघवत् गम्भीर स्वर से मुझे अनुगृहीत (होने का अवसर) प्राप्त हुआ ।

मेरे इतिवृत्त को सुनकर तथा हँसकर महाराज राजवाहन ने कहा—"तुमने तो अपने कर्मों से कर्णिसुत (द्यूतविद्या के आचार्य) को भी मात कर दिया है।' यह कहकर उन्होंने अपहारवर्मा पर दृष्टिपात किया और कहा—"अब तुम्हारी बारी है, अतः (अपना वृत्त) सुनाओ । उसने भी हँसते हुए प्रणाम कर अपना वृत्त इस प्रकार कहने का उपक्रम किया ।

"महाकवि दण्डीकृत दशकुमार चरित में—'अपहारवर्मा चरित' नामक दूसरा उच्छ्वास पूर्ण हुआ ।"

Then I started moving here and there in that house, in which some were killed and some were smitten down. I saw (in one room) the princess with long eyes, her charming limbs were trembling with fear. I took her with me and entered in an inner apartment with the desire to enjoy the pleasure of her embrace in private. At that very moment I was favoured by your voice, which was resembling the sound of fresh clouds.

Having heard this account, Raja Vahana smiled and said—"By these desperate deeds (fool hardiness) you have even surpassed Karnisuta (the founder of gambling). Then he turned his eyes to Upahara Varma and said to him to narrate his story with these words—"Now you please commence, it is your turn." He bowed with a smile and began his narration thus.

"The end of Apaharvarma Charita, Second Ucchovasa of Dashkumar Charita of Dandin."

आवश्यक नोट्स

'कविवर दण्डी'

कविवर दण्डी दक्षिण भारत के रहने वाले थे। आधुनिक नगरी 'कांजीवरम्' इनकी जन्मभूमि थी। 'काञ्ची' के पल्लव नरेशों की छत्रछाया में कवि ने अपने दिन सुखपूर्वक बिताए थे। अपने आश्रयदाता पल्लव नरेश के पुत्र को शिक्षा देने के लिए दण्डी ने 'काव्यादर्श' की रचना की थी। कवि ने निम्नलिखित प्रहेलिका में काञ्ची के पल्लवों की ओर इङ्गित किया है।

नासिक्य मध्या परितश्चतुर्वर्ण विभूषिता।
अस्ति कांचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वयानृपाः॥

अतएव दण्डी को काञ्ची के पल्लव नरेशों का आश्रित मानना इतिहास तथा किम्वदन्ती दोनों से सिद्ध होता है।

इनके पूर्व पुरुष थे इतिहास विश्रुत कविवर भारवि। भारवि के तीन पुत्र हुए जिनमें मध्यम था 'मनोरथ'। मनोरथ के चार पुत्र हुए जिनमें वीरदत्त सबसे छोटा था। वीरदत्त प्रकाण्ड पण्डित एवं सुयोग्य दार्शनिक थे और यही कालान्तर में कविवर दण्डी के पिता बने। दण्डी की माता का नाम था 'गौरी'।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार कवि के माता-पिता बचपन में ही दिवंगत हो गए थे, अतः कवि का बचपन निराश्रित रूप में ही कांची में व्यतीत हुआ। एक बार विप्लव हो जाने के कारण इन्हें पर्याप्त समय तक इधर-उधर भटकना पड़ा। अनन्तर विप्लव शान्त होने पर पुनः पल्लव नरेश की सभा में आ गए और वहीं रहने लगे।

नवम शताब्दी के ग्रन्थों में दण्डी का नामोल्लेख पाए जाने से निश्चित है कि उनका समय उक्त शताब्दी के पीछे कदापि नहीं हो सकता। 'काव्यादर्श' में उल्लिखित राजवर्मा (रातवर्मा) को यदि हम नरसिंहवर्मा द्वितीय (जिसका विरुद अथवा उपनाम राजवर्मा था) मान लें तो किसी प्रकार की अनुपपत्ति उपस्थित नहीं होती। प्रो० आर० नरसिंहाचार्य तथा डॉ० बेलवलकर ने भी इन दोनों की एकता मानकर दण्डी का समय सातवीं सदी का उत्तरार्ध बताया है। शैव धर्म के उन्नायक पल्लवराज नरसिंहवर्मा का समय ६९० से ७१५ ई० है। अतः इनके सभाकवि दण्डी का समय सातवीं सदी के अन्त तथा आठवीं

सदी के आरम्भ में मानना उचित प्रतीत होता है। इनके तीन ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं—काव्यादर्श, दशकुमार चरित तथा छन्दोविचिति। इन तीनों में 'दशकुमार चरित' एक विश्व विश्रुत तथा प्रौढ़ रचना है। संस्कृत साहित्य की गद्य काव्यत्रयी में अपने आख्यानों की रोचकता, कौतुहलपूर्णता एवं रोमाञ्चकता के कारण 'दशकुमार चरित' अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इसमें दस कुमारों (राजपुत्रों) का चरित्र वर्णित है।

दशकुमार चरित्र का कथानक—

'दशकुमार चरित' का कथानक एक घटनाप्रधान कथानक है। जिसमें नाना प्रकार की उल्लासमयी रोमाञ्चक घटनायें पाठकों के हृदय में कभी विस्मय, कभी विषाद की रेखाएँ खींचने में नितान्त समर्थ होती हैं।

पुष्पपुरी (पटना) का राजा राजहंस मालवेश्वर मानसार को परास्त करता है परन्तु तपस्या के बल से पुनः शक्ति सम्पन्न हो मानसार पाटलीपुत्र पर चढ़ाई करता है और इस युद्ध में राजा राजहंस हार जाता है। युद्ध में हारे हुए राजहंस को रथ के घोड़े भयंकर विपिन (विन्ध्याटवी) में ले आते हैं। यहीं जंगल में राजवाहन का जन्म होता है तथा अन्य मन्त्रियों के भी पुत्र होते हैं। बड़े होकर ये यात्रा के निमित्त विभिन्न देशों में जाते हैं। भाग्य विपर्यय के कारण ये नाना प्रकार के कष्टों को सहते हुए बड़ा संकटपूर्ण एवं विचित्र जीवन बिताते हैं। अन्त में इन सबकी भेंट राजवाहन से होती है और ये उसे अपनी यात्रा का रोमांचक वर्णन सुनाते हैं। इन्हीं घटनाचक्रों के सुन्दर, आकर्षक और रुचिर गुम्फन से गुम्फित यह आकर्षक आख्यान 'दशकुमार चरित' कहलाता है। रोमांचक, साहस तथा विस्मयपूर्ण घटनाओं से पूर्ण होने के कारण 'दशकुमार चरित' का वातावरण नितान्त आधुनिक है। छल-कपट, मार-काट, सत्य-झूठ से ओत-प्रोत होने के कारण यह एक नितान्त आधुनिक एवं सजीव रचना है। कवि दण्डी की प्रतिभा घटनाओं की यथार्थता में चरितार्थ होती है। यथार्थवाद यहाँ पदे-पदे प्रतिबिम्बित हुआ है।

कविवर दण्डी ने समाज का अपनी गहरी एवं पैनी दृष्टि से खूब अध्ययन किया था। दण्डी के समय का समाज कैसा था, ब्राह्मण कितने पाखण्डी थे, तपस्वी कितने दम्भी थे, वेश्याएँ कितनी धूर्त थीं, वे समाज को, राजाओं और भोले-भाले तापसों को किस प्रकार ठगती थीं इत्यादि बातों का दण्डी ने बड़ा ही सूक्ष्म एवं हृदयग्राही वर्णन किया है। नारी हृदय का भी कवि को सूक्ष्म ज्ञान था, इसीलिए कहीं पतिवंचक क्रूरहृदया नारी का जघन्य चित्र उन्होंने प्रस्तुत कर पाने में सफलता प्राप्त की है और कहीं पतिव्रता, पतिपरायणा नारी के कोमल हृदय की झाँकी इस खूबी के साथ प्रस्तुत की है कि पाठक का हृदय भाव-विभोर होकर रह जाता है। 'धूमिनी' जैसी क्रूरहृदया नारी के चित्रण के लिए आलोचकवर्ग सदैव दण्डी का ऋणी रहेगा।

तत्कालीन समाज में प्रचलित विभिन्न परिपाटियों और पद्धतियों का कवि ने सुन्दर उल्लेख किया है—जैसे—गाँवों में मुर्गों का युद्ध, बलाका जाति का श्वेत मुर्गा, नारिकेल जाति का काला मुर्गा, पान खाने की विशेष पद्धति आदि। आगत अभ्यागत का कपूर से सुगन्धित पान देकर स्वागत किया जाता था। आज की तरह बाघ का चर्म तथा मशक बेचने की प्रथा जोरों पर थी। उस समय जब मनोरंजन के लिए कामोत्सव (होली) मनाया जाता था, तब कुएँ से जल निकालने के लिए वंशा नाली का प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार दण्डी जनता के कवि हैं। जन-जीवन की स्थूल एवं सूक्ष्म सभी बातों का कवि ने बहुत ही प्रसादमयी भाषा में अतीव सुन्दर, सजीव एवं मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

श्री द्वारिकाप्रसाद सक्सेना के अनुसार "कविवर दण्डी ने काव्यादर्श में शैली तथा कथावस्तु के सम्बन्ध में जिन नियमों का विधान किया है उन्हीं का पूर्णतः पालन दिखाने के लिए उन्होंने 'दशकुमार चरित' की रचना की है।··· इसे धूर्तों का रोमांस कहा जा सकता है, क्योंकि छल-कपट, मारकाट तथा चोरी आदि से ओत-प्रोत यह एक सजीव कृति है। व्यंग्य और विनोद का पुट देकर इसमें तत्कालीन समाज का अति रोचक चित्रण किया गया है। इसमें कुछ अलौकिक तथा लौकिक घटनाओं का बड़ी विशदता और विदग्धता के साथ वर्णन हुआ है। इसमें कवि ने यह स्पष्ट रूप से बताया है कि उनके काल में लोग जूआ खेलने में, चोरी करने में, सेंध लगाने में तथा अन्याय ऐसी ही दूसरी बातों में बड़े सिद्धहस्त थे···।"

शैली—'दशकुमार चरित' में कवि की शैली अतीव सुन्दर और हृदयग्राही है। उनका गद्य सरस, सुबोध एवं प्रवाहमय है, श्लेष के बोझ से न तो कहीं दबा हुआ है और न समास के प्रहार से प्रताड़ित। उनका गद्य दिन-प्रतिदिन के व्यवहार के योग्य, सजीव और चुस्त है। दण्डी सुभग और मनोरम वैदर्भी गद्य शैली के आचार्य हैं। गद्य की प्रासादिकता दण्डी की निजी विशेषता है। इनकी भाषा सीधी-सादी, अलंकारों के अनावश्यक आडम्बर से शून्य, प्रवाहपूर्ण, मँजी हुई और मुहावरेदार है। गद्य के इतिहास में कविवर दण्डी का अपना निजी मार्ग है, अपनी मौलिक विशेषता है। 'सुबन्धु' के गद्य के समान न तो इनके गद्य में श्लेष का बाहुल्य है और न 'बाण' के गद्य की भाँति 'सरस स्वर वर्ण पद' से सुशोभित गद्य का आदर्श ही है। इन्होंने सुबन्धु या बाण भट्ट की शैली का अनुकरण न कर अपनी एक नई शैली की उद्भावना की है और उसमें दिग्दर्शित अर्थ की स्पष्टता, उसकी सरस अभिव्यक्ति, पद का लालित्य, तथा जन-जीवन की भाषा का प्रयोग अर्थात् उसके दैनंदन प्रयोग की क्षमता, चारुता तथा कल्पना की उर्वता दण्डी की शैली के विशेष गुण हैं। 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह उक्ति आज भी उतनी ही प्रिय एवं विद्वज्जनों के गले का हार है जितनी पहले कभी थी और उसमें जरा भी अतिश्योक्ति नहीं है। इनके वाक्य जहाँ लम्बे हैं, वहाँ उनमें लालित्य है, जहाँ छोटे हैं वहाँ पूर्णतः अभिव्यंजक एवं

सरस हैं। यत्र तत्र दण्डी भाषा को अवश्य थोड़ा-बहुत सजाना नहीं भूलते। उनकी सरलता एवं सुबोधता को देख कर एक आलोचक ने तो यहाँ तक लिखा है—"कविर्दण्डी, कविर्दण्डी, कविर्दण्डी न संशयः।" इस प्रकार दण्डी का गद्य प्रतिदिन के व्यवहार योग्य गद्य का सजीव रूप प्रस्तुत करता है। वे जनता के कवि हैं और इसीलिए उनके गद्य में जनता के सुख-दुख आनन्द आदि का परिस्फुरण पर्याप्त मात्रा में मिलता है। श्री बलदेव उपाध्याय ने इनकी शैली के सम्बन्ध में लिखा है—

"दण्डी की गद्य की शैली बड़ी ही सुबोध, सरस तथा प्रवाहमयी है। उनका गद्य न तो श्लेष के बोझ से कहीं दबा हुआ है और न कहीं समास से प्रताड़ित है। उनका गद्य दिन-प्रतिदिन के व्यवहार योग्य, सजीव और चुस्त है। उसकी प्रासादिकता दण्डी की निजी विशेषता हैं। ये अपनी भाषा को अलंकारों के आडम्बर से सदा बचाते हैं। इसलिए भाषा प्रवाहपूर्ण मँजी हुई और मुहावरेदार है। सौबन्धव गद्य के समान न तो यह प्रत्यक्ष श्लेषमय है और न वाणीय गद्य के सदृश्य यह समासों से लदी हुई तथा गाढबन्धता से मण्डित है। तथा यह है कि गद्य के इतिहास में दण्डी का अपना निजी मार्ग है। वे सुबन्धु तथा बाण इन दोनों की शैली का अनुगमन न कर एक नवीन प्रकार की शैली के उद्भावक हैं, जिसके विशेष गुण हैं—अर्थ की स्पष्टता, रस की सुन्दर अभिव्यक्ति, पद का लालित्य तथा दैनंदिन प्रयोग की क्षमता। 'दण्डिनः पदलालित्यम्' के ऊपर पण्डित समाज आज भी स्वयं को निछावर किए हुए है।"

कवि की एक अन्य विशेषता 'दशकुमार चरित' की उत्तरपीठिका के सप्तम् उच्छ्वास में दृग्गोचर होती है। यह पूरा उच्छ्वास ओष्ठ्य वर्ण रहित है। ओष्ठ्य-वर्ण का परिहार विश्व साहित्य में एक अपूर्व वस्तु है। ओष्ठ्य वर्ण का परिहार करने पर भी शब्द सौष्ठव एवं पदलालित्य में न्यूनता नहीं आई है।

'दशकुमार चरित' के अध्ययन के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि दण्डी के कथानकों में कौतुक और विस्मयजनक घटनाओं की प्रचुरता के कारण अद्भुत रस का संचार प्रकर्षेण हुआ है। इनके ग्रन्थ के अध्ययन से यह भी स्पष्ट रूप में लक्षित होता है कि दण्डी नाना शास्त्रों के पारंगत विद्वान् थे अन्यथा राजनीति का इतना सरस साथ ही सुन्दर एवं सूक्ष्म वर्णन, काम-शास्त्र के गूढ़ तत्वों का प्रकटीकरण तथा चोरशास्त्र की अद्भुत बातें भला वे किस प्रकार लिख पाते ?

यद्यपि कवि राजाओं के आश्रित थे, तथापि उनके गद्य काव्य में जनता की हँसी-खुशी, सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, खेल-कूद, आमोद-प्रमोद तथा आचार-विचार की पूर्ण, सयुक्तिक जानकारी पाकर पाठक का हृदय आनन्द से गद्गद् होकर कवि के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है। और फिर कवि की सच्ची प्रतिभा गद्य में ही होती है। जैसा कि कहा है—"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति" इस

उक्ति की दृष्टि से कवि दण्डी अत्यन्त सफल एवं अपने पद पर पूर्ण सम्मान के साथ प्रतिष्ठित दृष्टिगत होते हैं। कुछ सुन्दर संस्कृत शब्दों को प्रयोग में लाने का स्तुत्य प्रयास कवि ने किया है। जैसे पानदान के लिए—'उपहस्तिका', लंगोटी के लिए मलमल्ल', भूसी के लिए—'किशास', तथा तक्र के लिए 'कालशेय', युद्धपोत के लिए—'मद्गु' जनपदीय सभा के लिए—'पञ्चवीर गोष्ठ', एक जोड़ा धोती के लिए—'उद्गमनीय', पानी के डोल के लिए—'उदञ्चन' आदि ऐसे ही अभिनव सांस्कृतिक प्रयोग हैं। उक्त विशेषताओं से सम्पन्न कवि मूर्धन्य स्थान पर पूर्ण वैभव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

अपहारवर्मा चरित—कथासार—

अपने भ्रमण काल में अपहारवर्मा महर्षि मरीचि से मिलता है और उन्हीं के द्वारा अपने स्वामी राजवाहन के सम्बन्ध में समाचार प्राप्त करता है। सन्त उसे उसके स्वामी से मिला देने का वायदा कर उसे चम्पा नगरी में रहने का निर्देश देते हैं। इसी समय महर्षि मरीचि काममंजरी नामक वेश्या के सम्पर्क में आते हैं और उसे ईश्वरोन्मुख बनाने के प्रयास में श्रीमद्भागवत की इस उक्ति को सार्थक आते हुए—

"मात्राऽस्वस्त्रा दुहित्रावा न विविक्तासनो भवेत्।
प्रबलः इन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति॥

अर्थात् व्यक्ति को माँ, बहन बेटी के साथ भी एकान्त में नहीं रहना चाहिए। उसके अप्रतिम सौन्दर्य तथा कामुक चेष्टाओं से अभिभूत हो, उसके प्रेमपाश में पड़ अपने वर्णाश्रम धर्म का परित्याग कर उसके पीछे चल पड़ते हैं और वह उन्हें राजा के सामने ले जाकर, उन्हें जीतने विषयक अपनी सफलता का रहस्योद्घाटन कर उन्हें सारे समाज की हँसी का पात्र बना देती है।

दूसरी ओर अपहारवर्मा मरीचि के आश्रम में एक रात रहकर चम्पा नगरी की ओर चल पड़ता है और मार्ग में विमर्दक को अपना मित्र बनाता है। विमर्दक एक सज्जन पुरुष था परन्तु काममंजरी ने उसका सर्वस्व अपहरण कर उसे पूरी तरह भिखारी बना डाला था। अपहार उसके सौभाग्य को लौटाने का वायदा कर स्वयं जुआरी और चोर का व्यवसाय अपना लेता है। एक दिन अपने रात्रिकालीन व्यवसाय के सम्बन्ध में घूमते हुए उसकी भेंट कुबेर दत्त की सुन्दरी, तरुणी पुत्री कुलपालिका से होती है। उसके पिता ने पहले धन-मित्र के साथ उसके विवाह का वायदा किया था परन्तु अपनी उदारता के कारण निर्धन हो जाने से अब वह अपने वचन को (अपनी पुत्री का धनमित्र के साथ विवाह करने को) पूरा करने के लिए तैयार न था। कुलपालिका धनमित्र से प्रेम करती थी, परन्तु अब उसका पिता उसका विवाह अपने वचन के अनुसार धनमित्र से न कर एक दूसरे धनिक अर्थपति से करना चाहता था। यह देख-कर वह उस रात धनमित्र के घर इस उद्देश्य से जाना चाहती थी जिससे इस

विवाह से बच सके। अपहारवर्मा की भेंट इसी अवसर पर रात्रि के निबिड़ अन्धकार में उसके साथ हुई। उसने उसकी सहायता करने का वचन दिया तथा उसे उसके प्रेमी के यहाँ पहुँचाया, और स्वयं धनमित्र तथा कुलपालिका के साथ कुलपालिका के पिता के घर की ओर उसे सुनिश्चित ढंग से लूटने के विचार से लौटा। उन्होंने कुलपालिका को तो घर पर छोड़ा परन्तु लौटते हुए मार्ग में पड़ने वाले अर्थपति के घर का सर्वस्व अपहरण कर लिया। इन्हीं झंझटों में कुलपालिका का विवाह एक मास के लिए टल (स्थगित हो) गया। अपहारवर्मा ने अपनी चोरियों के बल पर धनमित्र को सम्पन्न बना दिया और उसे किसी भी संभावित विपत्ति से बचाने के लिए सारे नगर में यह अफवाह उड़ा दी कि धनमित्र के पास एक ऐसा धन देने वाला जादुई बटुवा है, जो उसे प्रतिदिन पर्याप्त स्वर्ण प्रदान करता है। यह सुनकर कुबेरदत्त अपनी पुत्री कुलपालिका का विवाह धनमित्र के साथ कर देता है। इसी समय अपहारवर्मा काममंजरी की छोटी बहन रागमंजरी के प्रेम में फँस जाता है और काम-मंजरी को धनमित्र के धन वाले जादुई बटुवे को दिला देने का वायदा इस शर्त पर कर कि वह "उन सब व्यक्तियों का धन लौटा देगी, जिन्हें उसने लूटा है। अन्यथा बटुवा प्रभावहीन हो जाएगा" उसकी बहन रागमंजरी से विवाह कर लेता है और रागमंजरी के उस पावन उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होता है, जिसके अनुसार वह एक चतुर, बहुकला प्रवीण, योग्य व्यक्ति के साथ विवाह कर कुलीन नारी की भाँति रहना चाहती थी। काममंजरी अपहारवर्मा की शर्त को स्वीकार कर लेती है। अपहारवर्मा उसे वह बटवा सौंप देता है परन्तु धनमित्र को उसका बटुवा वापिस मिल जाता है क्योंकि अपहारवर्मा के निदेशा-नुसार 'धनमित्र' राजा से इसकी शिकायत इन शब्दों के साथ कर देता है कि— "आजकल काममंजरी जिस प्रकार मुक्त हस्त होकर धन बाँट रही है, उससे यही जान पड़ता है कि मेरा बटुवा उसके हाथ लग गया है।" विवश होकर उसे वह बटुवा लौटाना पड़ता है और सजा से बचने के लिए अपहार के निदेशानुसार राजा से यह कहना पड़ता है कि 'उसे यह बटुवा' अर्थपति ने दिया था। राजा उससे यह जानकर अर्थपति का सर्वस्व छीनकर उसे अपने राज्य से निकाल देता है।

एक रात चोरी के लिए निकले हुए अपहारवर्मा की मुठभेड़ नगर रक्षकों से हो जाती है। उसे पकड़ कर जेल में भिजवा दिया जाता है। कारापति (जेलर) कान्तक राजकुमारी अम्बालिका के प्रति कामुक भावना रखता है और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए, जेल से राजकुमारी अम्बालिका के कक्ष तक सुरंग बनाने के लिए एक कुशल चोर की सेवाएँ प्राप्त करता है। अपहार वर्मा अपने बल-पौरुष की सहायता से सुरंग बनाने में सफलता तो पा लेता है परन्तु कान्तक को मार डालने का विचार भी कर लेता है। वह सुरंग द्वारा राजकुमारी के महल में पहुँचकर उसे अतीव आकर्षक मुद्रा में सोई हुई

पाता है और तत्काल उसके प्रेम में फँस जाता है। वह बिना उसे जगाए, उसका चित्र फलक पर बना, उसके चरणों में नतमस्तक अपना चित्र बना और यह सन्देश छोड़कर कि उसका इस रूप में नहीं बल्कि उसकी पत्नी के रूप में उसके साथ सोना ही अधिक अच्छा होगा।" चुपचाप वहाँ से निकल जाता है। अन्त में चण्ड वर्मा चम्पा नगरी का घेरा डालता है और सिंहवर्मा और अम्बालिका को बन्दी बना, अम्बालिका के साथ विवाह रचाने लगता है, तभी अपहारवर्मा अवसर पाकर उसका वध कर देता है और अपनी प्रिय राजकुमारी अम्बालिका को अपनी बना लेता है। बाद में महर्षि मरीचि की भविष्यवाणी के अनुसार उसकी भेंट अपने स्वामी राजवाहन से हो जाती है और अपहारवर्मा चरित पूर्ण हो जाता है।

प्रमुख चरित्र

१. **अपहारवर्मा**—अपहारवर्मा 'अपहारवर्मा चरित' का नायक है। यह एक कुशाग्र बुद्धि, सफल योजनाएँ बनाने वाला, अपने वचनों की प्राण पण से रक्षा करने वाला, विश्वस्त और सहायक मित्र तथा अनुरागमय प्रेमी है। धूर्तों और वेश्याओं से किस प्रकार निपटना चाहिए, यह बात यह भली भाँति जानता है और इसीलिए काममंजरी जैसी धूर्त वेश्या को अपने निदेशानुसार चलाने में, सफल होता है। धनमित्र को उसका लुटा हुआ धन दिला देना, कुलपालिका को उसके प्रेमी के साथ विवाहना, अर्थपति को अनर्थ पति रूप में परिणत कर निर्वासित कराना, कुबेरदत्त को अपनी पुत्री कुलपालिका का विवाह पुनः धनमित्र के साथ करने पर बाध्य करना, अपहारवर्मा की प्रत्युत्पन्न मति, कुशलता तथा सफल योजना का ही परिणाम है। रागमंजरी जैसी वेश्या को आकृष्ट कर उसके साथ विवाह कर लेना, प्रमुख जुआरी को मित्र बनाने में सफलता प्राप्त करना, कान्तक को षड्यन्त्र का शिकार बना अपने जेल के मित्र सिंहघोष को उसके पद पर प्रतिष्ठित कराना अपहारवर्मा की कुशलता के परिचायक प्रसंग है। अपनी प्रत्युत्पन्न मति के कारण ही वह नगर रक्षकों के हाथ से स्वयं को और शृगालिका को बचाने में सफल होता है। वह कोरा भावुक प्रेमी नहीं अपितु कुशल चित्रकार भी है और इसी लिए काष्ठ फलक पर राजकुमारी अम्बालिका और अपना चित्र बनाकर तथा नीचे अपना मनोरथ लिखकर उसके द्वारा तथा शृगालिका द्वारा राजकुमारी के मन में अपने प्रति प्रेम जगाने में सफल होता है। अपने बुद्धिबल द्वारा सुरंग बनाकर राजकुमारी के महल में पहुँच जाना, सिंहघोष द्वारा अपने मार्ग के काँटे 'कान्तक' को निकलवा फेंकना उसके सच्चे प्रेम और साहस के प्रतीक भूत प्रसंग हैं। वह इतना निडर है कि चण्डवर्मा के यहाँ मात्र एक गुप्ती लेकर जा पहुँचता है और सबके देखते देखते उसे उसके साथियों सहित समाप्त कर अपनी प्रेकिका को हथिया लेता है। राजवाहन के शब्दों में अपहारवर्मा अपने कार्यों से कर्णिसुत (द्यूत विद्या के

आचार्य) को भी मात देने वाला धीर, वीर, साहसी, सत्यप्रतिज्ञ, प्रेमिल तरुण है।

२. **मरीचि**—महर्षि मरीचि एक साधनारत, सांसारिक बातों से दूर रहने वाले आयुप्राप्त सन्त हैं। इन्हें दिव्य दृष्टि अपनी तपस्या के बल से प्राप्त हुई है जिसके द्वारा ये भूत, वर्तमान और भविष्य की बातें बताने में समर्थ हैं। ये काममंजरी के छल का शिकार बनकर उसे कुछ समय अपने आश्रम में रहने देते हैं और भुला देते हैं कि संगति का प्रभाव विशेषकर स्त्रियों की संगति का प्रभाव अवश्यंभावी होता है। परिणाम कुछ ही समय में सामने आ जाता है। वह वेश्या उन्हें लुभाकर उनका न केवल तप भंग करने में सफल हो जाती है। बल्कि उन्हें ऐसी स्थिति में पहुँचा देती है जहाँ वे लोगों की हँसी का पात्र बनकर रह जाते हैं। परन्तु यह ठोकर खाकर वे फिर सँभल जाते हैं और पुनः तपस्या कर अपनी दिव्य शक्ति (दृष्टि) प्राप्त कर अपहारवर्मा को राजवाहन का अता-पता बताने में सफल होते हैं।

३. **धनमित्र**—धनमित्र अथवा उदारक अपहार वर्मा के साथ अपनी प्रेमिका कुल पालिका के कारण, मित्रता स्थापित करता है। उत्तरोत्तर उसकी मित्रता अपहार के साथ बढ़ती चली जाती है और उसी के परिणामस्वरूप यह न केवल अपनी प्रेमिका से विवाह कर पाता है बल्कि काममंजरी द्वारा अपहृत धन को भी लौटालने में सफलता प्राप्त करता है। यह सदैव अपहारवर्मा का साथ देकर मित्रता का आदर्श प्रस्तुत करता है। उदारतापूर्वक दान देने के कारण इसका नाम ही उदारक पड़ जाता है। संक्षेप में यह अतिशय उदार, कार्य-साधन कुशल, सच्चा प्रेमी तथा सहृदय एवं निष्ठावान् मित्र है।

४. **काममंजरी**—यह चम्पा की अतीव सुन्दर, चंचल और आकर्षक वेश्या है। प्रेमियों को आकर्षित कर उनका सर्वस्व छीनकर उन्हें नंगा बना देना इसके व्यवसाय का अंग ही नहीं धर्म है। यह एक दूसरी वेश्या के साथ शर्त लगाकर ऋषि मरीचि को अपने पथ से विचलित करने में सफलता प्राप्त करती है परन्तु अपहारवर्मा के कौशल का शिकार बन धनदायी बटुवे को पाने के लालच में न केवल अपनी बहन रागमंजरी को ही उसे सौंप देती है बल्कि अपने शिकारों का धन लौटाते-लौटाते स्वयं अपहार की नीति का शिकार हो जाती है और अर्थपति को झूठ-मूठ राजा के क्रोध का भाजन बना देती है। मगर के आँसू बहाने वाली इस वेश्या के सम्बन्ध में केवल यही कहना पर्याप्त है कि यह बड़ी व्यावसायिक, धनलोलुप, धूर्त और चरित्रहीन नारी है।

५. **शृगालिका**—यह कुट्टिनी है और अपहार की सहायिका भी। इसी की सहायता से अपहार राजकुमारी के मन में प्रेम जगा पाने में सफल होता है। यह इतनी प्रत्युत्पन्न मति है कि दूसरे के मनोगत भाव को सहज ही भाँपकर तद्वत आचरण कर उसका मनोरथ पूरा कर देती है। अपहार की नगर रक्षकों के साथ मुठभेड़ होने पर यह उसके कथन मात्र से उसकी चाल जानकर उसके

पागलपन का ऐसा चित्र खींचती है कि सबको उसके कथन पर विश्वास हो जाता है और दोनों बेदाग बच निकलते हैं। जेल में रहते हुए भी अपहार इसी की सहायता से अपनी कतिपय योजनाओं को सफल कर पाता है। संक्षेप में यह अतीव धूर्त, कुशाग्रबुद्धि, सच्ची सहायिका एवं कार्यसाधिका है।

६. **कुलपालिका**—यह एक आदर्श भारतीय नारी है जो इस बात में विश्वास करती है कि सम्बन्ध जिससे एक बार हो गया, हो गया। इसी विश्वास के कारण यह अपने स्वजनों और पितृगृह को रात्रि के अंधकार में छोड़कर धनमित्र के घर की ओर चल पड़ती है और भाग्यवश अपहारवर्मा से जा मिलती है। अपहार की सहायता से यह अपने प्रेमी के साथ विवाह कर पाने में सफल होती है।

७. **रागमंजरी**—यह यद्यपि काममंजरी की छोटी बहन है, परन्तु इसके चरित्र में उन सब दोषों का अभाव है जो काममंजरी में हैं। वेश्या के यहाँ जन्म लेने पर भी यह वेश्यावृत्ति से घृणा करती है। इसका कहना है कि मैं धन से नहीं केवल गुणों से और वह भी विवाह विधि से ही अपनायी जा सकती हूँ। यह अपूर्व सुन्दरी और भावुक है। अपहार इसके आदर्शों, गुणों और सौन्दर्य पर रीझकर अतीव चतुरतापूर्वक इसका हृदय जीत कर तथा इसकी माता और बहन को चुपचाप प्रभूत धन से सन्तुष्ट कर इसका पाणिग्रहण करने में सफलता प्राप्त करता है। यह अपहार को कितनी प्रिय है इसका अनुमान केवल इसी से लगाया जा सकता है कि जेल से निकलने के बाद अपहार पुनः इसी के यहाँ जाता है और दोनों जागकर रात्रि का शेष भाग बिताते हैं। यह भी आदर्श भारतीय नारी के रूप में ही कवि द्वारा चित्रित हुई है।

८. **राजकुमारी अम्बालिका**—चम्पा नरेश सिंहवर्मा की यह दुहिता अतीव सौन्दर्यशालिनी थी। इसके सौन्दर्य और देह तथा शयन-मुद्रा के वर्णन में ही कवि ने अपनी लेखनी-कूची को इस प्रकार प्रयुक्त किया है कि मूर्तिमान सौन्दर्य ही सामने आ खड़ा होता है। यह तारुण्य की भावनाओं से सर्वथा अपरिचित थीं। परन्तु कपोत मिथुन की केलि देखकर इसके हँस पड़ने से कान्तक को कुछ भ्रम इसके प्रति हो गया था। अपहार ने शृगालिका द्वारा उसका हृदय जीत, चण्डवर्मा का संहार कर इसे अपना बनाने में सफलता प्राप्त की।

९. **अर्थपति**—यह चम्पा नगरी का प्रमुख धनी और महा कंजूस व्यक्ति है। कुबेरदत्त इसके धन के कारण ही अपनी पुत्री कुलपालिका का विवाह धनमित्र के स्थान पर इससे करना चाहता है परन्तु अपहार की कूटनीति का शिकार होकर इसे धन, स्वदेश और कुलपालिका—तीनों से हाथ धोना पड़ता है।

१०. **कान्तक**—यह चम्पा नगरी के कारागार का अध्यक्ष है। कामाशक्त कपोत मिथुन को देखकर राजकुमारी के हँस पड़ने पर यह उसका कुछ और अर्थ लगाकर उसे अपनी वासना-पूर्ति का साधन बनाने के लिए सुरंग बनाने की योजना बनाता है, परन्तु राजकुमारी तक जा पहुँचता है पहले अपहार और

वह उसके प्रेम में फँसकर अपने एक जेल के साथी प्रमुख नागरिक सिंहघोष द्वारा उसकी राजकुमारी के प्रति विकार-दृष्टि का प्रचार करा और स्वयं उसे समाप्त कर वहाँ से निकल जाता है। यह कर्तव्यहीन दुष्ट प्रवृत्ति का राज-कर्मचारी हैं। इसके माध्यम से दण्डी ने तत्कालीन जेलों की स्थिति का पर्दाफाश किया है।

सिंहघोष—यह चम्पा का एक प्रतिष्ठित नागरिक है जो राजा की अकृपा के कारण जेल में बन्द है। अपहारवर्मा की वहीं इससे मित्रता हो जाती है जिसके फलस्वरूप अपहार कान्तक का वध कर, इसके द्वारा यह समाचार फैला न केवल इसे जेल से मुक्त करने में सफलता प्राप्त करता है बल्कि इसी को राजा प्रसन्न होकर वही पद दे देते हैं जिस पर कान्तक का अधिकार था। संक्षेप में यह एक सच्चा सहयोगी और प्रभावपूर्ण चरित्र का स्वामी है।

Apahara Varma Charita

Some Important Notes

THE AUTHOR DANDIN

Life History : Like other Sanskrit writers, Dandin has observed a complete silence about himself. There is no source to get reliable biographical details about him. The traditional source only somehow helps to gain some knowledge about this great scholar of Sanskrit language.

This great scholar was a resident of Southern India. The modern city "Kanjivaram" was his birth place. He spent much of his time happily under the shelter of Pallava kings of Kanchi. He wrote his great work "Kavyadarsh" for his master's son, with an idea to teach him through it or to provide him sufficient knowledge of Sanskrit literature through this work. In the following prahelika (a conundrum) he clearly mentioned the Pallava kings—

नासिक्य मध्या परित श्चतुर्वर्ण-विभूषिता ।
अस्ति कांचित्पुरी मस्यामष्ट वर्णाह्वयानृपा: ।।

So, through history and tradition both, it appears that this great scholar was a dependent of Pallava kings.

Dandin was born in the well-known scholar family of Southern India. His grand father was great Sanskrit poet "Bharavi", Bharvi had three sons, among them 'Manoratha' was middle one. Manoratha was having four sons. Among them Veerdatta was the youngest one. But he was a great scholar and an able philosopher. This Veeradatta was the father of Dandin, and his (Dandi's) mother was Gauri.

As the parents of Dandin expired in his childhood only, so he spent a long period of his life in Kanchi, in helpless position.

Once, during violation, again he became helpless, and started wandering here and there, but as soon as it ended he returned to the court of Pallava king and remained there for uncertain period.

As in the works of 9th century the name of Dandin is mentioned clearly so, undoubtedly we can have an idea about his period and we cannot put his period behind to this (i.e. 9th century). If the name of Rajavarma or Rata Varma, which is mentioned in "Kavyadarsha", is accepted as of Narsimha Varma II, (whose proclaimed or pen name was Raja Varma) then this inapplicability removes itself.

Prof. R. Narsimhacharya and Dr. Belvalkar, accepting the unity of the both, decided the period of Dandin, as the later part of the 7th century. Pallava king Narsimha Varma, the elevater of Shaiva Dharma (religion related to God Shiva) was ruling over Kanchi during 690-715. So, on the basis of his period we can consider the period of Dandin. It must be the ending period of 7th century and beginning period of 8th century.

His well known works are three namely Kavyadarsh, Dashkumar Charita and Acchando Vichiti. Among these "Dashakumar charita" is a famous work. This is considered as a mature work of Dandin as well of Sanskrit literature. Among the three best prose works of Sanskrit literature 'Dashakumar charita' has an important place, due to its pleasant stories full of vehemence and horripilation (thrill). As we know through its name, the story (adventures) of ten prince's is described in it.

Its tale or plot is full of various events, in which different pleasant and thrilling events succeed to draw a line on the board like hearts of the people, sometime of vehemence and sometime of sadness.

Brief story of Dashakumar charita :

The king of Patna (Pushpapuri) Rajahansa by name, defeats Mana sara, the king of Malawa. But through penance he regains more power and attacks patna. In this war king Rajahansa gets defeated. The horses of that defeated king Rajahansa bring him (carry him) in Vindhyatavi a dangerous jungle. Rajavahana the hero of Dashakumar charita is born here and the other ministers also get sons at the same time in the same jungle. When grown up, these go to different countries for an expedition. Due to their bad luck facing different or various difficulties they lead a life full of calamities incidents. At last they meet with Rajavahama and tell him their story. Due to the beautiful and attractive narration of various

events this is named as "Dashakumar charita". As it is full of vehemence, daring and pleasant events, so, its atmosphere is quite modern. Just filled with deception, beating, truth and false, it appears to be a very modern and living work. The reality of events satisfy the wisdom of Dandin. On its every page 'realism' is reflected clearly.

The poet Dandin had studied the society of his time very keenly and thoroughly. How was the society of his period ? How much heretics were the brahmanas ? How much deceitful were the ascetics ? How courtesans were deceiving people etc. all these he described keenly and attractively. The mind of womankind was well known to him. So, on account of this he sketched different figures of women, heart or mind. Somewhere he describes a cruel hearted woman, deceiving her own husband and sometime he draws a beautiful picture of that type of woman, who is very loyal and faithful to her husband, and thus succeeded to give a clear picture of delicate minds of Indian women. The society of critics will remain ever grateful to the poet Dandin for his description about a peculiar type of woman "Dhoomini".

The traditions styles and the ways of enjoyment of his time are beautifully mentioned by him. He describes in this work the battle of cocks, white cock of balaka race (a peculiar type), black cock of palm (coconut) race. In the same work he points out that there was a special style of chewing the betel roll in those days. The people welcoming (honouring) their guests by offering them scented betel roll (a special roll of betel nut leaves, with a bit of camphor). Like the present age even in those days there was a familiar custom to decorate homes with tiger and deer skins and to sell them at a high rate. Even leather goods were sold in the markets. The people of his age were celebrating 'Kamotsawas' (festival of god of passion or love, namely kama) for enjoyment. To take out water from a well the people of his period were always using bamboo tubes. Thus by such description, related to daily life he proved himself as a writer of common people. He described in a very beautiful, fluent and simple language (or in a dear style of matured language) every big and small thing of daily life of common men in those days, in such a way that it pierced the vitals of his readers and pleased them nicely.

Style of Dandin :

In 'Dashakumar charita' the style of 'Dandin's very beautiful and compliance's the statement of English poet shelley "The style is the man himself" in all respect. According to the great Sanskrit scholars and critics, the prose is a touch stone for a good writer and poet. On this, while tested Dandin proved himself to bea pure gold. His prose is very simple and fluent. At any place that is neither over loaded with shlesha (paronomasia=where the word has the next seme also) nor hit by Samasa (compound) but it is befitted to daily use and is living and alert.

The simplicy of his prose is his own speciality. His language is very simple, free from the burden of Alankaras (rhetorical ornament or a figure of speech), correct, adorned and idiomatic. In the history of prose this great poet Dandin had his own way and his own originality. He never followed the style of great Sanskrit prose writers, like Subandhu and Banabhatta, but generated an original and new style of his own. In this style, clearness of the meaning, manifestation of succulent sentiment, loveliness of stanzas and utilization (use) of the language of common people i.e. its ability in daily use are shown by him very cleverly. 'दण्डिनः पदलालित्यम्' (loveliness of stanzas lie with Dandin) this statement even now has the same familiarity as it was having ever before. Through the study of his work, we find that the above statement is not an extreme assertion (exaggeration) but a neck-ornament of the scholars. Wherever he used long sentences, we find that these are full of loveliness and wherever he used small sentences, we find that these are very clear (giving meaning clearly) and succulent.

As the plots of Dandin are full of such events, which are full of curiosity and astonishment, so the movement of marvellous sentiment (Adbhut Rasa) is always available in more quantity in all of his descriptions. Through the study of his works one can know easily that he was a profoundly learned scholar of various departments of knowledge, otherwise how could he describe so nicely such a difficult subject like politics, and how could it be possible for him to manifest the secrets of the knowledge, related to passion (kama shastra) and how could he succeed to write the marvellous points related to the knowledge of theft (chaura shastra).

Though he was a dependent on the kings, yet his works are full with cheers, happiness, pains, games, sports, enjoyment and characteristics related to common men and any reader of his works becomes happiest and grateful towards him by coming into the contact with all these. The wisdom of a great scholar or poet lies in prose. As stated by the great Sanskrit scholars that "गद्यं कवीना निकषं वदन्ति" (prose is a touch stone for poets). So, according to this statement we find him occupying a high place (seat) with full respect. He also tries his best to bring into the contact of a common man some of beautiful Sanskrit words for daily use. For example such a few words are as under—

Upahastika for a betel roll box, Malmull for a tatered garnment (Langoti), Kinshas for dandruff (Bhoosi), Kalasheya for buttermilk, Madgu for a war craft (Yudhapota), Pancha Veergoshtha for a city committee hall, Udgamaneeya for a pair of dhoti and Udanchan for a bucket (water pot or Dol in Hindi) etc.

Thus, the poet Dandin occupied a great and high post with his full glory, capacity and ability. About the style of Dandin the "critical study of Sanskrit prose writers", mentions a quotation thus—"The style of Dandin is in general simple, easy flowing, polished and idiomatic. There are in it occasional lapses from good grammar, unfamiliar use of words and irregularities of formation. Even though the style of Dandin is remarkable, it resembles more the easier narrative style of works like the 'Panchatantra' and the 'Hitopadesha' ; it stands on a different plane from the dazzling splendour of Banas 'Kadambari'. Bana utilizes every kind of literary embellishment known to him, including innumerable puns, high-flown conceits (overweening opinion of oneself) and extra ordinarily long compounds, so that the thread of his narrative is often lost in these, he appears to be more concerned with displaying his skill in the use of words, rather that with the progress of his narrative. Dandin avoids temptations, and makes the narration of the story as per his principal aim, that he could have written like Bana had he so chosen, it would be apparent on an examination of his 'Avanti Sundari katha'. His command over language attracts us when we come across 7th Uchebhvasa of Dasha kumar charita. This whole Uchebhvasa is composed without the use of labial letters, and such effort is

unparalled in the history of literature. Dandin is generally happy in his choice of words, and has a special facility in embodying common truths in homely and forceful language. There is one feature of style for which Dandin was especially famed that is his selection of beautiful and attractive words and use of "common language of daily life". Through this great contribution he is described thus—

(१) जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत् ।
कवी इति ततोव्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि ।

(२) कविर्दण्डी, कविर्दण्डी, कविर्दण्डी न संशयः ।।

(for this second one, one narration says that once when the rivalry between Dandin and kalidasa rose to a high pitch, Saraswati appeared on the scene in person and gave her openion in above quoted words."

(३) त्रयोऽग्नयस्त्रयोदेवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः ।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषुलोकेषु विश्रुतः ।।

(४) उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् ।
दण्डिनः पदलालित्यं माघेसन्तित्रयोगुणाः ।।

Through the study of this we can say that Dandin's style was his own, and that was familiar in those days and as well as in the present age too.

Apahar Varma charita : a brief summary of the plot :

In the course of his wandering Apaharavarma came across the sage 'Marichi', who was well known for his penance and divene sight allover the world, and from whom he saught to obtain the tidings (time) of his mester Raja Vahana. The sage promised to help and asked him to reside for a certain period in the city of Champa, at the same time he related to Apaharvarma. His own adventures : how he was beguiled (to cheat) in to her love by a courtesan named Kamamanjari, who won a wager (prize or payment for work done) by succeeding in attracting him into the meshes of her charms and thereafter neglected him and made him a laughing-stock of the peeple. Apaharavarma after spending a night at his hermitage, proceeded to Champa, on his way there he made friendship with Vimardaka, a genlte man of the very city Champa, who was one of the victims of Kamamanjari, who had stripped (to lake

off one's cloths) him of all his possessions and made him a beggar. Apahara Verma promised help to Vimardaka, in getting back his lost fortune, and himself took to the profession of a gamester and a thief (or a burglar=one who breaks in to a house by night—Sendhamar ln Hindi). One day when he was on his nightly satties he met a beautiful maiden named Kulpalika. She was the daughter of a merchant of champa city by name Kuberdatta. Kulpalika's father had first promised to give her in marriage to Dhanamitra, who, however, became poor afterwards through his princely charities. Kulpalika being an Indian maiden knew her duties well, after father's promis for marriage with Dhanamitra. She started loving her would be husband but as soon as her father came to know about Dhanamitras poverty through his princely charities, cancelled his old arrangement and wanted to bestow her upon another rich merchant of the city by name Arthapati. Kulpalika was deadly against to her father's wish and was not ready to marry Arthapati, leaving her first lover. She tried her best to keep her father remain firm on his first decision but when he refused to hear her, she decided to join her would be husband by leaving her parental home. On the very night when Apahara was on his nightly satties, she met him on the way while going Dhanamitra's house from her home to avoid that marriage. Apaharavarma after hearing her details, promised to help her, and took her to her lover. From the very moment Dhanamitra became his fast friend, and the two then went back with Kulapalika to her father's house, which they robbed systematically, they left her at home, but on their way burgled Arthapati's house. In consequence of these incidents the marriage was postponed for one month. During this period Apaharaverma enriched Dhanamitra with the proceeds of his robberies. To hide source of income and the theft in the city a false story was circulated among the people that Dhanamitra was in possesion of a magic purse, which daily produced immense gold. When this news came to the notice of Kuber datta he suddenly changed his mind and gave her daughter kulapalika to Dhanamitra as per his first promise.

In the course of time Apaharvarma fell in love with Ragamanjari the younger sister of Kamamanjare, whose consent to the union he obtained one side by attracting her towards his good qualities and on other hand by promising to

procure for Kamamanjari that magic purse of Dhanamitra and giving much money to Ragamanjari's mother in secret. He informed Kamamanjari that—"that magic purse will be fruitful only when she fuifilled one condition, that she restored their wealth to all those persons whom she had reduced to poverty.'' She agreed, and thus Vimardaka got back what he had lost. The purse came to Kamamajari but Dhanamitra having been advised by Apahara reporeted its theft to the king and she had to return it to him, and also to save herself from punishment, she informed the king under—Apaharavarmas instructions, that the magic purse was given to her by Arthapati. Arthapati was in consequence, expelled from the country and his property confiseated (seized by an authority).

On one night, in fit of foolhardiness, Apaharavarma attacked the city guards and was made a prisoner, his jail or Kantaka, who was inspired with love of the princess Ambalika, utilized the services of this expert burglar to dig a underground passage from the prison to the apartment of the princess. Apahara Varma fulfilled his wish by making that underground passage as per his instructions, but managed to kill Kantaka, and himself visited the apartment of the princess Ambalika, with whom he fell in love, but as she was asleep, he returned without awakening her, and leaving behind his massage in the shape of a sketches drawn by him on a wooden board pasted nicely with gum. After coming back to his jail he suggested to Simha ghosha, a companion of jail to diselose Kantakas affection to wards princess and due to this his murder by Apharavarma himself. He publicly proclaimed this incident and the king set him free and also appointed him in kantaka's place.

Afterwards when chandavarma besieged champa and took Ambalika captive along with her father, Apahara came to the rescue and killed chandvarma alongwish same of his supporters very daringly and suceeded to gain her love i.e. pincess with the help of his brilliant wit and boldness.

Lateron he was met by Rajavahana, as was foretold to him by the sage-Marichi.

CHARACTER SKETCHES

1. Apahāravarmā—Apahara varma is the hero of the plot. He is the son of Prahāra varmā, the king of Videha, and elder brother of Upahar varma. As per the discription available, Apahara varma is a very brilliant true lover, good planner and daring one. He is a loyal and faithful friend, and withal a shrewd and successful plotter, a characteristic which evokes a complement from Rajvahana himself.

First of all we see him in the hermitage of sage Marichi, from whom he sought to obtain the tidings of his master Rajavahana. Afterwards when he is proceeding to reside in champa, as per the directions of sage marichi, to spend some time there waiting for his master, meets vimardaka and atonce becomes his friend. Vimardaka was one of the victims of Kamamanjari, who had stripped him of all his possessions and made him a bankrupt. Apahara promises to help him in getting back his lost property and himself accepts the profession of a gamester and burglar. On one of his nightly sallies he met a beautiful maiden kulapalika by name, the daughter of one Kuberdatta. Her father though promised to give her in marriage to Dhanamitra but after some time when Dhanamitra became poor due to his princely charities, he changed his mind and now wanted to offer her to another rich merchant Arshapati. Kulapalika any how wanted to avoid this marriage and to marry Dhanamitra only. He promised to help her, while in the dark of the night she was proceeding toward the house of her would be husband Dhanamitra. As per his promise he took her to her lover and made friendship with Dhanamitra who proved himself worthy of this friendship in future. He then returned with Dhanamitra and kulpalika to her fathers house. which they plundered and on their way they burgled Arthpati's house and brought him in to such condition that kuberdatta himself has to reject him. Thus Apahar succeeded to fulfil his promise and kulpalika got married with Dhanamitra. He also enriched Dhanamitra with the proceeds of his robberies, and protected him by spread ing a rumour that Dhanamitra was in possession of a magic purse, which daily produces immense gold.

Apahara verma fell in love with Ragamanjari, who wanted to marry a man, having many good qualites. Her mother

and sister kamamanjari were not ready to marry her with some one, without taking money. But Apahara wanted to marry her at any cost, so he obtained her by promising to procure for kamamanjari that magic purse, provided she fulfilled one condition necessary for its being fruitful i.e. that she restored their wealth to all those persons whom she made beggars. She accepts, and thus vimardaka, whom he promised to regain his lost property, got back what he had lost. He defeats kamamanjari, with his brilliant wit, though she was a very cunning and clever courtesan. He wanted to teach a lesson to kamamanjari for ever, so as per his promise he gave that purse to kamamanjari, but meanwhile he instructed Dhanamitra to report its theft to the king and thus she had to return it to him, and to save herself from punishment, she gave out, under Apahar verma's instructions that the purse was given to her by Arthapati. Arthapati was in consiquence expelled from the country and his property confiscated. This shows that he was true to his promises, an enemy of the enemies of his friends and deadly against cunning persons like kamamanjari. Thus using kamamanjari as an instrument, making her fool with a false magic purse, enriching vimardaka through kamamanjari and Dhanamitra through his own robberies he put an example before us—'how to remove a thorn with another thorn.

Once in a conflict with the city guards, he was made prisnor, his jailer kantaka, who was enamoured of the princess Ambalika, utilized the services of Apahara who was an expert burglar to dig an under ground passage from the prison to the palace. Apahara excavated the passage, but managed to kill kantaka, and himself visited the apartment of the princess Ambalika, with whom he fell in love, but, as she was asleep, he returned without awakening her, sketching his desire on the wooden board. He also suggested to Shimha ghosha a way to get released from the jail and become a jailer occupying kantakas place, Afterwards when Chanda varma besiezed champa and took Ambalika captive along with her father Simha Verma, Apahara daringly stabbed him with a dagger and killed him, and then succeeded to join with his beloved princess Ambalika. Later on he was met by Rajavahana, as was foretold to him by the sage Marichi.

2. Sage Marichi—Sage Marichi was an ascetic. He was regarded as having divine sight and thus was able to foretell

any thing to anyone. For his conduct and character he was familiar among the people. In the course of his wanderings Apahara came across the sage and from him he sought to obtain the tidings of his master Rajavahana. In the mean time Kamamanjari a courtesan came to his hermitage weeping and desired to remain with him to gain the real object of life. The sage permitted her. In a very short period she attracted him and he was beguiled into her love. Thereafter she repudiated him and made him a laughing stock of the people. Repenting for this he started penance again and regained his lost divine power of fore-telling the future.

3. **Vimardaka**—Vimardaka was a gentleman citizen of champa city. He was very ugly and innocent. A cunning courtesan by name Kamamanjari won a wager by succeeding in enticing him into the meshes of her charms and thereafter stripped him of all his possessions and made him a beggar. In the caurse of time he met with Apahara and with his tactful help he got back what he had lost. He ever remained loyal and faithful friend of Apahara.

4. **Dhanamitra**—Dhanamitra was a rich merchant of champa. He was an extravegent, loyal and faithful friend, true lover and honest. He was named by the people of champa as udaraka. Previously he was very rich but became poor afterwards through his princely charity. Kuberdatta, an other merchant of champa had first promised to give her daughter kulpalika to him in marriage, influenced by his wealth, qualities and princely charities but afterwards he cancelled his old arrangement and tried to bestow his daughter upon one Arthapati. But kulpalika wanted to marry him only. So, when he met with Apahara through his beloved Kulpalika, Apahara promished to help him i.e. to marry his beloved and accordingly he (Apahara) enriched him with the proceeds of his robberies spreading all over a story that he is in possession of a magic purse which daily produced immense gold, to hide his source of richness. He took active part in Apaharas robberies to make Arthapati and kuberdatta beggars. With the help of Apahara he succeeded to marry his beloved kulpalika in due course and then we find him remaining ever-grateful and loyal towards Apahara Varma.

5. **Kantaka**—Kanṭaka is a jailor. He met with Apahara,

when he was wade a prisoner during a conflict with the city guards. He was enamoured of the princess Ambalika. When he came to know about the qualities of Apahara, to fulfil his desire he utilized the services of Apahara, who was an expert burglar, to dig an underground passage from the prison to the palace. Apahar who himself fell in the love with her dug that underground passage, but mannaged to kill Kantaka. Apahar killed him and through Simhaghosha publicly announced kantaka's misconduct and due to that his death.

6. **Simhaghosha**—Simhaghosha is a leading citizen of champa, but due to some reason he was imprisoned in the jail under kantaka by the king. In those days he was treated by Apahara as a friend. He procured his freedom from jail by saying publicly that Apahara had killed the poor kantaka for his misconduct. Lastly he was installed in Kantaka's place by the pleased king.

7. **Chanda Varma**—Chanda Varma was a brave and wise king. He wanted to marry princess Ambalika but when his request for the hand of Ambalika was refused by her father Simha Varma, he attacked and besieged his kingdom and forcebly siezed his enemy Simha Varma and his beloved Ambalika. Afterwards when he was about to take the hand of Ambalika, Apahara stabbed him in the chest with his dagger and killed him.

8. **Simha Varma**—Simha Varma was the king of Anga and father of princess Ambalika. He was very brave and daring. When Chanda Varma attacked and besieged his capital, he, without waiting for his allies, attacked his enemy, but during the great battle he was forcibly taken captive.

9. **Kamamanjari**—Kamamanjari is a courtesan of the city of Champa. She was the elder sister of Ragamanjari, wife of Apahara Varma. She was a very typical and cunning natured woman. She attracted sage Marichi and when he was beguiled into her love she brought him in to the city and thus she won a wager by succeeding in enticing him into the meshes of her charms and thereafter repudiated him and made him a laughing-stock of the people. Though previously she went to the hermitage of sage Marichi with this request that she wished to reside there for some time to proform some penance to gain an object of life. She was a cunning and greedy courtesan.

She cheated Vimardaka and stripped him of all his possessions and made him a beggar. Apahara obtained her permission to marry her younger sister Ragamanjari by promising to procure for her that magic purse, provided she fulfilled one condition necessary for it being fruitful i.e. that she restored their wealth to all those persons whom she had reduced to poverty. She agreed and got that purse, but she was compelled by the situation to return it back to Dhanamitra by reducing herself to poverty. Not only this, at last she became a mere instrument of Apahara and worked as per his instructions. Under Apahara's instructions she gave out that the purse was given to her by Arthapati and thus Arthapati was in consequence expelled from the country and his property confiscated. In brief we can say though she was clever, charming, active and influential, but due to her greediness and proud she lost her position and every thing.

10. **Ragamanjari**—Ragamanjari was a daughter of a courtesan and younger sister of Kamamanjari. She was as perfect in character and in accomplishments as in form. She was setting aside the duties of her family, and quite regardless of wealth. She wished to sell her youth for merits only, and desired to follow only the unfailing course of life of a woman of family.

First of all Apahara saw her in a musical concert and fell in love with her. Then she was won over by Apahara by his virtues. But her mother and sister were not ready to marry her with him without taking some amount, but Apahara was a great gamester, So, with the help of Dharmarakshita, a Buddhistfemale mendicant pleased Kamamanjari, by promising to procure for her that magic parse and she became the wife of Apahara. After a long separation she met with Apahara when he was saving himself fromt he seize of city guards, came to her house, cheered her in many ways and passed the remaining part of the night with her. Thus, in brief she was very charming, loyal and faithful lady with a remarkable character of Indian woman.

11. **Ambalika**—Ambalika was a princess. She was the daughter of Simha Varma the king of Anga. She was very charming, attractive and delicate, who ever had seen her fell in love with her. The Jailor Kantaka was enamoured of her. He wanted to gain her, at any cost. To fulfill his desire he utilized

the services of Apahara, who was a prisoner under him and made an underground passage from the prison to the palace. But, he failed to gain her, because Apahara who himself had fallen in love with her, killed him. Apahara though with the help of Shrigalika attracted her mind to him but meanwhile a king Chand Varma, who himself was an admirer of her beauty, being refused by Simha Varma for her hand attacked and besieged his capital and in a great battle, forcibly took her captive along with her father. This shows that she was having so many lovers of her beauty, unknowingly. Apahara could not tolerate this, he himself made a plan and killed daringly his rival Chanda Varma and won her. In brief she was very lovely, charming, innocent and beautious vergin.

12. **Shrigalika**—In Sanskrit a Jackel is named as Shrigala and that is considered very clever among all the animals. Accordingly Shrigalika comes forth with her ready wit, pleasing nature and quick action.

She was loyal and faithful. She was ready to solve all the problems of her master Apahara. She was able to read the mind of her master at every moment and do what ever he liked quickly. Being an exceedingly clever woman she took the hint immediately. Under the instructions of Apahara, she worked in such a manner that the king punished Arthapati and Dhanamitra, received his purse back. By her only Apahara succeeded to fulfill his promise with Vimardaka by compelling Kamamanjari to return his restored wealth. Again when Apahara was jsut about to be seized by city guards, she guessed his intention and said—"Good friends, this is my son being affected by Hysteria, he was under treatment for long, released today only, seized again by Hysteria" and thus helped him to take to his heels. She only grew attached to Ambalika the princess with Apahara. In brief, always she seemed to be helpful to Apahara. He used him as his instrument to spread rumour, to carry his message to his beloveds and friends and to report the king according to his wishes. And she through her brilliant and ready wit acted according to the situation and made the plan and wish successful and proved her part or role in the plot as very important.

—×—

AMPORTANT ANNOTNTIONS, WITH REFERENCE TO THE CONTEXT

१. ननु दुःखाकरोऽयं वनवासः । तस्यफलमपवर्गः स्वर्गोवा (स्वर्गो वा अपवर्गो वा) ।

By the end of the first Uchhwasa of Dasakumara—charitam written by Dandin it is mentioned that Rajawahana, the hero, found all his missing companions and by his desire they narrated to him their adventures. Among his companions Apahara Varman was the first to recount his tale which is the second chapter of Dasakumara Charitam.

In the course of his wanderings Apahara came across the sage Merichi, from whom he sought to obtain the tidings of his master Rajawahana. The sage promised him help and asked him to abide in the city of Champa.

At the same time he related to Apahara his own adventures, how he was beguiled into her love by a courtesan named Kamamanjari who came to him pretending to seek his shelter. Then her mother rushed there asking the sage to help her by guiding her daughter to go home. Then the sage said these words which mean :—

> "O good lady, the lifc in forest is certainly painful. Its fruit is either liberation or heaven."

२. तत्कथादत्तवैराग्याणीव कमलवनानि समकुचन् ।

Marichi reported his own disaster stating the seduction practised on him by the accomplished courtesan Kamamanjari before the King of Anga region in the city of Champa. Here Dandin desoribes, the sadness of Marchi which exercised its effect even on the nature through this sentence which mean :—

> "Even the buds of lotuses seemed to be closed due to the detachment developed on hearing his tale."

३. अपितु प्रकृष्टगणिकाप्रार्थ्ययौवनो हि यः स पुमान् ।

After spending a night at Marichi's hermitage Apahara proceeded to Champa. On his way there he made friendship with Vasupala who was also one of the victims of Kamamanjari by stripping him of all his possessions and made him begger and a jaina monk. He was noted as Virupaka due to his ugliness the cunning citizens had created a discord in his mind with a poor and fair merchant called Sundaraka, and announced that "Neither body nor wealth indicates the manliness *but that person is really manly whose young age is coveted by the exceltent courtesan.* This decision is expressed by this extract.

४. अस्वधर्मो ममैष पाखण्डपथावतारः ।

On his way to Champa Apahar met Vasupala who was the victim of Kamamanjari by stripping him of all his possessions and made him a beggar and Jaina Monk. Vasupala narrated his tale which ends with this sentence which means :—

"It is not my Dharma to take up the way of Pakhanda the Jainism which denies the authority of Vedas.

५. नैवमन्येनापि कृतपूर्वमिति प्रतिनियतैव वस्तुशक्तिः ।

Apahara promised help to Vasupala in redeeming his lost fortune and himself took the profession of a gambler and burgler. On one of his nightly sallies he met a beautiful maidan Kulapalika by name the daughter of Kuberadatta. Her father had first promised her in marriage to Dhanamitra who however became poor afterwards through his princely charities. Kulapalika loved Dhanamitra but her father cancelled the old arrangement and wanted to bestow her, upon one Arthapati ; and she was then going to Dhanamtras house to avoid that marriage.

Apahara met her in dark of night he promised to help her and took her to her lover. For this very kind act Dhanamitra shows his gratitude by thanking him with these words which mean :—

"This has never been before by anybody i.e. by any other thief then of course the power of things is fixed in each one severally".

६. स्वदेशो देशान्तरमिति नेयं गणना विदग्धस्य पुरुषस्य ।

Dhanamitra out of fear wanted to give up that city along with Kulapalika. Then Apahara said these words to give him courage and not to leave the city. This means :—

> "Staying in one's own country or leaving is not a matter for consideration for a talented person."

७. 'अवज्ञा सोदर्यं दारिद्र्यम्' ।

Apahar and Dhanamitra went back with Kulapalika to her father's house which they plundered, they left her at home but on the way they burgled Arthapati's house. In consequences of these troubles the marriage was postponed by one month. Apahara then advises to Dhanamitra to go to Angaraja with a desire to circulate a false story. This sentence is taken from the story. The conclusion of the previous arrangement by Kuberadatta regarding the marriage of Kulapalika disappointed Dhanamitra who then entered an old grove situated near the city with desire to give up his life. But when he was placing his weapon on his throat he was prevented by doing so by a sage asking the cause of that rash act. Then Dhanamitra replied with these words which mean :—

> "Poverty is the sister of contempt."

८. प्रवृत्तनृत्यायां च तस्यां द्वितीयं रंगपीठं ममाभून्मनः ।

Apahra fell in love with Ragamanjari the younger sister of Kamamanjari. She was to give musical concert in the gathering of the people. The citizens had gathered there with curiosity, Apahara was present there with his friend Dhanamitra. Apahara says these words :—

> "When she commenced dancing my mind became a second stage (for her to dance)". This means that she impressed his mind deeply.

९. तामप्यचिरादयुग्मशरः शरशयने शाययिष्यति ।

Apahara observed the state of Ragamanjaris mind also and he gave this remark for her with these words which mean :—

> "In no time Cupid will make her lie on the bed of his arrows."

१०. 'गुणशुल्काऽहम् न धनशुल्का।
नच पाणिग्रहणादृतेऽन्यभोग्यं यौवनम् ।'

The union of Apahara with Ragamanjari was possible without much effort as they are having affection for each other. But the courtesan girl proud and noble was reported to be contrary to the proper duties of a courtesan. She had declared her intention with these words which mean :—

"My fees are merit and not money."

My young age cannot be enjoyed by other except by a marital connection."

११. "गुणैस्तामावर्ज्य गूढं धनैस्तत्स्वजनं तोषयावः ।"

Apahara observes that the relatives of Ragamanjari may not agree with their proposal without getting money. And Ragamanjari will not accept any one who will give money. Therefore he had found out a trick and said these words which mean :—

"What is there to thinkover ? We have own her by our virtues, and at the same time we can secretly please her relatives with riches."

१२. 'सार्थवाहस्यार्थपतेर्विमर्दको बहिश्चराः प्राणाः ।'

Apahara fell in love with Ragamanjari, the young sister of Kamamanjari whose consent for this union he obtain by secret negotiation through a Buddhist nun with an agreement that Apahara should steal the magic bag from Dhanamitra and give the same to Kamamanjari who in turn permit him to marry with Ragamanjari.

By the evening of the night proposed for the theft Vasupala in the name of Vimardaka was made to call on Dhanamitra and to insult and threaten him severly showing himself as a partisan of Aethapati.

When Dhanamitra asked the cause for his threatenings he went heedless and said these words which mean :—

"It is well known that Vimardaka is the external life, has it were of Arthapati who is the chief of the merchants.

१३. तन्मन्ये मच्चर्मरत्नलाभहेतुः ।
तस्यखलु कल्पस्तादृशः ।

Kamamanjari agreed with the condition laid down by Apahara, wherein he has to provide her that magic purse of Dhanamitra, by any way, and in turn of which she has to fulfil one condition necessary for its being fruitful, viz , she has to restore their wealth to all those persons whom she had reduced to poverty. She agreed and Vimardaka got back what he had lost. The purse came to Kamamanjari. But Dhanamitra reported the theft to the king, showing the cause of his suspicion with these words stating previously that in those days Kamamanjari was indifferently giving away even the pestle and mortar in her house in charity. The words mean :—

> "I think the cause of it must be the acquisition of my magical bag. This is the prescribed mode of its use."

१४. 'अतोऽमुष्यामस्ति मे शंका' ।

Dhanamitra states the grounds for his suspicion inform ing him that the peculiar characteristics of the magic purse was that it yielded treasures only to merchants and to the best among the courtesans and to no one else. Then Apahara concluded his report with these words which mean :—

> "Hence I suspect her."

१५. तदियमापत्समन्ततोऽनर्थानुबन्धिनी ।

Angaraja on hearing the report from Dhanamitra immediately summoned Kamamanjari and her mother to the court. Apahara told them both in secret that the king might have called them suspecting them to possess the magic bag on the grounds of their charity of that kind. Further he warned them that if they would tell the truth before the king he will get back the purse for Dhanamitra and sentence Apahara to death. Then finally he said these words to them which mean :—

> "This calamity will on all sides carry continuous calamities in its train."

१६. अमुनैव तदस्मभ्यं दत्तमित्यपदिश्य वरमात्मा गोपयितुम् ।

Kamamanjari and her mother were too much uneasy on that occasion and they said that due to their folly the secret of the theft of the magic purse will come out somehow or other on some day and finally they may succumb under a calamity by Apahara as a thief. Then an idea of getting aid was inspired in their mind and they said that Arthapati had already got a bad name. Their close relation with him is well known all over in Champa. Further these words were uttered by them which mean :—

> "So it is better to save ourselves by declaring that Arthapati himself gave that bag to us."

१७. न ह्यलमतिनिपुणोऽपि पुरुषो नियतिलिखितां लेखामतिक्रमितुम् ।

Kamamanjari had to return the purse to Dhanamitra to save herself from punishment. Under the instructions of Apahara she had told before the king that the purse was given to her by Arthapati. Arthapati was inconsequence sentenced to death but further by the request of Dhanamitra he was expel led from the country and his property was confiscated.

On one night in a fit of foolishness due to over-intoxication Apahara attacked the patrolling police and was made a prisoner. With this extract he announces that he had to undergo such a distress due to the power of his fate. These words mean :—

> "Even though one is highly inetelligent one cannot transgress the line drawn by fate".

१८. 'अहो ममेयं मोहमूला महत्यापदापतिता ।'

Tempted by his misfortune one night Apahara attacked the Pattrolling police and killed some of them and was made a prisoner. He was followed by Shrigalika the Dhatri of Ragamanjari. She shouted loudly and awakened Apahara. Apahara then restored his senses and was aware of all the consequences and uttered these words which mean :—

> "O, this serious calamitry has befallen me on account of my introxication".

१९. 'आकल्पसारो हि रूपाजीवाजनः ।'

Apahara became aware by the shouting and cryings of Srigalika and thought over a plan to get rid of the disaster

and said loudly, "Go away you old wench. You have seduced my wife causing her union with Dhanamitra who is proud of his wealth attained through the magic purse. He provided clothes and ornaments to Ragamanjari through you. But mind it well. I have taken away the purse from Dhanamitra and all the ornaments of Ragamanjari and kept them burried. Now I am prepared to die without grief".

At this Srugalika took the hint folded her hands and rushed to Apahara with sobs and tears with a request. Then saluted the guards and requesting them to wait for sometime from killing him till she tries to know from him about the entire property which he had stolen. They consented. She approached Apahara with a request to forgive Ragamanjari ou t of her long services rendered to him. Further she told these words which mean :—

> "The life of a courtesan is full of keen desire for getting ornaments even by losing morals."

२०. 'भवतु, मृत्युहस्तवर्तिनः किं ममामुष्या वैरानुबन्धेन ।'

Declaring the trend of the courtesan Srigalika requested to tell her the place where he had burried the ornaments, and fell on the feet of Apahara to inspire pity in his heart. Then Apahara said these words which mean —

> "All right what is use of my continued enmity with her, especially when I am in the hands of death".

२१. द्रक्ष्यसि पारमष्टादशानां कारणानाम् ।

Apahara whispered in ear of Srigalika to show that he is telling her the place where he burried the stolen articles but told the arrangement of his plan at which Srigalika went blessing him and said "May Angaraja please by your vallance and release you. Even these guards be kined towards you." Then she moved away. Apahara was taken to the Chief of the police Kantaka who came to him. He was recently posted in succession to his father. He considered himself fortunate and beautiful. He threatened Apahara and said these words denoting the punishment proposed if he will not return the articles stolen and the purse of Dhanamitra. These words mean :—

> "You will see the other end of the eighteen tortures".

२२. अदत्त्वैव तदयुतमपि यातनानामनुभवेयम् ।

Apahara laughed at the threatening of Kantaka and said, "Even though I may hand over all the wealth stolen by me since birth, I will never fulfil the desire for the magic purse of my enemy Dhanamitra, who has ravished the wife of Arthapati and who is my apparent friend. Further he said these words which mean :—

"I will put up with millions of tortures but not give it back."

२३, अवस्थान्तराणि च राजदुहितुः सुदारुणानि व्यावर्णयन्त्या मया स दुर्मतिः सुदूरमुदमाद्यत ।

One day Ambalika was sitting on the terrace of her mansion. Srigalika was placing a lotus on the ear of Ambalika as an ornament and let it fall as if with carelessness. She picked it up from the ground. Then she laughed showing that she is willing to frighten with it the pair of pegeons which is engaged in amorous sport, and threw it away so as to strike Kantaka with it. Kantaka had arrived there for some reason in the courtyard adjacent to the apartment of the princess. As he, too, owing to that considered himself blessed and looked up with a smile. Srigalika also by her clever actions made him think of the almost amorous looking features of the princess, who was induced to burst into laughter by her act showing that she liked him. Striked by the Cupid being filled with love Kantaka went away with diffiulty.

In the evening, a girl with a cane-box, sealed with a signet ring of the princess, containing a perfumed tambula, silk garments, and a few ornaments, was taken by Srigalika to became passionate and extremely glad and thought Srigalika as his guide to take him to the princess. Further Srigalika reported to Apahara with these words which mean :—

"The silly Man's passion was raised to a very high pitch by me by describing in detail the extremely tormennting states of the princess love affected condition."

२४. इत्थंचायमर्थोऽस्यानुबन्धी ।

Ambalika gives Apahara a report of her activities stating that the other day she took some articles used by

herself like a flower garland, tambula from her mouth and some dust of sandlepaste collected from her own body and presented to Kantaka who in turn gave some articles for the princess which she took away elsewhere in secret.

Srigalika rejoined Kantaka who was full of passion for the princess saying that the marks which he is bearing on his body, as per the verdict of a prophet assure his becoming a king of Anga. The king had only one child, the princess. After learning Kantaka's union with the princess, the king may be enraged but he will not destroy him with a fear of the death of his daughter. But he will make Kantaka his heir apparent. Then she said this sentence which mean :—

> "This matter is going to be followed by another good on".

२५. 'योऽसौ चोर स सर्वथोपक्रान्त:, न तु धाष्ट्‍र्यभूमि: प्रकृष्टवैरस्तद-जिनरत्नं दर्शयिष्यति ।'

Srigalika cunningly suggests Kantaka that he may get help of an efficient man in cutting an underground tunnel with a length of three yamas. Thus you may enter into the courtyard of the apartment of the princess. Further we are ready to save you helping to bring about your union with the princess.

At this Kantaka agreed and noted that the thief of Dhanamitra's purse may perform this act. Then Srigalika shows him a plan in which Kantaka has to take oath in setting him free from the prison and Apahara has to dig the passage. When digging is finished then Kantaka has to say before the king these words and kill him again. These words mean :—

> "Kantaka has to say before the king that the thief is the very abode of boldness and has an inveterate enmity towards the king. Though compelled by all means and pressure he is not telling the where abouts of the magic purse." And then he may be killed easily by Kantaka.

२६. 'तदेनं हत्वाऽपि नासत्यवाद दोषेण स्पृश्ये ।'

Apahara was set free by Kantaka with an agreement of cutting a passage in turn. Apahara did his duty and immediately killed Kantaka and said these words thinking himself

as untouched by falsehood. As Kantaka had decided to kill him by the end of his work. Apahara gives his remark over his deed through this sentence which mean :—

> "So, I shall not be touched with a sin of violating my promise even though I kill him".

२७. 'तत्त्वया प्रतिभिद्य रहस्यं लब्धव्यो मोक्षः ।'

Apahara came out of passage from the apartment of the princess and killed Kantaka. Further he met his friend Sinhaghosha who was a prisoner and said these words to him which mean :—

> "I have killed Kantaka, thus ; know this secret and get yourself released."

—X—

POSSIBLE IMPORTANT QUESTIONS

1. Write a brief account of the state of society mirrored in the 2nd Uchchavasa i.e. Apahara Varma charita.
2. Role of a courtesan in Apahara Varma charita.
3. Explain the second Uchchhavasa of the Dashkumar charita in respect of style.
4. Write short notes on the following.
   (a) Madana mahotsava, (b) gambling houses, (c) the night-guards of a city (d) Style of Dandin, (e) Dandin as a great poet (f) Importance of Apahara Varma Charita.
5. Sketch the characters of Apaharavarma, Arthapati, Marichi, Dhanamitra, Kamamanjari, Ragamanjari and or Shrigalika.
6. "Dashakumarcharita is a romance of roguery" Discuss.
7. Show how Apahar Varma came in contact with the princess Ambalika.
8. Show how Apahara fell in love with Ragamanjari and succeeded to marry her ?
9. Describe in your own words, how the sage Marichi was deceived by Kamamanjari and how he succeeded to gain his divine power again ?
10. What are the duties of a courtesan towards her daughter ?
11. Describe the circumstances which ultimately brought about the marriage between Kulapatika and Dhanamitra ?
12. Explain the motif of the magical purse ? Show how it indirectly caused to the expulsion of Arthapati ?

Important sentences for annotation :

१. गणिकायाश्चं गम्यं प्रति सज्जतैव न सङ्गः।
२. ननु दुःखाकरोऽयं वनवासः तस्य फलं स्वर्गो वा अपवर्गो वा ।
३. तदनपेक्ष एव धर्मो निवृत्ति सुखप्रसूतिहेतुरात्मसमाधान मात्रसाध्यश्च ।
४. धर्मपूते च मनसि नभसीव न जातु रजोऽनुषज्यते ।
५. प्रकृष्ट गणिका प्रार्थ्य यौवनो हि यः सः पुमान् ।
६. अस्वधर्मो ममैष पाखण्डपथावतारः ।
७. कोऽतिवर्तते दैवम् ।
८. नैवमन्येनापि कृतपूर्वमिति प्रतिनियतैव वस्तुशक्तिः ।
९. स्वदेशो देशान्तरमिति नेयं गणना विदग्धस्य पुरुषस्य ।
१०. आत्मानमात्मनाऽनवसादयैवोद्धरन्ति सन्तः ।
११. अवज्ञासोदर्यं दारिद्र्यम् ।
१२. गुणशुल्काऽहं न धनशुल्का । न च पाणिग्रहणादृतेऽन्यभोग्यं यौवनम् ।
१३. गुणैस्तामावर्ज्य गूढं धनैस्तत्स्वजनं तोषयावः ।
१४. तदियमापत्समन्ततोऽनर्थानुबन्धिनी ।
१५. नह्यलमतिनिपुणोऽपि पुरुषो नियतिलिखितांलेखामतिक्रान्तुम् ।
१६. आकल्पसारो हि रूपाजीवाजनः।
१७. मृत्युहस्तवर्तिनः किं ममायुष्या वैरानुबन्धनेन ।
१८. द्रक्ष्यसि पारमष्टादशानां कारणानामन्ते च मृत्युमुखम् ।
१९. इत्थं चायमर्थोऽर्थानुबन्धी ।
२०. सोऽसौचौरः सर्वथोपक्रान्तः, न तु धाष्ट्र्यं भूमिः ।
प्रकृष्टवैरस्तदजिनरत्नं दर्शयिष्यति ।
२१. तदेनं हृत्वाऽपि नासत्यवाददोषेण स्पृश्ये ।
२२. तत्त्वयाप्रतिभिद्य रहस्यं लब्धव्यो मोक्षः ।
२३. ···केन देवो मातरिश्वा बद्धपूर्वः ? किमेतेकाकाः शौङ्गेयस्यमे निग्रहीतारः ।
२४. अस्मिन्नेवक्षणे तवास्मि नवाम्बुवाहस्तनितगम्भीरेण स्वरेणानुगृहीतः ।"
२५. कथमसि कार्कश्येन कर्णीसुतमप्यतिक्रान्तः ।

Some peculiar words with meaning :

१. अजिरत्न=धन देने वाला जादुई बटुआ magic purse
२. अतिबाला=तरुण बालिका quite young girl
३. अतिप्रणुद्य=छिपाना having concealed.
४. अत्यय=मृत्यु death
५. अधिकरण=न्यायालय the court

६. अनभिरूप=कुरूप ugly
७. अनामृष्ट=अस्पृष्ट Untouched.
८. अनाश्रवा=न सुनने या मानने वाला Not listening, disobedient;
९. अपवर्ग=मोक्ष final beatitude.
१०, अपवाहन=दूर हटाना Carrying away.
११; अपवाहित=अपसारित driven off.
१२. अपसर्प=गुप्तचर spy.
१३. अपाङ्गदाम=नयनकोर का पुष्पहार garland of side glances.
१४. अभिनिशाम्य=देखकर having seen.
१५. अभिसन्धाय=जानकर having come to an understanding.
१६. अभ्यन्तरीकरण=आत्मसात् करना giving a proper insight to.
१७. अभ्यवहार=दावत feast.
१८. अभ्युपगमय्य=सूचित informed.
१९. अर्थपतिगृह्य=अर्थपति का मित्र friend of Arthapati,
२०. अर्धोरुक=ऊपरी वस्त्र upper garment.
२१. अलकलता=दीर्घकेश long hair.
२२. अवसन्न=जड़ीभूत feeble.
२३. अश्मन्तक=अग्निकुण्ड hearth.
२४. असिधेनु=कटार dagger.
२५. असुरविवर=पाताल Netherland,
२६. अस्पृष्ट समाधि=समाधि न लगाते हुए who has not started Practicing concentration.
२७. अहम् अपदेश्य=मेरा निर्देश करो I should be named.
२८, अक्षधूर्त=द्यूत में प्रवीण Expert in gambling,
२९. आर्ति=दुःख distress.
३०. आथर्वण=पुरोहित domestic priest.
३१. आदित्समान=पकड़ में आने वाला about to seize.
३२. आपन्न=दुःखी distressed.
३३. आरक्षिक नायक=मुख्य आरक्षक ohief of the guards.
३४. आराम=प्रमदवन pleasure garden.
३५. आवर्ज्य=आकृष्टकर having secured the affection.
३६. इभ्य=धनिक Rich.
३७. इंगित=इशारा hint.
३८. उद्घटितज्ञा=संकेत समझने वाली who knew the manner of taking hint.
३९. उपकरण=औजार Instrument.

४०. उपक्रोश=फटकार, धमकी to rebuke.
४१. उपच्छन्दन—प्रोत्साहन persuation.
४२. उपबृंहित=आश्रित support, dependent.
४३. उपमन्त्रित=सम्बोधित addressed.
४४ उपायोपक्रान्त=उचित उपचारों से चिकित्सक treated with proper remedies.
४५. उपह्वरे=एकान्त में In secret.
४६. उपसमाधीयमान=एकत्रित being collected.
४७. ऐकागारिक=एकान्तवासी who prefers lonely house.
४८. औशीरे कामचार=इच्छानुसार कार्य करने के लिए आज्ञप्त who was allowed liberty of action.
४९, कदर्थित=अपमानित, निन्दित Reproached.
५०. करकिसलय=कोमल हाथ sprout like hand.
५१. कलत्राभिमर्शी=पत्नी को फुसलाने वाला seducer of wife.
५२. कल्क=चटनी की तरह पीसी हुई दवा A jelly like prepration of pounded drug.
५३. कल्प=निर्धारित मार्ग Prescribed way.
५४. कर्कटक=केकडे जैसा औजार A crab shaped instrument.
५५. काकली=वाद्य विशेष a special musical instrument of the thieves.
५६. कामशासन=शिव subduer of cupid i.e. Shiva.
५७. कारणा=यन्त्रणा Torture.
५८. कार्तान्तिक=ज्योतिषी Astrologer.
५९. कालदंष्ट=सर्पदंष्ट bitten by deadly snake.
६०. कूटकर्म=चालबाजी, धूर्तता, Tricks.
६१. कृतानुशय=पश्चाताप कर, having repentance in repentent mood.
६२. कृत्रिमार्ति=बनावटी दुःख artificial pain.
६३. कृपणवर्ण=दुखी miserable appearance.
६४. कौक्षेयक=तलवार (पटा) a sword (long shaped sword).
६५. गतायुः=आसन्न मृत्यु whose death's arrived.
६६. ग्रैवेय=कण्ठाभरण neck-lace.
६७. चारक=बन्दीगृह jail.
६८. चित्रवध=विचित्र (यन्त्रणादि) द्वारा वध torturous death.
६९. चीवर=चिथड़े, पुराने वस्त्र old garments.

७०. जरतिका=बुढ़िया old woman (heg).
७१. जिहासामि=छोड़ दूंगा I wish to leave,
७२. तपस्विन्=बेचारा Poor.
७३. त्रिवर्ग=धर्म, अर्थ, काम three objects of life.
७४. तीर्थ=पवित्र धाम holy place.
७५. दर्वीकर=सर्प a snake.
७६. दिग्धफल=विष बुझा अग्रभाग Poisoned point.
७७. दुग्धे=दूहना, देना yields.
७८. दुरोदर=द्यूत gambling.
७९. दृप्ततर=तमतमाया हुआ highly conceited.
८०. धार्ष्ट्य भूमि=उद्दण्ड, धृष्ट dare person.
८१. धौतोद्गमनीय=धोए हुए वस्त्र a pair of freshly washed garments.
८२. नय=नीति, योजना Plan.
८३. नरेन्द्रभिमानी=गर्वित विष चिकित्सक Proud of once being a poison doctor.
८४. नागरिक=नगरवासी, आरक्षक citizen, police.
८५. नागरिक बल=आरक्षी सेना Police force.
८६. नाति परिकर=साधन (शस्त्र) हीन not well equipped.
८७. निकृष्टाशय=कमीना mean minded.
८८ निरपेक्षम्=उदासीनता, अभिन्नता Indifferently.
८९. निरष्ठीवम्=थूकना, उगलना I spat out.
९०. निष्णात=प्रवीण expert.
९१. निष्प्रवाणि=नए वस्त्र New garments.
९२. नीवी=गल्ला money box.
९३. पक्षरचना=विभाग रचना या मित्रों का संगठन करना creations of partisans or allies.
९४. पतङ्ग=सूर्य Sun.
९५. पद्मराग=माणिक्य ruby.
९६. पटच्चर=लंगोटी rag.
९७. परिबर्ह=अनुचरवर्ग Retinue.
९८. पाखण्ड=ढोंग heretic.
९९. पाराशर्य=वेदव्यास Son of Parasher i.c. Ved vyas.
१००. पारिग्रामिक विधि=शत्रु के नगर का जायजा लेना measurer to be taken after besieging enemies town.

१०१. पिञ्जरित=रक्तिम (लाल) Reddened.
१०२. पुरीतत्=हृदयस्थ नाड़ी विशेष A type of vein near the heart.
१०३. पुरुषशीर्ष=मुखौटा, नकली सिर an artificial head.
१०४. प्रच्याव्य=चुआना, गिराकर having let fall.
१०५. प्रणयकोप=प्रेमविषयक क्रोध Love anger.
१०६. प्रतिसंधान=पुन: मिलाप rejoining.
१०७. प्रतिसर=विवाह मंगल महोत्सव auspicious marriage string
१०८. प्रधानदूती=मुख्य दूती chief female agent.
१०९. प्रव्यथित=जागृत, सावधान alarmed.
११०. प्रसन्नकल्प=स्वस्थ cured, almost freed from disease.
१११. प्राकार=परकोटा rampart.
११२. प्राभृत=उपहार a present.
११३. फणिमुख=सर्पमुखी खनन यन्त्र digging instrument, scoop.
११४. वाष्प दुर्दिनाक्षी=आँसुओं की झड़ीयुक्त आँखें a lady with eyes shedding profuse tears.
११५. बुभुत्सु=जानने, पता लगाने का इच्छुक wishing to ascertain.
११६. भाव=हृदयस्थ विचार feeling.
११७. भ्रमरकरण्डक=भ्रमरों (जुगनुओं) का डिब्बा a box containing bee, which can extinguish light.
११८. मन्नियोगात्=मेरे निदेश से at my command.
११९. मातरिश्वा=वायु देवता wind, God of wind.
१२०. मानसूत्र=नापने का धागा thread of measurement.
१२१. मित्रमुख=कृत्रिम मित्र false friend.
१२२. मिथ:=एकान्त, रहस्य secretly.
१२३. मूलच्छिन्न=जिसकी जड़ कट गई हो nipped in the bud.
१२४. योग चूर्ण=चमत्कारिक चूर्ण magic powder.
१२५. योगवर्तिका=चमत्कारिक बत्ती magic wick.
१२६. रस=शृङ्गारादि नव रस, आस्वाद्य sentiments, dish.
१२७. लोक संबाध=लोक समुदाय, परिजन वर्ग people, servants.
१२८. वंगेरिका=चंगेरी, cane box.
१२९. वराक:=बेचारा Poor fellow.
१३०. वर्णवर्तिका=कूची a drawing brush.
१३१. वर्षीयसी=वृद्धा old woman.
१३२. वाक्सन्तक्षण=वाणीदंश hurting with harsh words.
१३३. वायुग्रस्त=वात रोगी, उन्मादी suffering from the disease of

the wind, hysteria.

१३४. विगृह्यासन=कलह निवारण rejecting up the quarrel. अविचल प्रतीक्षा waiting till some one comes to terms.

१३५. विनिगडीकृत=बन्धनमुक्त freed.

१३६ वेल्लित=नत bent.

१३७. वैरानुबन्ध=प्रबल शत्रुता staunch enemity.

१३८. व्यचीचरम्=स्वयं विचार किया I thought to myself.

१३९. व्यसन=संकट, आपद difficulty.

१४०. व्याम=प्रसारित भुजाओं का अन्तराल The length of space between the tips of the fingers of both the hands, when the arms are extended.

१४१. शतह्रदा=विद्युत lightning.

१४२. शरीर संस्कार=शरीर की सजावट decoration of body.

१४३. शाक्य भिक्षुकी=बौद्ध भिक्षुणी a Buddhist nun.

१४४. शाखा ग्राहिकया=टहनी पकड़ने के द्वारा by holding the branches of a tree.

१४५. शैथिल्य=दुर्बलता deficiency.

१४६. शौङ्गेय=बाज hawk.

१४७. श्वोवसीय=प्रसन्नता happiness.

१४८. संक्रमीकृत्य=माध्यम बनाकर Through her medium.

१४९. सङ्ग=सम्पर्क attachment.

१५०. सन्दंशक=संडसी pair of tongs.

१५१. सन्धा=निश्चय determination.

१५२. संनिवेश=कक्ष-स्थिति position of rooms.

१५३. संप्रतिपन्न=सहमत one who has agreed to the proposal.

१५४. संरम्भविचेष्टितानि=अकुलाहट भरे कार्य desperate acts.

१५५. समवाय=समुदाय group.

१५६. समादधती=उचित स्थान पर रखना putting in proper place.

१५७. सभिक=द्यूत सभाध्यक्ष keeper of a gambling house.

१५८. सापदेशम्=बहाना बनाते हुए under some pretext.

१५९. सामर्षम्=सक्रोध furiously.

१६०. साराभरण=बहुमूल्य गहने costly ornaments.

१६१. सार्थवाह=समुद्र की यात्रा करने वाला प्रधान व्यापारी The leader of merchants, who go on voyages.

१६२. सुभग पताका=सौभाग्य ध्वजा a banner of a fortunate one.

१६३. सौदामिनी=विद्युत, तड़ित Lightning.
१६४. स्तनितगम्भिर=अतीव गम्भीर deep like the rumbling of clouds.
१६५. स्फुरत्=उछलना, फड़कना striving to attack.
११६. हंसतूल=हंस के पंखों की रुई cotton of the feather of a swan.
१६७. हठात्=बलपूर्वक forcibly.
१६८. हर्म्य=महल Palace.
१६९. हिरण्यरेतस्=अग्नि fire.
१७० हृष्टवर्णा=प्रसन्नवदन appearing happy.

—X—